दयाकेदरियाव हिन्दूहद्दके रखैयाहौ ॥
जागते जगतसिंह साहिब सवाई,
श्री-प्रतापनन्दकुलचन्दआजरघुरैयाहौ।
आछे रहो राजराज राजनके महाराज,
कच्छकुलकलशहमारेतोकन्हैयाहौ॥५॥
आप जगदीश्वर ह्वै जगमें विराजमान,
हौंहूँ तो कवीश्वर ह्वै राजते रहतहौं ।
कहै पद्माकर त्यों जोरत सुयश आप,
हौंहूँ त्यों तिहारो यश जोरे उमहत हौं ॥
श्रीजगतसिंह सदा राजमान सिंहवत,
बात यह साँची कछू काची न कहतहौं ।
आपुज्योंचहतमेरीकबितादराज त्योंमैं,
उमरिदराज राज रावरी चहतहौं ॥६॥

दोहा-जगतसिंहनृप जगतहित,हर्षकियेनिधिनेह।
कविपद्माकरसोंकह्यो,सुरसग्रन्थरचिदेह॥७॥

जगतसिंह नृप हुकुमते, पाइ महा मनमोद ॥
पद्माकरजाहिरकहत, जगहितजगतविनोद ८।
नवरसमें जु शृंगाररस, सिरेकहत सब कोय॥
सुरसनायकानायकहि, आलम्बितह्वैहोय ९॥
ताते प्रथमहि नायका, नायक कहत बनाय ॥
युक्तियथामतिआपनी, सुकविनकोशिरनाय

अथ नायिकालक्षणम् ।

दोहा–रसशृँगारकोभावउर, उपजहिजाहिनिहार
ताहीकोकविनायका, वर्णतविविधविचार११

अथ नायिकाको उदाहरण ।

कवित्त–सुन्दर सुरंग नैन शोभित अनंग रंग,
अंग अंग फैलत तरंग परिमलके ।
वारनके भार सुकुमारको लचत लंक,
राजत प्रयंक पर भीतर महलके ॥
कहैं पदमाकर विलोकि जन रीझैजाहि,
अम्बर अमलके सकल जल थलके ।

कोमल कमलके गुलाबनके दलके,
जात गडि पाँयन बिछौना मखमलके १२

पुनर्यथा—सवैया ।

जाहिरे जागतसी यमुना जब बडै बहै उमहै वह बेनी । त्यों पदमाकर हीराके हारन गंगत-रंगनको सुखदेनी ॥ पाँयनके रँगसों रँगिजातसी भांतिहीभांति सरस्वतिसेनी । पैरै जहांईजहां वहबाल तहां तहँ तालमें होत त्रिबेनी ॥ १३ ॥

पुनर्यथा ।

कवित्त—आई खेलि होरी घरै नवलकिशोरी कहूं,
बोरीगई रंगमें सुगन्धनि झँकोरैहै ।
कहैं पदमाकर इकन्तचलि चौकी चढ़ि,
हारनके बारनके फंद बंद छोरैहै ॥
घाँघरेकी घूमनि सु ऊरुन दुवीचेदाबि,
आँगिहू उतारि सुकुमारि मुख मोरैहै ।

दंतनि अधरदाबि दूनरि भईसी चापि,
चौवर पचौवर कै चूनर निचोरैहै॥ १४॥

दोहा ।

सहज सहेलिनसौंजतिय, बिहँसि बिहँसिबतराति।
शरदचन्द्रकी चांदनी, मन्द परतसी जाति॥ १५॥
कही त्रिविध सो नायिका, प्रथम स्वकीयानाम ।
पुनि परकीया दूसरी, गणिका तीजी बाम॥ १६॥

अथ स्वकीयालक्षणम् ।

दोहा–निजपतिहीके प्रेममय, जाकोमनवचकाय।
कहतस्वकीयाताहिसों, लज्जाशीलसुभाय १७

अथ स्वकीयाको उदाहरण ।

कवित्त–शोभित स्वकीयगण गुण गनती में तहां,
तेरे नामहीकी एकरेखा रेखियतु है ।
कहै पदमाकर पगी यों पतिप्रेमहीमें,
पदमिनी तोसी तिया तूही पेखियतु है ॥

सुवरण रूप जैसो तैसो शील सौरभ है,
याहीते तिहारो तनु धन्यलेखियतु है ।
सोनेमेंसुगन्धनाहिंसुगधमेंसुन्योरीसोनो,
सोनो औ सुगंध तोमेदोनोंदेखियतुहै १८

दोहा—खान पान पीछू करति, सोवति पिछलेछोर
प्राणपियारे ते प्रथम, जगति भावती भोर १९
एक स्वकीया की कही, कविन अवस्था तीन
मुग्धा इकमध्याकहत, पुनिप्रौढा परबीन २०

अथ मुग्धालक्षणम् ।

दोहा—झलकत आवै तरुणई, नई जासु अँग अंग
मुग्धा तासों कहत हैं, जे प्रवीण रसरंग २१

अथ मुग्धाको उदाहरण—सवैया ।

ये अलि या बलिके अधरानिमें आनि चढी कछु माधुरईसी । ज्यों पदमाकर माधुरी त्यों कुच दोउनकी चढती उनईसी ॥ ज्यों कुच त्योंहीं नितम्ब चढे कछु ज्योंहीं नितम्ब त्यों

चातुरईसी॥जानी न ऐसी चढाचढिमें किहि धौं
कटि बीचही लूटिलईसी॥

दोहा ।

कछु गजपतिके आहटनि, छिनछिन छीजतशेर ।
विधुविकास विकसत कमल,कछू दिननके फेर॥
पल पल पर पलटनलगे, जाके अंग अनूप ।
ऐसी इक ब्रजबालको,कहिनहिंसकत स्वरूप२४
यह अनुमानप्रमाणियतु,तियतनु यौवनज्योति ।
ज्यों मेहँदीके पातमें, अलख ललाई होति॥२५॥
मुग्धा द्विविध बखानहीं, प्रथम कही अज्ञात ।
ज्ञातयौवना दूसरी, भाषत मति अवदात ॥२६॥
जब यौवनको आगमन, जानिपरत नहिं जाहि।
सो अज्ञात यौवन तिया, भाषत सुकवि सराहि॥

अथ अज्ञातयौवनाको उदाहरण ।

कवित्त–ये अलि हमैं तौ बात गातकी न जानिपरै,
बूझत न काहे यामें कौन कठिनाई है ॥

कहै पदमाकर क्यों अंग ना समात आँगी,
लागी कहा तोहिं जागी उरमें उँचाई है ॥
तुव तजि पाँयन चली है चंचलाई कित,
बावरी विलोके क्योंन आँखिनमेंआईहै॥
मेरी कटि मेरी भटू कौन धौं चुराई तेरे,
कुचन चुराई कै नितम्बन चुराई है ॥२८॥

पुनर्यथा—सवैया ।

स्वेदके भेद न कोऊ कहै, व्रत आँखिनहूँ अँसुवानको धारो । त्यों पदमाकर देखतीहौं तिनको तनकोउ न जात सँभारो ॥ ह्वै धौं कहाको कहा गयो यों दिनद्वैकहीते कछु ख्याली हमारो । काननमें बसी बांसुरीकी ध्वनि प्राण-नमें बस्यो बांसुरीवारो ॥ २९ ॥

दोहा—कहाकहौंदुखकौनसों, मौनगहौंकेहिभाँति।
घरी घरी यहघांघरी, परतढीलियेजाति३०॥

उर उकसोंहैंउरजलखि, धरतिक्योंनधारिधीर।
इनहिंविलोकिविलोकियतु, सौतिनकेउरपीर
तनुमें यौवन आगमन, जाहिर जबज्यहिहोत।
ज्ञातयौवना नायका, ताहि कहैंकविगोत३२॥

ज्ञातयौवनाको उदाहरण–सवैया।

चौकमें चौकी जराय जरी तिहिपै खरी बार बगारत सौंधे। छोरिपरी है सुकंचुकी न्हानको अंगन तेजमें ज्योतिके कौंधे॥ छाइ उरोजनकी छवि ज्यों पदमाकर देखतही चकचौंधे। भाजिगई लरिकाई मनौ लरिकै करिकै दुहुँदुन्दुभि-औंधे॥ ३३॥

पुनर्यथा–सवैया।

ये वृषभानुकिशोरी भई इतहू वह नंदकिशोर कहावै। त्यों पदमाकर दोउनपै नवरंग तरंग अनंग कि छावै॥ दौरे दुहू दुरि देखिबेको द्युति

देह दुहूंकी दुहूंनको भावे । ह्यां इनके रसभीजत त्यों दृग ह्वै उनके मसि भीजत आवे ॥

दोहा—आजु कालिह दिन द्वैकते,भई औरहीभाँति
उरज उचोहिन दै उरू,तनुतकि तिया अह्वाति
अतिडरते अतिलाजते,जो न चहै रति बाम
त्यहि मुग्धाकोकहतहैं,सुकविनवोढ़ानाम ३६

अथ नवोढाको उदाहरण सवैया ।

राजिरही उलही छबिसों दुलही दुरि देखतही फुलवारी । त्यों पदमाकर बाल हँसै हुलसै बिलसै मुखचंद्र उज्यारी ॥ ऐसे समय कहुँ चातककी ध्वनि कान परी डरपी वह प्यारी चौंकि चली चमकी चितमें चुप ह्वै रही चंचल अंचल वारी ॥ ३७ ॥

दोहा—पिय देख्यो पियसामने,गहत आपनीबाँह
नहीं नहीं कहिजगिभजी,यदपिनहींढिगनाह

पतिकी कछु परतीति उर, धरै नवोढ़ा नारि।
सो बिश्रब्ध नवोढ़ तिय, वर्णत विबुधविचारि

अथ बिश्रब्ध नवोढ़ाको उदाहरण-सवैया।

जाहि न चाह कहूं रतिकी सुकछू पतिको पतियान लगी है। त्यों पदमाकर आननमें रुचि कानन भौं हैं कमान लगी है। देत तिया न छुवै छतियां बतियांनमें तो मुसक्यान लगी है। पीतम पान खवाइबेको परयंकके पासलों जान-लगी है॥

दोहा—दूरिहिंते दृग दै रहति, कहै कछू नहिं बात
छिनक छबीलेको सुतिय, छुवनदेति क्यों गात
इक समान जब ह्वै रहत, लाज मदन ये दोय।
जा तियके तनुमें तबहिं, मध्याकहियेसोय४२

अथ मध्याको उदाहरण—सवैया।

आई जु चालि गोपालघरै ब्रजबाल विशाल मृणालसों बाहीं। त्यों पदमाकर मूरतिमें रति

छू न सकै कितहूं परछाहीं ॥ शोभित शंभु मनो उरऊपर मौज मनोभवकी मनमाहीं । लाज बिराजरही अँखियानमें प्राणमें कान्ह जबानमें नाहीं ॥ ४३ ॥

दोहा ।

मदन लाजवश तियनयन, देखत बनतइकन्त ।
इते खिंचे इत उत फिरत, ज्यों दुनारिके कन्त ४४
ललित लाज कछुमदन बहु, सकल केलिकेखानि ।
प्रौढ़ा ताही सों कहत, सुकविनको मनमानि ४५

अथ प्रौढाको उदाहरण ।

कवित्त–रति विपरीति रची दम्पति गुपति अति,
मेरे जानि मानि भय मनमथ नेजेतैं ।
कहै पदमाकर पगी यों रस रंग जामें,
खुलिगे सुअंग सब रंगन अमेजेतैं ॥
नीलमणि जटित सुबेंदा उच्च कुचपै,
परेउ है टूटि ललित ललाटके मजेजेतैं ।

मानो गिरेउ हेमगिरि शृंगपै सुकेलिकारि,
कढिकै कलंक कलानिधिके करेजेतैं ४६॥

दोहा ।

तिय तनुलाज मनोजकी, यों अब दशा दिखाति।
ज्यों हिमन्तऋतुमें सदा, घटत बढत दिनराति ॥
प्रौढा द्विविध बखानहीं, रति प्रिया इकबाम ।
आनँद अति सम्मोहिता, लक्षण इनके नाम४८॥

अथ रतिप्रियाको उदाहरण-सवैया ।

लपटै पट पीतमके पहिरो,पहिराय पियैं चुन
चूनर खासी। त्यों पदमाकर सांझहीते, सिगरी
निशि केलिकलापरगासी ॥ फूलत फूल गुलाब-
नके चटकाहटि चौंकि चकी चपलासी। कान्हके
कानन आँगुरी नाइ रही लपटाइ लवंगलतासी॥

दोहा ।

करतकेलिपियहियलगी, कोककलिनअवरेखि ।
विमुदकुमुदलौंह्वैरही, चन्द्रमन्दद्युतिदेखि॥५०॥

अथ आनन्दसम्मोहिताको उदाहरण—सवैया ।

रीति रची परतीति रची रति प्रीतमसंग अनंगझरीमैं । त्यों पदमाकर टूटे हराते सरासर सेज परे सिगरी मैं ॥ यों करि केलि विमोहित ह्वैरही आनँदकी सुघरी उघरीमैं । नीवी नवार सँभारिबेकी सुभई सुधि नारिकी चारि घरीमैं ॥

दोहा—भई मगन जो नागरी, सुलहि सुरतआनन्द
अँग अँगोछिभूषण बसन, पहिरावतनँदनन्द॥
मानसमय मध्या त्रिविध, त्रिधाकहतप्रौढाहि।
धीरा बहुरिअधीरगनि, धीरा धीराताहि।८४॥
कोप जनावै व्यंग्यसों, तजै न पति सन्मान ।
मध्या धीरा कहतहैं, तासोंसुकवि सुजान८४॥

अथ मध्याधीराको उदाहरण ।

कवित्त—पीतमके संगही उमंगि उडि जैबे कौन,
एति अग: अगनपरद पंखियां दई ।

कहै पदमाकर जे आरती उतारैं चमरढौर,
श्रमहारैं पै न ऐसी सखियां दई ॥
देखि दृग द्वैही सों न नेकहूं अघैये इन,
ऐस झुकाझुकमें झपाक भखियां दई ।
कीजै कह रामश्यामआननविलोकिवेको,
विरचि विरंचितेअनंतअँखियांदई॥८५॥

पुनर्यथा—सवैया ।

भाल पै लाल गुलाल गुलालसों गोरि गरे गजारा अलबेलो। यों बनि बानिकसों पदमाकर आये जु खेलन फाग तौ खेलो ॥ पै इक या छबि देखिबेके लिये मो विनती कै न झोरिन झेलो । राउरे रंग रँगी आँखियानमें ये बलवीर अबीर न मेलो ॥ ८६ ॥

दोहा—जो जिय में सो जीभमें, रसन रावरे ठौर।
आज काल्हिके नरनके, जीभन कछु जियऔर

करै अनादर कन्त को, प्रकट जनावै कोप ।
मध्य अधीरा नायका, ताहि कहतकरि चोप ॥

अथ मध्यअधीरा नायकाको उदाहरण ।

कवित्त—भूले से भ्रमे से काहि शोचत श्रमे से,
अकुलाने से ठिकानेसे ठगे से ठीकठायेहौ
कहै पदमाकर सु गोरे रंग बोरे हग,
थोरे थोरे अजब कुंसुम्भी करी लायेहौ ॥
आगेको धरत पर पीछेको परत पग,
भोरहींते आज कछु औरै छबि छाये हौ।
कहां आये तेरे धाम कौन काम घर जाउ,
जाउँ कहां श्याम जहांमनधीरआयेहौ८९

दोहा ।

दाहक नाहक नाह मोहिं, करिहौ कहामनाय।
सुवश भये जा तीयके, ताके परसहु पाँय९०
धीर वचन कहिकै जो तिय, रोय जनावतरोष
मध्या धीरा धीर तिय, ताहि कहत निर्दोष९१

अथ मध्या धीराको उदाहरण ।

कवित्त–रावलि कहा हौ किन कहत हो कातेअरी,
रोष तज रोषके कियो मैं का अचाहेको ।
कहै पद्माकर यहै तो दुख दूरि करौ,
दोष न कछू है तुम्हैं नेह निरवाहेको ॥
तोपै इति रोवति कहाहै कहौं कौन आगे,
मेरेई जु आगे किये आसुन उमाहे को ।
कोहौ मैं तिहारीबूतो मेरीप्राणप्यारीआजु,
होती जो पियारी तौ बरोती कहौ काहेको

दोहा ।

करिआदरतिय पीयको,देखिदृगनअलसानि
सम्मुख मोरि वर्पनलगी, लै उसाँस अँसुवानि
उर उदास रतिते रहै, अति आदरकी खानि
प्रौढाधीरा नायका,ताहिलीजियत जानि६४

अथ प्रौढा अधीराको उदाहरण ।

कवित्त—जगर मगर द्युति दूना केलि मंदिर में,
बगर बगर धूप अगर बगारचो तू ।
कहै पद्माकर त्यों चन्द्रते चटकदार,
चुम्बनमें चारुमुख चन्द्र अनुसारचो तू ॥
नैननमें बैननमें सखी और सैननमें,
जहाँ देखो तहाँ प्रेम पूरण पसारचो तू ।
छपत छपाये तऊ छलन छबीली अब,
उर लगिबेकी बार हारना उतारचोतू ॥ ६५

दोहा-दरशदौरिपियपगपरसि,आदरकियोअछेह
देह गेहपति जानिगो,निरखि चौगुनो नेह ६६
कछु तरजन तावन कछू, करि जु जनावेरोष
प्रौढ अधीरानायका,निरखि नाहको दोष ६७

अथ प्रौढा अधीराको उदाहरण ।

कवित्त—रोष करि पकरि परोसते लिआई घरै,
पीको प्राणप्यारी भुज लतनि भरै भरै ।

कहैं पदमाकर ये ऐसो दोष को जो फिर,
सीखन समीप यों सुनावति खरै खरै ॥
प्योछल छपावै बात हँसि बहरावै तिय,
गदगद कण्ठ दृग आँसुन झरै झरै ।
ऐसी धनधन्य धनीधन्य है सुवैसोजाहि,
फूलकी छरीसों खरी हनति हरै हरै ॥६८॥
दोहा—नेह तरेरे दृग नहीं, राखन क्यों न अँगोट।
छैल छबीलेपर कहा, करति कमलकी चोट ॥
रतिते रूखी ह्वै जहां, दुरजु दिखावै बाम ।
प्रौढ़ाधीर अधीरतिय, ताहि कहत रसधाम७०

अथ प्रौढा धीरा अधीराको उदाहरण ।

कवित्त—छबि छलकन भरी पीक पलकन त्योंहीं,
श्रम जलकन अलकन अधिकानेह्वै ।
कहै पदमाकर सुजानि रूपखानि तिया,
ताही ताकि रही ताहिआपुहि ॥

परसतगात मनभावनको भावतीकी,
गईचढ़ि भौंहैं रही ऐसी उपमानह्वै ।
मानो अरविंदनपै चन्द्रको चढ़ायदीनी,
मानकसनैत बिनरोदाकी कमानैह्वै॥७१॥

दोहा ।

अन्तरसेंपतिकीसुरति,गहिगहिगहकि गुनाह।
दृगमरोरिमुखमोरितिय,छुवनदेतिनहिंछाह॥
वर्णत ज्येष्ठकनिष्ठिका,जहँब्याहीतियदोय ।
पियप्यारीज्येष्ठाकही,अनप्यारीलघुसोय७२

अथ ज्येष्ठा कनिष्ठाको उदाहरण ॥

कवित्त—दोऊछबिछाजतींछबीलीमिलिआसनपै
जिनहिं विलोकिरह्यो जातन जितै जितै॥
कहै पदमाकर पिछौहैं आय आदरसे,
छलिया छबीलो कत बासर बितै बितै॥
मूँदे तहां एक अलबेलीके अनोखे दृग,
सुदृग मिचाउ नेक ख्यालन हितै हितै ।

नेसुक नवायग्रीव धन्य धन्य दूसरी को,
औचक अचूक मुखचूमत चितै चितै ७४॥

दोहा।

जलविहारपियप्यारिको, देखतक्योंनसहेलि।
लैचुभकीताजि एकतिय,करत एकसों केलि॥

इति स्वकीया।

अथ परकीया लक्षण।

हा–होइजोतियपरपुरुषरत,परकीया सो वाम।
ऊढ़ाप्रथमबखानहीं,बहुरि अनूढ़ानाम॥७६॥
जो व्याही तिय औरको,करत औरसोंप्रीति।
ऊढ़ा तासों कहतहैं, हिये सखीरसरीति ७७॥

अथ ऊढाको उदाहरण।

वित्त–गोकुलके कुलके गलीके गोप गायनके,
जौलगि कछू को कछू भारत भनै नहीं।
कहै पद्माकर परोस पिछवारनके,

द्वारनके दौरि गुण अवगुण गनै नहीं ॥
तौलों चलिचातुरसहेलियाहि कोऊकाहूँ,
नीके कै निचोरै ताहि करत मनै नहीं ।
हौंतो श्यामरंगमेंचोराइचित्त चोराचोरी,
बोरत तौ बोरचौ पै निचोतर बनै नहीं ७८

दोहा–चढ़ीहिंढोरेहर्षहिय,जसतियवसनसुरंग ।
तिय झूलत पिय संगमें,मन झूलत हरि संग
अनव्याही तिय होत जहँ,सरसपुरुष रसलीन
ताहि अनूढा कहत हैं,कवि पंडित परवीन८०

अथ अनूढाको उदाहरण–सवैया ।

जाब नहीं कुल गोकुलमें अरु दूनी दुहूं दिशि दीपति जागै । त्यों पद्माकर जोई सुनै जहँ सो तहँ आनँद में अनुरागै ॥ ए दई ऐसो कछू कर व्योंत जू देखैं अदेखिनके दृग दागै । जामें निशंक ह्वै मोहनको भरिये निज अंक कलंक न लागै ॥ ८१ ॥

दोहा–कुशलकरैकरतारतौ,सकलशंकसियराय।
यार कारपनको जुपै, कहूं व्याहि लैजाय८२
इक परकीया को कहै, षट् विधि भेद बखानि
प्रथमहिं गुप्ता जानिये, बहुरि विदग्धामानि
ललित लक्षिता तीसरी,चौथी कुलटा होय।
पँचई मुदिता षष्टई, है अनुसैना सोय ८४॥
कहीजोगुप्ता तीन विधि,सुकबिनहूंसमुझाय।
भूतसुरत संगोपना, प्रथम भेद यह आय८५
वर्तमान रति गोपना, भेद दूसरो आन।
पुनि भविष्य रति गोपना,लक्षण मान प्रमाण

अथ भूत सुरत संगोपनाको उदाहरण।

कवित्त–आली हौं गई हौं आजभूलि बरसाने कहूं,
तापै तू परै है पदमाकर तनैनीयों।
व्रजवनिता वे वनितान पै रचैहैं फाग,
तिनमें जु ऊधमिनि राधा मृगनैनीयों॥

घोरिडारी केसरि सुबेसरि बिलोरिडारी
बोरिडारी चूनरि चुचात रँगनैनी ज्यों।
मोहिं झकझोरिडारीकंचुकीमरोरि डारी
तोरिडारी कनि बिथोरिडारी वेनी त्यों।

दोहा ।

छुटतकंपनहिंरैनिदिन, विदितविदारतिकोय
अति शीतल हेमंत की, अरी जरी यह तोय।

अथ वर्तमान सुरतगोपनाको उदाहरण—सवैया ।

ऊधम ऐसो मचो ब्रजमें सब रंग तरंग
उमंगनि सींचैंात्यों पद्माकर छज्जनि छातनिछै
छित छाजति केसरि कीचैं ॥ दै पिचकी भजि
भीजि तहां परे पीछे गोपाल गुलाल उलीचैं।
एकहि संग यहां रपटे सखि ये भये ऊपर मै
भई नीचैं ॥ ८९ ॥

दोहा—चढ़तघाटबिचलौसुपग, भरोआनइकअंक
ताहि कहा तुम तकरही, यामें कौन कलंक

अथ भविष्य सुरत गोपना।

कवित्त–आजुते न जैहों दधिबेचनदोहाई खाऊँ,
मैयाकी कन्हैया उत ठाढोई रहतहै।
कहै पद्माकर त्यों सांकरी गलीहै अति,
इत उत भाजिवेको दांव ना लगत है॥
दौरि दधिदान काज ऐसो अमनैक तहां,
आली बनमाली आई बहियां गहत है।
भादौं सुदी चौथको लख्योमैंमृगअंकयाते
झूठहू कलंक मोहिं लागन चाहत है९१॥

दोहा–कोऊ कछु अब काहुवै,मति लगाइये दोष
होनलग्यो ब्रजगलिनमें, होरिहारनको घोष
द्विविध विदग्धा जानिये,वचन विदग्धा एक
क्रिया विदग्धा दूसरी, भाषत विदित विवेक
वचननिकी रचनानिसों,जो साधै निजकाज
वचन विदग्धा नायका, ताहिकहतकविराज

अथ वचन विदग्धाको उदाहरण—सवैया ।

जबलौं घरको धनि आवै घरै तबलौं तोकहीं चित दैबोकरो । पद्माकर ये बछरा अपने बछरानके संग चरैबोकरो ॥ अरु औरनके घरते हमसों तुम दूनी दुहावनी लैबोकरो । नित सांझ सबेरे हमारी हहा हरि गैयां भले दुहिजैबो करो॥

पुनर्यथा सवैया ।

पिय पागे परोसिनके रसमें बसमें न क वश मेरे रहैं । पद्माकर पाहुनीसी ननँदी निशि नींद तजे अवसेर रहैं ॥ दुख और मैं कास कहौं को सुनै ब्रजकी वनिता दृग फेरे रहैं । सखी घरसांझ सबेरे रहैं घनश्याम घरी घर घेरे रहैं ॥ १६ ॥

दोहा—कल करीलकी कुंज में,रहोअरुझिमोचीर ।
ये बलबीर अहीरके,हरत क्यों न यह पीर॥

कनकलता श्रीफल परी, रही विजन बनफूलि
ताहि तजत क्यों बावरे, अरे मधुप मतिभूलि
जोतियसाधै काज निज, करै क्रियाअनुमानि
क्रिया विदग्धा नायका, ताहि लीजियेजानि

अथ क्रिया विदग्धाको उदाहरण।

कवित्त—वंजुल निकुंजन में मंजुल महल मध्य,
मोतिनकी झालरै किनारिनमें कुरबिंद।
आइये तहांई पद्माकर पियारे कान्ह,
आनि जुरिगये त्यों चबाइनके नीके वृन्द
बैठी फिर पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी,
पीठ दै प्रबीनि दृग दृगन मिलै अनंद।
आछे अवलोकि रही आई इस मंदिरमें,
इंदीवर सुन्दर गोविंदको मुखारविंद १००

दोहा।

करिगुलालसोंधुंधुरित, सकलग्वालिनीग्वाल
रोरी मीडनके सु मिस, गोरी गहे गोपाल १॥

जातियकोजिय आनरत,जानिकहैतिय आन
ताहि लक्षिता कहतहैं,जे कवि कलानिधान॥

अथ लक्षिताको उदाहरण सवैया ।

ब्रजमण्डली दोष सबै पद्माकर ह्वैरही यों चुपचापरीहै । मनमोहनकी बहियां में छुटी उपटी यह बेनी देखापरीहै॥मकराकृतकुण्डलकी झलकी इतहू भुजमूलपै छापरीहै।इनकी उनसों जो लगीअँखियां कहियेतो कछू हमैं कापरीहै॥

पुनर्यथा सवैया ।

बीतवही सुतैं बीते चुकीअब आंजतीहो किहि काजल कंजन । त्यों पद्माकर हाल कहे मति लाल करौ दृग ख्यालके खंजन ॥ देखत कंचुकी केंचुकीके बिच होत छिपाये कहा कुच कंजन । तोहिं कलंक लगाइबेको लग्यो कान्हहीके अधरानमें अंजन ॥

दोहा–धरकत कत हेमंतऋतु,रीतिकहोकहजात।
अपने बश सोवन लगी,भली नहीं यह बात
जोबहुलोगनसोंजु तिय,राखतिरतिकीचाह।
कुलटा ताहि बखानहीं,जे कबीनके नाह ६

अथ कुलटाको उदाहरण सवैया।

योंअलबेली अकेली कहूं सुकुमारि शृंगारन के चलै के चलै। त्यों पदमाकर एकनके उरमें रसबीजनि बै चलै बै चलै॥ एकनसों बतराय कछू छिन एकनकों मन लैचलै लैचलै।एकनको तकि घूँघटमें मुख मोरि कनैखिन दैचलै दैचलै

दोहा–विपिनबागबीथीजहां,प्रबलपुरुषमयमाम
कासकलितबलिवामको, तहांतनिकबिसराम
सुनतलखतचितचाहकी, बातभातिअभिराम
मुदितहोय जो नायका,ताको मुदिता नाम

अथ मुदिताको उदाहरण ।

कवित्त—वृन्दावन बीथिन बिलोकन गईही जहां,
राजत रसाल बन ताल रु तमालको ।
कहै पद्माकर निहारत बन्योई तहां,
नेहनिको नेम प्रेम अद्भुत ख्यालको ॥
दूनो दूनो बाढ़त सुपूनोंकी निशामें अहे
आनँद अनूप रूप काहू ब्रजबालको
कुंजतैकहूंको सुनो कंतको गमन लखि
आगमन तैसो मनहरण गोपालको

दोहा—परखि प्रेमवश परपुरुष,हरषि रही मनमैन
तबलगि झुकि आईघटा, अधिकअँधेरी रैन
कहीसुअनुशयनात्रिविध, प्रथमभेदयहजानि
वर्तमान संकेतके,निघटनके सुखहानि १२॥

पहिली अनुशयनाको उदाहरण ।

कवित्त—सूनेघर परम परोसीके सुजान तिया,
आई सुनि सुनिकै परोसिन मनो अराति

कहै पद्माकर सुकंचन लतासी लचि;
ऊंची लेतश्वासवाहियेसें त्योंनहींसमाति
जाइआई जहां तहाँ बैठि उठि जैसे तैसे
दिन तौ बितायो बधूबीततिहै कैसे राति।
ताप सरसानी देखै अति अकुलानी जऊ,
पतिउरआनतऊसेजमें बिलानीजाति १३

दोहा ।

सौतिसंयोगनरोगकछु,नहिंवियोगबलवन्त ।
ननँदहोतक्योंदूबरी,लागतललितबसन्त १४
होनहार संकेतको, धरि अभाव उरमाहिं ।
दुखित होत सो दूबरी, कहतअनुसिया ताहिं

अथ दूसरी अनुशयना नायिकाको उदाहरण ।

कवित्त–चालो सुनिचन्द्रमुखीचित्तमेंसुचैनकरि,
तित वन बागन घनेरे अलि घूमि रहे ॥

कहै पद्माकर मयूर मंजु नाचतहैं,
चाइसों चकोरिनि चकोर चूमिचूमि रहे॥
कदम अनार आम अगर अशोक थोक,
लतन समेत लोने लोने लगि झूमि रहे।
फूल रहे फल रहे फैलि रहे फबि रहे,
झपिरहेझलिरहेझुकिरहेझूमिरहे ॥ १६ ॥

दोहा—निघटतफूलगुलाबके,धरतिक्योंनधनधीर
असलकमलफूलनलगे,विमलसरोवरनीर १७
जु तिय सुरतसंकेतको,रमनगमन अनुमान।
व्याकुलहोतिसुतीसरी,अनुशयनापहिचान॥

तीसरी अनुशयनाको उदाहरण—सवैया ।

चारिहुं ओरते पौन झकोर झकोरनि घोर घटा घहरानी। ऐसे समय पद्माकर काहुके आवत पीत पटी फहरानी ॥ गुंजकी माल गोपालगरे व्रजबाल विलोकि थकी थहरानी।

ोरजते कढि नीरनदी छबि छीजत छीरजपै
हरानी ॥ १९ ॥

ोहा-कल करीलकीकुंजसों,उठतअतरकीबोय।
मयोतोहिंभावीकहा,उठीअचानकरोय २०॥

इति परकीया निरूपणम् ।

अथ गणिका लक्षणम् ।

दोहा-करै औरसों रति रमण इक धनहीके हेत ।
गणिकाताहिबखानहीं,जेकविसुमतिनिकेत॥

गणिकाको उदाहरण ।

कवित्त-आरतसों आरत सम्हारत न शीश पट,
गजब गुजारत गरीबनकी धारपर ।
कहै पदमाकर सुगन्ध सरसार वैसे,
बिथुरि बिराजे बार हीरनके हारपर ॥
छाजत छबीले क्षिति छहर छराकी छोर,

भोर उठि आई केलि मन्दिरके द्वारपर।
एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरे,
एक करकञ्ज एक कर हैं किवाँरपर २३॥

दोहा-तनुसुवरणसुवरणवसन, सुवरणउक्तिउछाह
धनिसुवरणमेंह्वैरही,सुवरणहीकीचाह ॥२३॥
प्रथम कही जो नायिका,तेसबत्रिविधविचारि
अन्य सुरति दुखितासुइक,मानवतीपुनिरारि
फिरि वक्रोक्तिगर्विता,यहिविधि भिन्नप्रकार
तिनके लक्षण लक्षिसब,भाषत मति अनुसार
प्रीतम प्रीति प्रतीति जो, और तियातनु पाइ
दुखित होइ सो जानिये,अन्य सुरत दुखताइ

अन्य सुरति दुःखिताको उदाहरण ।

कवित्त-बोलति न काहे येरी पूछेबिनबोलौंकहा
पूछतिहौं कहो भई खेद अधिकाई है।
कहै पदमाकर सुमारगके गये आये,

सांची कह मोसों आजु कहां गई आई है
गई आई हौं तोपास साँवरेके कौनकाज
तेरेलिये ल्यावन सु तेरिये दुहाई है ॥
काहेते न ल्याई फिरि मोहनबिहारीजूको
कैसे वाहि ल्याऊँ जैसे वाको मनल्याईहै

पुनर्यथा ।

कवित्त—धोइगई केसरि कपोल कुचगोलनकी,
पीकलीक अधर अमोलन लगाई है।
कहै पद्माकर त्यो नैनहूं निरंजनमें,
तजति न कंप देह पुलकनि छाई है
बाद मति ठानै झूठ बादिनि भई री अब
दूतपनो छोंडि धूतपन में सुहाई है।
आई तोहिं पीर न पराई महापापिन तू,
पापीलौं गईनकहूं वापी न्हाइ आईहै २८
हा—खान पान शय्या शयन,जासुभरोसे आय
करै सोछल अलि आपसों,तासोंकहा बसाय

पियसों करै जो मान तिय, वहैमानिनीजान
ताको कहत उदाहरण, दोहा कवित बखान

मानिनीको उदाहरण सवैया ।

मोहिं तुम्हैं न उन्हैं न इन्हैं मनभावति सोन मनावन ऐ है । त्यों पद्माकर मोरनको सुनि शोर कहो नहिं को अकुलै है ॥ धीर धरो किन मेरे गोविंद घरी इकमें जो घटा घहरैहै। आपहि ते तजि मान तिया हरुवै हरुवै गरुवै लगिजैहै ॥ ३१ ॥

दोहा—और तजे तौ रहुसजे,भूषण अमलअमोल
तजन कह्यो नसुहागसे, अंजनतिलक तमोल
वहवक्रोकति गर्विता, द्विविध कहतरसधाम ।
प्रेमगर्विता एक पुनि, रूप गर्विता नाम ३३।
करै प्रेमको गर्व जो, प्रेम गर्विता नारि ।
रूपगर्विता होय वह, रूप गर्वको धारि३४॥

अथ प्रेमगर्विताको उदाहरण—सवैया।

सो बिन माइ न खाइ कछू पदमाकर त्यों भइ मावी अचेत है। वीरन आइ लिवाइबेको तिनकी मृदु बानिहु मानिन लेत है। प्रीतमको समुझावति क्यों नहिं ये सखी तू जुपै राखति हेत है। और तो मोहिं सबै सुख री दुख री यहै माइकै जान न देतहै॥ ३८॥

हौं अलि आजु बडे तरके घट गोरसका पग धारौ। त्यों कब को धौं खरो री हुतो पदमाकर मोहित मोहिं निवारौ। सांकरी खोरमें कांकरी-की करि चोट चलौ फिरि लौटि निहारौ। ता छिनते इन आंखिनते न टरचो वह माखन चाखन हारौ॥

दोहा।

कछुनखातिअनखातिअति, बिरहभरीबिललाति
अरी सयानी सौतिकी, बिपतिकहीनहिंजाति ३७

अथ रूपगर्विताको उदाहरण–सवैया ।

है नहिं माइको मेरी भटू यह सासुरो है सबकी सहिबो करौ । पद्माकर पाइ सुहाग सदा सखियानहूको पहिंचानबो करौ।नेहभरी बतियां कहिकै नित सौतिनकी छतियां दहिबो करौ । चन्द्रमुखी कहै होती दुखी तौन कोऊ कहै गो सुखी रहिबो करौ ॥

दोहा ।

निरखिनयनमृगमीनसों,उठींसबैमिलभाखि।
परघर जाइ गमाइरिस, हौं आई रसराखि॥

अथ दशनायिकावर्णन–दोहा ।

प्रोषितपतिकाखण्डिता,कलहन्तरिता होय ।
विप्रलब्ध उत्का बहुरि,वासकसज्जा जोय४०
स्वाधीनहुपतिकाकहत,अभिसारिकाबखानि
प्रकट प्रवत्स्यत प्रोपिता,आगतपतिकाजानि

येसबदशविधिनायिका,कविनकही निरधारि
तिनके लक्षण लक्ष सब,क्रमते कहत विचारि
पिय जाको परदेशमें, प्रोषितपतिका सोय ।
उदित उदीपन ते जु तन, सन्तापित अतिहोय

अथ मुग्धा प्रोषितपतिका उदाहरण ।

कवित्त-साँगिसिखनौदिनकीन्योतिगेगोबिंदतिय
सौ दिन समान छिन मानि अकुलावै है।
कहै पदमाकर छपाकरि छपाकरते,
वदन छपाकर मलीन मुरझावै है ॥
बूझत जु कोऊके कहा री भयो तोहिं तब,
औरही की और कछु भेद न बतावै है ।
आँसुनके मोचन सकोचवश आलिन सें,
उलही विरह बेलि दुलही दुरावै है४४॥

पुनर्यथा—सवैया ।

बालमके बिछुरे ब्रजबालको हाल कह्यो न परै
कछु याहीं । व्वैसीगईदिनतीनहिमेंतबओधिलौं-

क्यों छजिहै छविछाहीं॥तीरसी धीर समीर लगै पद्माकर बूझिहु बोलत नाहीं । चन्द्रउदयलखि चन्द्रमुखी मुखमन्दह्वै पैठति मन्दिर माहीं ।

दोहा ।

भरति उसाँसन दृग भरति, करति गेहको काज।
पलपल पर पीरी परति, परी लाजके राज॥४६॥

मध्या प्रोषितपतिका—सवैया ।

अब ह्वैहै कहा अरविन्दसों आनन इन्दुके आइ हवाल पर्यो । पद्माकर भाषै न भाषै बनै जिय ऐसे कछू बकसाले पर्यो ॥ इक मीन विचारो बिंध्यो बनसी पुनि जालके जाइ दुसाले पर्यो मन तो मनमोहनके संग गो तनु लाज मनोजके पाले पर्यो ॥

पुनर्यथा ।

कवित्त—ऊबतहौं डूबतहौं डगतहौं डोलतहौं,
बोलत न काहे प्रीति रीति न रितै चलै ।

कहैपद्माकर त्यों उससि उसाँसिनसों,
आंसुवे अपार आइ आँखिन इतै चलै ॥
अवधिहीकी आगम लौंरहत बने तोरहौ,
बीचही क्यों बैरी बंध वेदनि बितै चलै॥
ऐरे मेरे प्राण कान्ह प्यारेके चलाचल में,
तबतौ चलै न अब चाहत कितै चलै॥४८॥

दोहा ।

रसण आगमन अवधिलौं, क्योंजिवाययतुयाहि।
रहतकण्ठगतअवधिये,आधीनिकसतिआहि ४९

प्रौढाप्रोषित पतिका ।

कवित्त—लागत वसंतके सुपाती लिखी प्रीतमको,
प्यारी परवीन है हमारी सुधि आनवी ।
कहै पद्माकर इहां को यों हवालबिर-
हानलकीज्वालासोंदवानलते मानवी ॥
ऊबकी उसाँसनको पूरो परगास सोतो,

निपट उसाँस पवनहूते पहिचानवी ॥
नैननको ढंगसों अनंग पिचकारिन ते,
गातनको रंग पीरे पातनतेजानवी॥८०॥

दोहा–वर्षत मेह अछेह अति,अवनिरहीजलपूरि।
पथिक तऊ तुव गेह तो,उठतभभूरन धूरि८१

परकीया प्रोषितपतिका उदाहरण–सवैया ।

न्योते गये नँदलाल कहूं. सुनि बाल बिहाल
वियोगकि घेरी ॥ ऊतरु कौनहूं के पदमाकर,
दै फिरि कुंज गलीनमें फेरी ॥ पावै न चैन सुमै-
नके बाननि, होत छिने छिन छीन घनेरी।
बूझे जु कन्त कहै तो यहै, तिय पाउँ पिरातहै
पांसुरी मेरी ॥ ८२ ॥

दोहा ।

व्यथित वियोगिनिएक तू,यों दुख सहत न कोइ।
ननँद तिहारेकन्तको, पन्थबिलोकतिजोइ८३

अथ गणिका प्रोषितपतिका उदारहण—सवैया ।

बीर अबीर अभीरनको, दुख भाषै बनै न बनै बिन भाखै । त्यों पद्माकर मोहन मीतके, पाय सँदेश न आठयें पाखै ॥ आये न आप न पाती लिखी मनकी मनहीमें रही अभिलाखै । शीतके अन्त बसन्त लग्यो, अब कौनके आगे बसंत लै राखै ॥ ९४ ॥

दोहा ।

पग अंकुश करमें कमल, करि जु दियो करतार ।
सुसखिसफलह्वैहैतबहिं, जब ऐहैंघरयार ९५॥
अन्तरमें रति चिह्नलगि, पीतमकेशुभगात ।
दुखित होइसो खण्डिता, वर्णत मतिअवदात॥

मुग्धखण्डिताका उदाहरण ।

कवित्त—बैठी परयंकपै नवेली निरशंक जहाँ,
जागीज्योतिजाहिरजवाहिरकीजागैज्यों।

कहै पद्माकर कहूंते नन्दनन्दनहूं
औचकही आइ अलसाइ प्रेम पागे यों।
झपकोहैपलनी पियाके पीक लीक लखि
झूकि झहराइहू न नेकु अनुरागे त्यों
वैसही मयंकमुखी लागत न अंकहुती
देखिकै कलंक अब येरी अंकलागै क्यों

दोहा ।

बिन गुन माल गोपाल उर, क्यों पहिरी परभात
चकित चित्त चुप ह्वैरही, निरखि अनोखी बात

मध्याखंडिताको उदाहरण ।

कवित्त–ख्याल मनभायो कहूं करिकै गोपाल घर
आये अतिआलस मढ़ेई बडे तरकै।
कहै पद्माकर निहारी गजगामिनिकै,
गज मुकतानिके हिये पै हार दरकै॥
येते पै न आनन है निकसे बधूके बैन,

अधर उराहने तुदीबेकाज फरकै।
कंधनते कंचुकी भुजानिते सु बाजूबन्द,
पौंचनते कंकन हरेही हरे सरकै॥ ८९॥
दोहा-रसिकराज आलस भरे,खरेदृगनकीओर।
कछुक कोप आदर न कछु,करत भावती भोर

अथ प्रौढाखंडिताको उदारण।

कवित्त-खाये पानबीरासीबिलोचनविराजैआज
अंजन अँजाये अध अधरा अमीकेहैं।
कहै पदमाकर गोविंद देखौ आरसीलै,
अमल कपोलन पै किन पान पीके हैं॥
ऐसो अवलोकिबेई लायक सुखारविंद,
जाहि लखि चंद अरविन्द होत फीके हैं॥
प्रेमरस पागि जागि आये अनुरागयाते,
अब हम जानीकि हमारे भाग नीकेहैं९१
दोहा-ताकि रहत छिनऔरतिय,लेत औरकोनाउँ
ए वलिऐसे वलमकी,विविधभाँतिबलिजाउँ९२॥

अथ परकीया खंडिताको उदाहरण ।

कवित्त—एहो ब्रज ठाकुर ठगोरी डार कीन्हीं तव,
बौरी बिन काज अब ताकी लाज मारिये।
कहै पदमाकर एतेपै यो रँगीलो रूप,
देखे बिन देखे कहो कैसे धीर धारिये ॥
अंकहु न लागीं पै कलंकिनी कहाईयाते,
अरज हमारी एक यही अनुसारिये ।
सांझके सबेरे दिन दशयें दिवारी फाग,
कबहूं भलेजू भलै आइबो तौ करिये६३॥

पुनर्यथा सवैया ।

सीख न मानी सयानी सखी न कियो पदमाकरकी अमनैकी । प्रीति करी तुमसों वजिकै सुबिसारि करी तुमप्रीति घनेकी ॥ रावरीरीति लखीइमि सांवरे होतिहै सम्पति जो सपनेकी । सांचहू ताको न होत भलो जो न मानतहै कही चारि जनेकी ॥ ६४ ॥

पुनर्यथा—सवैया ।

साहसहू न कहूं सख आपनो भाषे बनै न बनै बिन भाखैं । त्यों पद्माकर यों मगसें रँग देखतहीं कबकी रुख राखैं ॥ वा विधि सांवरे रावरेकी न मिले मरजी न मजा न मजाखैं । बोलतिबानि बिलोकनि प्रीतिकी वो मन वे न रहीं अब आखैं ॥ ९८ ॥

दोहा-रान्यो न गोकुल कुल घनो, रमण रावरे हेत।
सु तुम चोरि चितचोर लौं, मोर दिखाई देत ९९

गणिका खंडिता ।

कवित्त—गोस पेंच कुण्डल कलंगी शिर पेंच पेंच,
पेंचन ते खेंचि बिन बेचे बारि आये हौ ।
कहै पद्माकर कहां वा मूरि जीवन की,
जाकी पगधूरी पगरीपै पारि आये हौ ॥
वेगुनके सार ऐसे वेगुनके हार अब,
मेरी मनुहारी की न याहि धारि आये हौ।

पांसासार खेली कित कौन मनुहारिनसों,
जित मनुहारि मनुहारि हरि आये हौ ॥६७॥
दोहा-बगे साहलगि हमकरी,तुमसोंप्रीति विचारि
कहा जानि तुम करतहौ,हमैं औरकी नारि६८

कलहांतरिताको लक्षण–दोहा ।

प्रथमकछू अपमानकरि,पियको फिरि पछिताय।
कलहांतरिता नायिका,ताहि कहत कविराय६९

अथ मुग्धा कलहांतरिताको उदाहरण । सवैया ।

बारी बहू मुरझानी विलोकि जिठानी करै उप
चार कितीको। त्यों पद्माकर ऊंची उसाँस
लखे मुख सासको ह्वैरह्यो फीको। एकै कहैं इन्हैं
डीठि लगी पर भेद न कोऊलहै दुलहीको । ह्वैकै
अजान जो कान्ह सों कीन्हों गुमान भयो वहै
जानहीं जीको।

दोहा ।

प्रथमकेलितियकलहकी, कथा न कछु कहिजाय ।
अतनुताप तनुही सहै, मनहींमन अकुलाय ७१

मध्या कलहांतारिता ।

कवित्त—झालरन द्वार झूकि झूमति बितान बिछे,
गहब गलीचा अरु गुलगुली गिलमें ।
जगर मगर पदमाकर सु दीपनकी,
फैली जगा ज्योति केलि मंदिरअखिलमें ।
आवत तहाँई मनमोहनको लाज मैन,
जैसी कछू करी तैसी दिलहीकी दिलमें ।
हेरि हेरि बिलसें न लीन्हों हिलमिल में,
रहीहों हाइ मिलसेंप्रभाकीझिलमिलमें ७२

दोहा ।

ल्यावो पियहि मनाइ यह, कह्योचहतिरहिजाति ।
कलह कहरकी लहरमें, परी तिया पछिताति ७३

अथ प्रौढा कलहांतारिताको उदाहरण ।

कवित्त--ये अलि इकन्त पाइ पाँइन परेहै आइ
हौं न तब हेरि या गुमान वजमारे सों ।
कहै पद्माकर त्यों ह्वैठिगे सु ऐसी भई
नैननते नींद गई हाइके दवारे सों ॥
रैन दिन चैन है न मैन है हमारे वश,
ऐन मुख सूखत उसाँस अनुसारे सों ।
प्राणनकी हानिसी दिखानसी लगी है हाइ
कौन गुनजान मान कीन्हों प्राणप्यारेसों ९

दोहा ।

वनवसण्डपावसनिशा, सखरलग्योसुखान
परखि प्राणपति जानिगो, तज्यो माननी मान

अथ परकीया कलहांतारिताको उदाहरण सवैया ।

कासों कहा मैं कहों दुख यो मुख सूखतईहै पियूप पियेते । त्यों पद्माकर यों उपहासको त्रास मिटै न उसाँस लियेते ॥ व्यापै व्यथा

यह जानि परी मनमोहन मीतसों मान कियेते। भूलिहूँ चूक परी जो कहूं तिहि चूककी हूक न जात हियेते ॥

दोहा-मोहन मीत सभीत गो, लखि तेरा सनमान।
अब सुदगादै तू चल्यो, अरे मुदई मान७७॥

अथ गणिका कलहांतरिता को उदाहरण सवैया।

हरिके हार हजारन को धन देतहुते सुखसे सरसाने। हौं न लियो पदमाकर त्यों अरु बेलिनबेलि सुधारससाने। वे चलि ह्यांते गये अनतै हमको अब आपनी बात बखाने। आपने हाथसों आपने पाँयपै पाथर पारि परयो पछिताने ॥

दोहा

कहा देखि दुखि दाहिये, कुमति कछू जो कीन।
छैल छबीली छोरितै, छलानि लीनो छीन७९

विप्रलब्धाको लक्षण—दोहा ।

प्रिय बिहीन संकेतलखि, जोतियअतिअकुलाय
ताहि विप्रलब्धा कहत, सुकविनके समुदाय।

अथ मुग्धाविप्रलब्धाको उदाहरण।

कवित्त—खेलको बहानो कै सहेलिन के संगचलि
आई केलि मन्दिर लों सुन्दर मजेज पर
कहै पदमाकर तहां न पिय पाके तिय
त्योंहीं तन तैरही तमीपति के तेहपर।
बाढतव्यथाकी कथाका हूसोंकछू न कही
लचकि लतालों गई लाजही की जेलपर
बीरी परी बिथरि कपोल पर पीरी परी
धीरी परी धाय गिरी सीरी परी सेजपर।

दोहा—नवल गूजरी ऊजरी, निरखि ऊजरी सेज
उदित उजेरी रैनको, कहि न सकत कछु तेज

अथ मध्याविप्रलब्धाको उदाहरण ।

कवित्त—पूर असुवानको रह्यो जो पूरि आँखिनमें,
बाहन बह्यो पै चढि बाहिरो बहै नहीं ।
कहै पद्माकर सुघोखेहू न माल तरु,
चाहत गह्यो पै गहवर ह्वै गहै नहीं ॥
कांपिकदलीलोया अलीकोअवलम्बकहूं,
चाहत लह्यो पै लोक लाजनि लहै नहीं ।
कंत न मिलेको दुखदारुण अनन्त पय,
चाहतिकह्योपैकछूकाहूसोंकहैनहीं॥८३॥

दोहा—सजन विहीनी सेजपर, परे पेखि मुकतान।
तवहिंतियाकोतनभयो,मनहुँअधपक्यो पान॥

अथ प्रौढा विप्रलब्धाको उदाहरण ।

कवित्त-आईफागखेलन गोबिन्दसों अनन्दभरी,
जाको लसै लंक मंजु मखतूल ताग सों।
कहै पद्माकर तहां न ताहि मिले श्याम,

छिनमें छबीलीकोअनंग दियो दागसों॥
कौन करै होरी कोऊगोरी समुझावैकहा,
नागरीको राग लग्यो विषसों विरागसों
कहरसी केसर कपूर लग्यो कालसम,
गाजसों गुलाब लग्यो अरगजा आगसों।
दोहा—निरखिसेज रँग रँग भरी,लगी उसाँसैलैन
अछु न चैन चितमें रह्यो,चढ़तचांदनी रैन८६

अथ परकीया विप्रलब्धा ।

कवित्त-गञ्जनसुगंज लग्यो तैसो पौन पुंज लग्यो,
दोष मणि कुञ्ज लग्यो गुञ्जनसों गाजिकै।
कहै पदमाकर न खोजलग्यो ख्यालनको,
चालन मनोज लग्यो वीर तीर सजिकै॥
सूखन सु बिम्ब लग्यो दूषनकदम्बलग्यो
मोहिं न विलम्ब लग्यो आई गेह तजिकै।
सींजनमयङ्क लग्यो सीतहू न अङ्कलग्यो;
पङ्क लग्योपायँनकलङ्कलग्योबाजिकै ८७

दोहा ।

लखिसँकेतसूनोसुमुखि, बोली विकल सभीति।
कहौंकहाकिहिसुख लह्यो, करिकुमीतसोंप्रीति

अथ गणिका विप्रलब्धाको उदाहरण ।

कवित्त–निशि अँधियारी तऊ प्यारी परवीन चढि
मालके मनोरथके रथ पै चली गई ।
कहै पद्माकर तहीं न मनमोहनसों,
भेंटभई सटकि सहेटतें अली गई ॥
चन्दनसों चांदनीसों चंद्रसों चमेलिनीसों
और बनबेलिनीके दलनि दलीगई ।
आइ हुती छैलकै छछैकै छल छंदनिसों,
छैल तो छल्यो न आपु छैलसों छलीगई ८९

दोहा–इत न मैनमूरतिमिल्यो, परतकौनविधिचैन
धनकी भई न धामकी; गई ऐसही रैन॥९०॥
लहि सँकेत शोचै जु तिय, रमन आगमनहेत
ताहीको उत्कण्ठिता, वर्णत सुकवि सचेत ९१

अथ उत्कण्ठिताको उदाहरण—सवैया ।

शोचै अनागम कारण कंतको मोचै उसासन
आंसहुं मोचै मोचैन होरि हराहिय को पद्माक
मोचसकै न सकोचै॥कोचै तकै इहचांदनीते अलि
याहि निबाहि व्यथा अवलोचै।लोचै परी सियरं
पर्यंकपै बीती बरी न खरी खरी शोचै ॥ १२ ।
दोहा—अरेसु मो मन बावरे,इतहि कहा अकुला
अटकिअटाकितपतिरह्योतिततहिक्योंनचलिजा

मध्या उक्ता—सवैया ।

आये न कन्त कहां धौं रहे भयो भोर चां
निशि जाति सिरानी । यों पद्माकर बूझ्योचं
पर बूझिसकै न सकोचकी सानी ॥ धारि सवै
न उतारिसकै सुनिहारि शृँगार हिये हहरानी
शूलसे फूल लगै फरपै तिय फूल छरीसी पर
मुरझानी ॥ १४ ॥

दोहा–अनतरहे रसिकन्त क्यों, यहबूझनकेचाय।
सुसुखिसखीकेश्रवणसों, सुखलगायरहिजाय॥

अथ प्रौढा उक्ताको उदाहरण ।

कवित्त–सौतिनके त्रासते रहे धौं और वासते,
न आये कौन गासते प्यो करु तौ तलासतैं
कहै पद्माकर सुबास ते जवास तेसु,
फूलनकी रासते जगीहै महासाँसतैं ॥
चांदनी बिकासते सुधाकर प्रकाशते न,
राखत हुलासते न लाउ खसखास तैं ।
पौन करु आशते न जाउ उडि वासते,
अरी गुलाबपासते उठाउआस पासतैं९६

दोहा–कियहुँ नसैं कबहूंकलह, गह्यो नकबहूं मौन
पिय अबलौं आये न कत, भयो सुकारणकौन

परकीया उक्ता ।

कवित्त–फागुन में फागुन विचारि ना देखाई देत
एती बेर लाई उन कानन में नाइ आव ।

कहै पदमाकर हितू जो तू हमारी हैतो
हमारे कहे वीर वहि धाम लगि धाये आ
जोरि जो धरी है वेदरद द्वारे तो न होरि
मेरी विरहागली उलूकनि लौं लायआ
एरी इन नयननकी नीरसें अबीर घोरि
बोरिपिचकारीचितचोरपैचलायआव८

दोहा—तजत गेहअरुगेह पति,मोहिंनलगीविलम
हरिविलम्बलाईसुकत,क्योंनहिंकहतकदंव ।

गणिका उक्ता—सवैया ।

काहू कियो धौं कहूँ वश भावतो, काहू क
धौं कछू छलछायो । त्यों पदमाकर तान तरंगि
नि, काहू किधौं रचि रंगरिझायो॥ जानि परै
कछू गति आजकी जाहित येतो बिलंब लगा
यो ॥ मोहन मोहन मोहिबेको किधौं मोमनकं
मनिहारन पायो॥ १०० ॥

दोहा ।

कहतसखिनसोंशशिमुखी, सजिसजिसकलशृँगार
मोमनअटक्योहारमें, अटकिरह्योकितयार ॥१॥
साजहि सेज शृँगार तिय, पियमिलापकेकाज ।
सकसज्जानायिका, वाहिकहतकविराज ॥२॥

मुग्धा वासकसज्जा ।

कवित्त–सोरह शृँगार को नवेली के सहेलिनहूँ,
कीन्हीं केलिमंदिरमें कलपित केरे हैं ।
कहै पदमाकर सु पासही गुलाबपास,
खासे खसखास खसबोइनके ढेरे हैं ॥
त्यों गुलाब नीरनसों हीरनके हौजभरे
दम्पति मिलाप हित आरती उजेरे हैं
चोखी चांदनीन पर चौसर चमेलिन के
चन्दनकी चौकी चारु चांदीके चँगेरे हैं

दोहा ।

साजिसैन भूषण वसन, सबकी नजरबचाय ॥
रही पौढि मिस नींदके, हग दुवारसे लाय ॥४॥

मध्या वासकसज्जा ।

कवित्त-साजिब्रजबाल नन्दलालसों मिलैकैलिये
लगनिलगालगीसें लमकि लमकि उठै॥
कहै पद्माकर विराक ऐसी चांदनीसी
चारोंओर चौकनिसें चमकि चमकि उठै।
झकिझकि झूमिझूमि झिलझिल झेलझेल
झरहरी झांपनसें झमकि झमकि उठै ।
दर दर देखौं दरी खानन में दौरि दौरि
दुरि दुरि दामिनीसी दमकि दमकि उठै५॥
दोहा-शुभ शृँगार साजे सबै, दै सखीनको पीठि।
चलेअधखुले द्वारलौं, खुली अधखुली डीठि६

प्रौढा वासकसज्जा ।

कवित्त-चहचही चहल चहूँघा चारु चन्दन की
चन्दक चमीन चौक चौकन चढीहै आब

कहै पद्माकर फराकत फरस बन्द,
फहरि फुहारन की फरस फबी है फाब ॥
मोद मदमाती मनमोहन मिलेके काज,
साजि मणि मंदिर मनोज कैसी महताब॥
गोल गुलगादी गुल गोलमें गुलाब गुल;
गजकगुलावी गुलगिन्दुक गले गुलाब७

दोहा ।

यों शृँगार साजे सुतिय, को करि सकत बखान।
रह्यो न कछु उपमानको, तिहूँ लोकमें आन८॥

परकीया वासकसज्जा ।

कवित्त--सोसनीदुकूलनि दुराये रूपरोसनी है,
बूटेदार घाँघरीकी घूमनी घुमायकै ।
कहै पद्माकर त्यों उन्नत उरोजनपै,
तंग अँगियाहै तनी तननि तनायकै ॥
छज्जनकी छाँह छकि छैलकै मिलैकेहेत,

छाजती छपा में यों छबीली छबि छायकै॥
ह्वैरही खरीहै छरी फलकी छरीसी छपि,
सांकरी गली में फूलपाँखुरीबिछायकै९॥
दोहा—फूल बिनन्नसिसकुंजमें, पहिरि गुंजके हार
मगनिरखतनँदलालको, सुबलिबारहींबार१०

गणिका वासकसज्जा—सवैया ।

नीरके तीर उशीरके मंदिर धीर समीर जुड़ा-
वत जीरे । त्यों पद्माकर पंकज पुंज पुरैनके
पात परे जनु पीरे ॥ ग्रीषमकी क्यों गनै गरमी
गज गौहर चाह गुलाब गँभीरे । बैठी बधू बनि
बाग बिहार में बार बगारि सिवार ससीरे॥११॥

दोहा ।

अमल अमोलिकलालमय, पहिरिविभूषणभार ।
हर्षि हियेपरतिय धरयो सुरख सीपकोहार १२
जातियके आधीन है, पीतम रहे हमेश ।
सुखाधीनपतिकाकही, कबिननायिकाबेश १३॥

अथ मुग्धास्वाधीनपतिका उदाहरण ।

कवित्त–चाहभरयोचंचल हमारो चित नौलवधू,
तेरी चाल चंचल चितौनि में बसतहै ।
कहै पद्माकर सु चंचल चितौनिहूँ ते,
औझकि उझकि झझकनि में फँसतहै ॥
औझकि उझकि झझकनिते सुरझि वेश,
वाहीकी गहनिमाहीं आय बिलसत है ।
वाहीकी गहनितेसुनाहिंकी कहनिआयो,
नाहींकीकहनितेंसुनाहींनिकसतहै ॥ १४॥

पुनर्यथा–सवैया ।

कबहूं फिर पांवन देहौं यहां भाजि जैहौं तहां जहां सूधीसहौ । पद्माकर देहरीद्वारे किंवार लगे ललचैहौ न ऐसी चहौ ॥ बहियां जुकही छहियां नहिं नेकहु ह्वै पावहुगे लहु लाज लहौ ॥ चित चाहैं कहौ बतियां उनही उतही रहौ हाहा हसैं न गहौ ॥ १५ ॥

पुनर्यथा—सवैया ।

सतरैबो करो बतरैबो करो इतरैबो करो करो जोइ चहौ । पद्माकर आनँद दीबो करो रसलीबो करो सुखसों उमहौ ॥ कछु अन्तर राखौ न राखौ चहौ पर या बिनती इक मेरी गहौ । अब ज्यों हिय में नित बैठि रही त्यौं दया करिकै ढिग बैठी रहौ ॥ १६ ॥

दोहा—तुवअयानपनलखिभट्टू,लट्टू भयेनंदलाल
जब सयानपन देखिहैं, तब धौं कहा हवाल

अथ मध्या स्वाधीनपतिका—उदाहरण—सवैया ।

ताछिनते रहे औरनि भूलि सु भूली कदम्बनकी परछाहीं । त्यों पद्माकर संग सखानकी भूलि भुलाय कला अवगाहीं ॥ जाछिनते तुव शीकर मंत्र सी मेली सु कान्हके कानन माहीं । दै गलबाँहीं जु नाहीं करी वह नाहीं गोपालको भूलत नाहीं ॥ १८ ॥

दोहा ।

आधे आयेहगनिरति, आधेहगनि सुलाज ।
राधे आधे वचन कहि,सुवश किये ब्रजराज ॥

अथ प्रौढा स्वाधीनपतिका उदाहरण—सवैया ।

सो मुख बीरि दई सु दई सु रही रचि साधि सुगन्धि घनेरो । त्यों पद्माकर केसरि खौरि करी तो करी सो सुहाग है मेरो ॥ वेनी गुही तो गुही मनभावने सौतिन मांग सँवारि सवेरो । और शृंगार सजे तो सजो इक हार हहा हियरे मति गेरो ॥ २० ॥

दोहा—अंगराग औरै अँगनि, करत कछू वरजीन
पै मेहँदी न दिवायहौं,तुमसों पगन प्रवीन २१

अथ परकीया स्वाधीनपतिका उदाहरण ।

कवित्त—उझकिझरोखाह्वै झमकिझुकिझांकीवाम,
श्याम की विसारिगई खवारि तमाशाकी।
कहै पद्माकर चहूँघा चैत चांदनीसी,

फैलिरही तैसिये सुगन्ध शुभ श्वासाकी॥
तैसी छबि लकत तमोरकी तरचोननकी,
वैसी छबि वसनकी वारनकी वासाकी।
मोतिनकी मांगकीमुखौकीमुसक्यानहूँकी
नथकी निहारवेकी नैननकी नासाकी२२

पुनर्यथा ।

कवित्त–ईशकी दुहाई शीशफूलते लटकि कट,
लटते लटकि लट कन्धपै ठहरि गो।
कहै पद्माकर सुमन्दचालि कन्धहूते,
भूमि भ्रमि भाईसी भुजामें त्यों भभरिगो॥
भाईसीभुजाते भ्रमिआयोगोरीगोरीगोरी
बाँहते चपरि चलि चूनरि में अरिगो।
हेरेउ हरे हरे हरी चूनरि ते चाहो जौलौं,
तौलौं मन मेरो दौरि तेरे हाथ परिगो२३
दोहा–मैं तरुणीतुमतरुण तनु, चुगलचवाईगांव।
मुरली लै न बजाइयो, कबहुं हमारोनांव २४

गणिका स्वाधीनपतिका—सवैया।

छाकछकी छतियां धरके दरके अँगिया रचके कुच नीके। त्यों पदमाकर छूटत वारहूं टूटत हार शृँगार जेहीके॥ संग तिहारे न झूल-हुंगी फिर रंग हिंडोरे सुजीवनजीके॥ यों सिचकी मचको न हहा लचके करहा मचकै सिचकीके॥ २८॥

दोहा-या जगमें धनि धन्य तू,सहजसलोनेगात।
धरणीधर जो वशकियो,कहा औरकी बात॥

अथ अभिसारिका लक्षण।

दोहा—बोलिपठावैपियहिकै,पियपैआपुहिजाय।
ताहीको अभिसारिका, वर्णत कवि समुदाय

अथ मुग्धा अभिसारिकाको उदाहरण—सवैया।

किंकिनी छोरि छापई कहूँ कहूं वाजनी पायल पांयते नाई। त्यों पदमाकर पातहुके खरकै

फैलिरही तैसिये सुगन्ध शुभ श्वासाकी॥
तैसी छबि लकत तमोरकी तर्‍योननकी,
वैसी छबि वसनकी वारनकी वासाकी ।
मोतिनकी मांगकीमुखौकीमुसक्यानहूँकी
नथकी निहारवेकी नैननकी नासाकी२२

पुनर्यथा ।

कवित्त–ईशकी दुहाई शीशफूलते लटकि कट,
लटते लटकि लट कन्धपै ठहरि गो।
कहै पद्माकर सुमन्दचालि कन्धहूते,
भ्रमि भ्रमि भाईसी भुजामें त्यों भभरिगो।
भाईसीभुजाते भ्रमिआयोगोरीगोरीगोरी
बाँहते चपरि चलि चूनरि में अरिगो।
हेरेउ हरै हरै हरी चूनरि ते चाहो जौलौं,
तौलौं मन मेरो दौरि तेरे हाथ परिगो२३

दोहा–मैं तरुणीतुमतरुण तनु, चुगलचवाईगांव।
मुरली लै न बजाइयो, कबहुँ हमारोनांव २४

गणिका स्वाधीनपतिका—सवैया।

छाकछकी छतियां धरकै दरकै अँगिया उचकै कुच नीके। त्यों पदमाकर छूटत वारहूं टूटत हार शृँगार जेहीके॥ संग तिहारे न झूलहुंगी फिर रंग हिंडोरे सुजीवनजीके॥ यों सिचकी सचकौ न हहा लचकै करहा मचकै सिचकीके॥ २९॥

दोहा-या जगमें धनि धन्य तू, सहजसलोनेगात।
धरणीधर जो वशकियो, कहा औरकी बात॥

अथ अभिसारिका लक्षण।

दोहा—बोलिपठावैपियहिकै, पियपैआपुहिजाय।
ताहीको अभिसारिका, वर्णत कवि समुदाय

अथ मुग्धा अभिसारिकाको उदाहरण—सवैया।

किंकिनी छोरि छपाई कहूँ कहूं बाजनी पायल पांयते नाई। त्यों पदमाकर पातहुके खरकै

कहुँ कोपि उठै छबिछाई ॥ लाजहिते गड़िजात कहूँ अड़िजात कहूं गजकी गति भाई । वैसकी थोरी किशोरी हरे हरे याविधि नन्दकिशोर पै आई ॥२८॥

दोहा ।

केलिभवननवबेलिसी, दुलहीउलहिइकन्त ।
बैठिरहाचुपचन्द्रलखि, तुमहिबुलावतकन्त२९॥

अथ मध्या अभिसारिकाको उदाहरण—सवैया ।

झूलै इतैं पर मैन महाउत लाजके आंदू परे गथि पाँयन । त्यों पदमाकर कौन कहै गति माते मतंगनिकी दुखदायन ॥ या अँगअंगकी रोशनीमें शुभ सोसनी चीर चुभ्यो चितचायन । जाति चली ब्रजठाकुरपै ठमका ठुमकी ठमकी ठकुरायन ॥ ३० ॥

दोहा ।

इक पगधरत सुमन्दमग, इक पग धरति अमन्द ।
चलीजाति यहि विधिसखी, मनमन करतअनंद

प्रौढा अभिसारिका—सवैया।

कौन है तू कित जाति चली बलि बीति निशा अधराति प्रमानै। हौं पदमाकर भावति हौं निज भावतपै अबहीं मुहिं जानै॥ तौ अल-बेलि अकेली डरैं किन क्यों डरौ मेरी सहायके लानै है सखि संग मनोभवसो भट कानलों बाण शरासन तानै॥ ३२॥

पुनर्यथा।

कवित—घूँघटकी घूमिके सु झूमके जवाहिरके,
झिलमिल झालरकी झमिलों झुलतजात।
कहै पदमाकर सुधाकर मुखीके हीर,
हारनमें तारनके तोमसे तुलत जात॥
मन्दमन्द मेकल मतंगलौं चलेई भले,
भुजन समेत भुज भूषण डुलत जात।
चांधैं झकोरिन चहूँघा खोर खोरनमें,
खूब खुशबोइनके खजाने खुलत जात३३

दोहा ।

पग दूपुर नूपुर सुभग, जन अलापि स्वरसात
पियसों तिय आगमनकी, कही सु अगमनवात

अथ परकीया अभिसारिकाको उदाहरण ।

कवित्त–मौलसिरी मंजुनकी गुंजनकी कुंजनको
सोसों घनश्याम कहि कामकी कथै गये
कहै पद्माकर अथाइनको तजि तजि
गोपगण निज निज गेहके पथै गयो
शोच मति कीजै ठकुरानी हम जानी चित
चञ्चल तिहारो चढि चाहिकै रथै गयो
छीनन छपाकर छपाकर सुखी तू चलि
वदन छपाकर छपाकर अथैगयो ॥ २५

दोहा ।

चली प्रीतिवश मीतपै, मीत चल्यो तिय चाहि
भई भेंट अधबीच तहँ, जहाँ न कोऊ आहि २६

अथ गणिका अभिसारिकाको उदाहरण—सवैया।

केसरिरंगरँगी शिर ओढनी कानन कीन्हें
गुलाबकली हौ। भाल गुलाल भर्यो पदमा-
कर अंगन भूषित भांति भली हौ॥ औरनको
छलती छिनमें तुम जातिन औरनसों जु छली
हौ। फागमें मोहनको मनलै फगुवामें कहा अब
ान चली हौ॥ ३७॥

ोहा—सहौसांझतेसुमुखितू,सजिसबसाजसमाज
कोअसबडभागीजुहैं,चलीमनावनकाज ३८

अथ दिवाअभिसारिका।

कवित्त—दिनकैकिंवारखौलिकीनोअभिसारपैन,
जानिपरी काहू कहां जाति चलीछलसी
कहै पद्माकर न नाकरी सकारै जाहि,
कांकरी पगन लगै पंकजकै दलसी॥
कामदसों कानन कपूर ऐसी धूरिलगै,
पदसों पहार नदी लागतहै नलसी।

घास चांदनीसों लगै इंदुसों लगत रवि,
मग मखतूल सों मही हूँ मखमलसी३९॥

दोहा ।

सजिसारँगसारँगनयनि,सुनि सारँग वन माँह॥
भर दुपहर हरिपैचली, निरखि नेहकीछाँह४०॥

अथ कृष्ण अभिसारिकाको उदाहरण—सवैया ।

सांवरी सारी सखी सँग सांवरी सांवरे धारि
विभूषण ध्वैकैत्यों पद्माकर सांवरेई अँग रागनि
आँगी रची कुच ढ्कै ॥ सांवरी रैनिमें सांवरीपै
वहरै घन घोर घटा क्षितिछ्वैकै । सांवरी पामरी
की दै सुहीवलि सांवरेपै चली सांवरी ह्वैकै ४१।

दोहा—कारी निशि कारीघटा,कचरति कारेनाग
कारे कान्हरपै चली,अजबलगनकीलाग४२

शुक्ल अभिसारिका ।

कवित्त—साजि ब्रजचन्दपै चली योंमुखचद्रजाको,
चंद्रचांदनी को मुख मन्द सों करत जात

कहैं पद्माकर त्यों सहज सुगन्धही के,
पुंज वन कुंजनमें कंज से भरत जात॥
धरत जहांई जहां पग है सु प्यारी तहां,
मंजुल मँजीठही की माठ सी ढरत जात।
हासन ते हीरे सेत सारीके किनारनते,
वारन ते मुक्ताहू हजारन झरत जात४३॥

दोहा–युवति जुन्हाईसों न कछु, और भेदअवरेखि
तिय आगमपियजानिगो, चटकचांदनी पेखि

चलन चहै परदेशको, जातियको जब कन्त।
ताहि प्रवत्स्यत्प्रेयसी, कहत सुकवि मतिमन्त

अथ मुग्धाप्रवत्स्यत्पतिका उदाहरण–सवैया।

सेज परी सफरीसी पलोटत ज्यों ज्यों घटा घनकी गरजै री। त्यों पद्माकर लाजनितैं न कहै दुलही हियकी हरजै री॥ आली कहू उपचार करै पै न पाइ सकै

जाहि न ऐसे समय मथुरै यह कोउ न कान्हको
बरजै री ॥ ४६ ॥

दोहा—बोलतबोल न ह्वैविकल, घरघरातसबगात ।
नवयौवनकेआगमन, सुनिपियगमनप्रभात ॥

अथ मध्या प्रवत्स्यत्प्रेयसीको उदाहरण—सवैया ।

गो गृहकाज गुवालनके कहै देखिबेको क
दूरिके खेरो । मागि बिदा लये मोहनीसों पद
माकर मोहन होत सबेरो ॥ फेट गही न गह
बहियां नगरी गहि गोविंद गौनते फेरो । गोरं
गुलाबके फूलनको गजरा लै गोपालकीगेलमेंगे

दोहा

सुनि सखीनमुख शशिमुखी, बलमजाहिंगे दूरि
बूझ्योचहतिवियोगिनी, जियज्यावनकीमूरि४

प्रौढा प्रवत्स्यत्पतिका ।

कवित्त—सौदिन को मारग तहांकोबेगिमांगीबि
प्यारी पदमाकर प्रभात राति बीते पर

सो सुनि पियारी पिय गमन बरायबे को,
आंसुन अन्हाइ बोलीआसन सुतीते पर॥
बालम विदेश तुम जातहो तौ जाउ पर,
सांची कहिजाउ कब ऐहौ भौन रीते पर।
पहरके भीतरके दो पहर भीतरहीं,
तीसरे पहर कैधौं सांझही व्यतीते पर९०

पुनर्यथा सवैया।

जात हैं तो अब जानदे री छिनमें चलबेकी न बात चलैहैं । त्यों पदमाकर पौनके झूँकन कौलियाकूकनिको सहि लैहैं ॥ वे उलहैं बन बाग बिहार निहारि निहारि जबै अकुलैहैं।जैहैं न फेरि फिरें घर ऐहैं सुगांवते बाहेर पांव न दैहैं९१

दोहा-अशन चले आंसूचले, चले मैनके बाण।
रसन गमन सुनि सुख चले,चलतचलैंगप्राण

अथ परकीया प्रवत्स्यत्प्रेयसी-सवैया।

जो रसखान नहीं झरनी कहु मालती म

बहै मगनाखै। नेहवती युवती पद्माकर पानी न पान कछू अभिलाखै॥ झांकि झरोखे रही कबकी दबकी दबकी सु मनैमन माखै । कोउ न ऐसो हितू हमरो जु परोसिनके पियको गहि राखै ॥

दोहा ।

ननँदचाहसुनिचलनकी बरजतक्यों न सुकन्त । आवत वन बिरहीनको, बैरी बधिक बसन्त ॥

गणिका प्रवत्स्यत्प्रेयसी—सवैया ।

आँखिनके अँसुवानिहिसों निज धामहि धाम धरा भरिजैहैं॥ त्यों पद्माकर धीर समीरन धीर घनी कहु क्यों धरिजैहैं ॥ जो तजि मोहिं चलोगे कहूं तो इती बिरहागिनियां अरिजै हैं ॥ जैहैं कहां कछु रावरेको हमरे हियको तो हरा जरिजैहैं ॥ ८८ ॥

दोहा ।

फवतफागफाजियतबडी, चलनचहतयदुराय।
को फिरि जाइ रिझाइबो, ध्वनिधमारिकोगाय
आवत बलम बिदेशते, हर्षित होव जु बाम।
आगम पतिका नायिका, ताहिकहत रसधाम

मुग्धा आगत पतिका ।

कवित्त–कानि सुनि आयसु सुजानप्राणप्रीतमको
आनि सखियान सजेसुन्दरीकेआसपास
कहै पद्माकर सुपन्नन को हौज हरे,
ललित लबालब भरे हैं जल बाँस बाँस॥
गूँदि गेंदै गुलगंज गोहर न गज गुल,
गुप्त गुलाबी गुलगजरे गुलाब पास ।
खासे खसबीजन सुखौनपौन खाने खुले,
खसके खजाने खसखाने खूब खसखास
दोहा-आवतलेनद्विरागमन, रमणिसुनतयहबानि
हरषिछपावनहित सङ्कु, रहीपौढिपटतानि८९

मध्या आगतपतिका—सवैया ।

नँदगांवते आइगो नन्दलला लखि लाडिली ताहि रिझाय रही । मुख घूँघुट घालि सके नहिं माइके माइके पीछे दुराय रही ॥ उचके कुच कोरनकी पदमाकर कैसी कछू छबि छाइ रही। ललचाय रही सकुचाय रही शिरनाय रही मुसकाय रही ॥ ६० ॥

दोहा ।

बिछुरिमिले पियतीयको,निरखतसुमुखि स्वरूप
कछु उराहनो देनको, फरकत अधरअनूप॥६१॥

प्रौढा आगत पतिका ।

कवित्त—आजुदिनकान्ह आगमनके बधाये सुनि,
छाये मग फूलन सुहाये थल थलके।
कहै पदमाकर त्यों आरती उतारिबेको,
थारनमें दीप हार हारनके छलके ॥

कंचनके कलश भराये भूरि पन्नन्के,
तानो तुंग तोरन तहांई झलाझलके।
पौरके दुवारेते लगाय केलि खंदिरलौं,
पद्मनि पांवडे पसारे मखमलके ॥ ६२॥

दोहा—आवत कंत विदेशते, हौं ठानव मुदमान।
मानहुँगी जब करहिंगे,न पुनि गमनकीआन

परकीया आगतपतिका—सवैया।

एकै चलै रस गोरस लै अरु एकै चलै मग फूल बिछावत। त्यों पद्माकर गावत गीत सु एकै चलै उर आनँद छावत॥यों नँदनन्द निहारिबेको नंदगांवके लोग चले सब धावत॥ आवत कान्ह बने बनते अब प्राण परोसे परोसिन पावत ॥ ६४ ॥

दोहा—रमनि रंग औरो भयो,गयो विरहको
आगो नेहरसो जो सुनि,वहै वैद रस

गणिका आगतपतिका उदाहरण—सवैया ।

आवत नाह उछाह भरे अवलोकिबेको निज नाटकशाला । हौं नचि गाय रिझावहुँगी पदमाकर त्यों रचि रूप रसाल ॥ ये शुक मेरे सुमेरे कहे यों इते कहि बोलियो वैन विशाल ॥ कंत विदेश रहे हो जिते दिन देहु तिते मुक्तानिकी माला ॥ ६६ ॥

दोहा—वे आये ल्याये कहा, यह देखनके काज॥
सखिनपठावतिशशिमुखी,सजतआपनीसाज
विविधकहीयेसब तिया,प्रथमउत्तमा मानि॥
बहुरिमध्यमादूसरी,तीजीअधमा जानि६८॥

अथ उत्तमाको लक्षण—दोहा ।

सुपियदोषलखिसुनिजुतिय,धरैनहियमेंरोष।
ताहिउत्तमाकहतहैं,सुकवि सबैं निरदोष६९॥

कवित्त—पातीलिखीसुमुखी प्रजानप्रियगोविंदको
श्रीयुत सलोने श्याम सुखनि सने रहौ।

कहै पदमाकर तिहारि क्षेम छिन छिन,
चाहियतु प्यारे मन मुदित घने रहौ ॥
बिनती इती है कै हमेशहु हमैं तौ निज,
पायनकी पूरी परिचारिका मते रहौ ।
याही में मगन मन मोहन हमारो मन,
लगनि लगाय लग मगन बने रहौ ७०॥
दोहा-धरतिननाहगुनाहडर, लोचनकरतिनलाल
तियपियकीछतियाँलगी,बतियांकरतिविशाल
पियगुनाहचितचाहलखि, करैमानसनमान ।
ताहि तीयकोमध्यमा, भाषतसुकवि सुजान ॥

अथ मध्यमाको उदाहरण ।

कवित्त-मन्द मन्द दरपै अनन्दहीके आँसुनकी,
करसै सुबूँदै मुकतानही के दानेसी ।
कहै पदमाकर प्रपंची पंचबाणनन,
काननकी मानपै परी त्यों चोर चानेसी॥
ताजी त्रिवलीनमें विराजीछबिछाजीसवै,

राजी रोस राजी करि असित उठानेसी।
सोहैं पेख पीको बिहँसोहैं भये दोऊ दृग,
सोहै सुनि भौंहैं गई उतरि कमानेसी।

पुनर्यथा ।

कवित्त–जाके मुख सामुहे भयोई जो चाहतमुख,
लीन्हों सो नवाई डीठि पगन अवागीरी।
बैन सुनिबेको अति व्याकुल हुते जे कान,
तेऊ मूँदि राखे मजा मनहूं न माँगीरी॥
झारि डारी पुलकि प्रसेदहूं निवारिडारी,
नेक रसनाहूं त्यों भरी न कछु हांगीरी।
एते पै रह्यो ना प्राण मोहन लहूपै भहू,
टूक टूक ह्वैके जो छटूक भई आंगीरी॥
दोहा-रह्यों मान मनकी मनहिं, सुनतकान्हकेबैन
बरजि बरजि हारे तऊ, रुके न गरजी नैन॥

अथ अधमाको लक्षण—दोहा ।

ज्योंहीज्योंप्रियहित करत, त्योंत्योंपरतिसरोष ।
ताहि कहत अधमा सुकवि, निठुराईकी कोष ॥

अथ अधमाको उदाहरण—सवैया ।

है उसझाय रिझायबेको रस राग कवित्तनकी ध्वनि छाई ॥ त्यों पदमाकर साहसकै कबहूं न विषादकी बात सुनाई ॥ सपनेहू कियो न कछू अपराध सु आपने हाथन सेज बिछाई । प्यो परि पांय मनाय जऊ तउ पापिनिको कछु पीर न आई ॥ ७७ ॥

दोहा—मानठानि बैठी इतौं, सुवश नाहनिजहेरि ।
कबहुँ जु परवश होहि तौ, कहा करैगी फेरि ॥

इति नायिका निरूपण ।

अथ नायक निरूपण ।

दोहा—सुन्दरगुणमंदिरयुवा, युवतिविलोकैजाहि।
कविता रागरसज्ञ जो, नायक कहिये ताहि ७१

अथ नायकलक्षण ।

कवित्त—जगत वशीकरण ही हरण गोपिनको,
तरुण त्रिलोकमें न तैसी सुन्दराई है ।
कहै पदमाकर कलानिको कदम्ब,
अवलंबनि शृंगारको सुजान सुखदाईहै॥
रसिक शिरोमणि सुराग रतनागर है,
शील गुण आगर उजागर बड़ाई है ।
ठौर ठकुराई को जु ठाकुर ठसकदार,
नन्दके कन्हाई सो सुनन्दके कन्हाई है॥
दोहा—दौरेकोनबिलोकिबो, रसिकरूपअभिराम।
सब सुखदायकसांचहू, लखिबेलायकश्याम॥

नायकके भेद—दोहा ।

त्रिविध सुनायक पति प्रथम,उपपतिवासकऔर ।
जोविधिसोंब्याहोतियन,सोईपतिसबठौर ८२॥

पतिको उदाहरण—सवैया ।

संडपही सें फिरै मडरात न जात कहूँ तजि नेहकी औंनौ । त्यों पदमाकर ताहि सराहत बात कहै जु कछू कहु कौनौ ॥ ये बड़ भागिनी तोसे तुहीं बलिजो लखि रावरो रूप सलौनौ । ब्याहहिते भये कान्ह लटू तब ह्वै है कहा जब होहिगो गौनौ ॥ ८३ ॥

दोहा ।

आई चालि सुशशिमुखी,नखशिख रूप अपार ।
दिन दिनतिययौवनबढ़त,छिनछिनतियकोप्यार
सु अनुकूल दक्षिणबहुरि, शठअरुधृष्टविचार ॥
कहैं कविन पतिएकके,भेदपेखिके चार ॥ ८८

जो परवनिताते विमुख, सानकूल सुखदानि ।
जुबहुतियनको सुखदसम, सो दक्षिण गुणखानि

अनुकूलको उदाहरण—सवैया ।

एकहि सेज पै सोवत हैं पद्माकर दोऊ महासुख साने । सापनेमें तिय मान कियो यह देखि पिया अतिही अकुलाने ॥ जागि परे पै तऊ यह जानत पौढी रही हमसों रिसठाने । प्राणपियारीके पां परिके करि सौंह गरेकी गरे लपटाने ॥ ८७ ॥

दोहा—मनमोहनतनधनसघन, रमणराधिकामोर।
श्रीराधामुखचन्द्रको, गोकुलचन्द्रचकोर ॥

अथ दक्षिणको उदाहरण ।

कवित्त—देखि पद्माकर गोबिंदकोअनन्द भरी,
आई सजि सांझहीहै हरष हिलोरेमें ।
ये हरि हमारेई हमारे चलो झूलनको,

हेमके हिंडोरन झुलानके झकोरेमें ॥
या बिधि बधूनके सुबैन सुन बनमाली,
मृदु मुसुक्याइ कह्यो नेहके निहोरेमें ।
काल्हि चलिझूलैंगे तिहारेई तिहारी सौंह,
आजु तुम झुलौहो हमारेई हिंडोरेमें ८९॥

दोहा—निज निजमनकेचुनिसबै, फूललेहु इकबार
यह कहि कान्ह कदम्बकी, हरषि हलाईडार
धरैलाज डरसैं न कछु, करै दोष निरशंक ।
टरै न टरो कैसहू, कह्यो धृष्ट सकलंक ॥९१॥

अथ धृष्टको उदाहरण—सवैया ।

ठानै मजा अपने मनकी डर आनै न रोपहु दोष दियेको । त्यों पदमाकर यौवनके मदपे मद है मधुपान पियेको ॥ राति कहूं रमि आयो घरै डर मानै नहीं अपराध कियेको । गारि दै मारि दै टारत भावति भावतो होत है हार हियेको ९०

दोहा ।

यदपि न बैन उचारियतु, गहि निबाहियतु बाँह ।
तदपि गरेई परतहै, गजब गुनाही नाँह ॥९३॥
सहित काज मधुरै मधुर, बैननि कहै बनाय ।
उर अन्तर घट कपटमय, सो शठ नायक आय ॥

शठको उदाहरण—सवैया ।

कारि कन्दको मन्द दुचन्द भई फिरि दाखन के उर दागती है । पद्माकर स्वादु सुधाते सिरै मधुते महामाधुरी जागती है ॥ गनती कहा येरी अनारनकी ये अँगूरनते अति पागती है । तुम बात निसीटी कहौ रिसमें मिसरीते मीठी हमैं लागती है ॥ ९८ ॥

दोहा ।

हौं न कियो अपराध बलि, वृथा तानियत भौंह ।
तुम उरसिज हर परसिकै, करत रावरी सौंह ९६
उपपति ताहि बखानहीं, जू परबधूको मीत ।
बार बधुनको रसिक सो, बैसिक अलज अभीत ॥

अथ उपपतिको उदाहरण—सवैया ।

आछे किये कुच कंचुकीमें घटमें नट कैसे
टा करिबेको।मोहग दूपै किये पदमाकर तो हग
छूट छटा करिबेको ॥ कीजैं कहा विधिकी वि-
धिको दियो दारुण लौट पटा करिबेको । मेरो
हियो कटि बेको कियो तिय तेरो कटाक्ष कटा
करिबेको ॥ ९८ ॥

पुनर्यथा सवैया ।

ऐसे कढे गन गोपिनके तन मानो मनोभव
भाइसे काढे। कहै पदमाकर ग्वालनके डफ बाजि
उठैं गल गाजत गाढे ॥ छांक छके छलहाइनसें
छिक पावैं न छैल छिनौ छबिबाढे ॥ केसरलौं
मुख मींजिबेको रस भीजतसे करमींजत ठाढे९९

दोहा ।

जाहिर जाइ न सकै तहँ, घरहायनके त्रास ।
फिरहत नित कान्ह के,प्राण परोसिन पास १०

वैसिकको उदाहरण—सवैया।

छोरतहीजु छराके छिन छिन छाये तहाँ
उमंग अदाकोत्यों पदमाकर जे मिस कीनके शो
घनैं मुख मोरि सजाके॥दे धन धाम धनी अब
मनहींमन मानि समान सुधाके। बारबिलासिन
तीके जपे अखरा अखरा न खरा अखराके१०

दोहा।

हेरिह हरनी कांतिवह, सुनिसी करति सुभांति।
दियो सौंपि मन ताहि तौ,धनकी कहा बिसाँति२
औरो तीन प्रकारके नायक भेद बखान।
मानी सुवसन चतुर पुनि,क्रियाचतुर पहिचान३
करै जु तिय पै मान पिय, मानी कहिये ताहि
करै वचनकी चातुरी, वचन चतुरसो आहि४॥
करै क्रियासों चातुरी, क्रियाचतुर सो जान।
इनके उदित उदाहरण, क्रमते कहत बखान५॥

मानीको उदाहरण—सवैया।

बाल बिहाल परी कबकी दबकी यह प्रीतिकी रीति निहारो। त्यों पद्माकर हैं न तुम्हैं सुधि कीनौ जो बैरी बसन्त बगारो॥ ताते मिलो मनभावती सों बलि ह्यांते रहा बच मान हमारो। कोकिलकी कल बांनि सुने पुनि मान रहैगो न कान्ह तिहारो॥ ६॥

दोहा-जगतजुरा फाहैजियत, तज्यो तेज निज भान।
रूसि रहे तुम पूस में, है यह कौन सयान ७
संयुत सुमन सुबेलिसी, सेलीसी गुणग्राम।
लसत हवेली सी सुघर, निरखि नवेली बाम ८

वचन चतुरको उदाहरण—सवैया।

दाऊ ननंद बबा न यशोमति न्योते गये कहुं लै सँग सारी। हौं हूँ इके पद्माकर पौरिमें सूनी परी बखरी निशि कारी॥ देखे न क्यों कढ़ि

तेरे सुखेत पै धाइ गई छुटि गाय हमारी । ग्वालसों बोलि गोपाल कह्यो सु गुवालिनपै मन मोहनी डारी ॥ १ ॥

दोहा—बिजनबागसकरीगली, भयोअँधेरीआय।
कोऊ तोहिं गहै जो इत, तौ फिरकहाबसाय॥

क्रिया चतुरको उदाहरण—सवैया ।

आइ सुन्योति बुलाई भलो दिन चारिको जाहि गोपालहि भावै।त्यों पदमाकर काहू कह्यो कै चलो बलि बेगहि सासु बुलावै॥ सो सुनि रोकि सकै क्यों तहां गुरुलोगनसे यह ब्योंत बनावै।पाहुनी चाहैं चल्यो जबहीं तबहींहरिसासुहिंछींकत आवै

दोहा—जलबिहारमिसभीरमें, लैचुभकीइकबार
दह भीतर मिलि परसपर, दोऊ करत बिहार।
ब्याकुलहोइजो बिरहवश, बसिबिदेशमेंकन्त
ताहीसोंप्रोषितकहत, जेकोविदबुधिवन्त १३

प्रोषितका उदाहरण ।

कवित्त–साँझ के सलोने घन सबुज सुरंगन सों,
कैसे तो अनंग अंग अंगनि सतावतो ।
कहै पद्माकर झकोर झिल्ली शोरनको,
मोरनको महत न कोऊ मन ल्यावतो ॥
काहूबिरहीकी कहीमानि लेतौ जोपै दई,
जगमें दई तौ दयासागर कहावतो ।
येरी बिधि बौरीगुणसागर घनो होतो जोपै
बिरह बनायो तौ न पावस बनावतो १४

दोहा–तजि विदेशसजिवेसही, निजनिकेतमेंजाय
कब समेटि भुज भेंटवी, भामिनि हियेलगाय
फिरिफिरिशोचतिपथिकयह, मेरोनिरखिसनेह।
तज्यो गेह निज गेहपति, त्यों न तजै कहुँ देह
विकल वटोही बिरहवश, यहै रहो चित चाहि
मिलै जु कहुँ पारसपरचो, मुरकिमिलौंतौताहि

बूझै जो न तियानके, ठानै बिबिध बिलास।
सु अनभिज्ञ नायक कह्यो, वहै नायका भास॥

अनभिज्ञनायक ।

कवित्त—नैन नहीं सैन करै बीरी मुख दैन करै,
लैन करै चुंबन पसारि प्रेम पाता है॥
कहै पद्माकर त्यों चातुरी चरित्रकरै,
चित्र करै सोहै जो विचित्र रतिराता है॥
हाव करै भाव करै विविध विभाव करै,
बूझौ पौन एतेपै अबूझनको भ्राताहै।
ऐसी परवीनको कियो जो यह पुरुष तौ,
बीसबिसे जानी महामूरख बिधाताहै१९

दोहा ।

करि उपाय हारी जु मैं, सन्मुख सैन बनाय।
समुझत प्यौ न इतेहुपै, कहा कीजियतु हाय२०
जाहि जबहिं आलंबिकै, उर उपजत रसभाव।
आलम्बन सुविभाव कहि, वर्णत सबकविराव२१

आलम्बन शृँगारके कहे भेद समुझाय ।
सकल नायिका नायकहु, लक्षण लक्षि बनाय२२
बर्णत आलम्बनहि सें, दरशन चारि प्रकार ।
श्रवणचित्रशुभस्वप्नसें, पुनिपरतक्षनिहार २३ ॥
इन चारिहु दरशननके, लक्षण नाम प्रमान ।
तिनकेकहतउदाहरण, समुझहुसबैसुजान॥२४॥

श्रवण दर्शन—सवैया ।

राधिकासों कहिआई जुतू सखि सांवरेकी मृदु मूरति जैसी । ताछिनते पदमाकर ताहि सुहात कछू न बिसूरति वैसी ॥ मानहु नीर भरी घनकी घटा आँखिनमें रही आनि उनैसी । नई सुनि कान्हकथा जुबिलोकहिगी तवहोइगी कैसी२५॥

दोहा ।

सुनत कहानी कान्हकी, तीय तजी कुलकान ।
मिलन काज लागीकरन, दूतिनसों पहिचान२६

अथ चित्रदर्शन—सवैया ।

चित्रके मन्दिरते इक सुन्दरि क्यों निकसी जिन्हं नेह नसा है। त्यों पद्माकर खोलिरही दृग बोलै न बोल अडोल दशा है॥ भृंगीप्रसंगतैं भृंगही होत जुपै जगमें जड कीट महा है। मोहन मीतको चित्र लिखे भई चित्रहिसी तौ विचित्र कहा है ॥ २७ ॥

दोहा ।

हरषि उठति फिरि२परखि, फिर परखत चखलाय
मित्र चित्रपट कोनिया, उरसों लेति लगाय२८॥

अथ स्वप्नदर्शन—सवैया ।

सैनसंकेतमें सोंधे सनी सपनेमें नई दुलही तु मिलाई॥ हौहूं गही पदमाकर दौरिसो भौंह मरोरति सेजलों आई ॥ यामनकी मनहीमें रही जु समेटि तिया लै हिया सों लगाई । आँखें गई खुलि सी विसुनै सखि हाइमें नीवी न खोलनपाई

दोहा ।

सुन्दरि सपनेमें लख्यो, निशिमें नन्दकिशोर ।
होत भोर लै दधि चली, पूंछत सकरी खोर ३० ॥

प्रत्यक्ष दर्शनको उदाहरण—सवैया ।

आई भले हो चली सखियानमें पाई गोविन्द-
कि रूपकि झाँकी । त्यों पद्माकर हारदियो गृह
काज कहा अरु लाज कहाँकी ॥ है नखते शिख
लों मृदु माधुरी बाँकियै भौंहैं विलोकनि बाँकी ।
देखि रही हगटारत नाहिं नै सुंदरश्याम सलोने
कि झाँकी ॥ ३१ ॥

दोहा ।

हौं लखि आई लखहुगी, लखै न क्योंसबलोग ।
निशिदिन सांचहु साँवरो, दुगुन देखिवे योग ३२

इति श्रीकूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेंद्र श्री सवाई
महाराज जगत्सिंहाज्ञया मथुरा स्थाने मोहनलाल भट्टात्मज
कवि पद्माकर विरचित जगद्विनोद नाम काव्ये
शृंगाररसालंबनविभावप्रकरणम् ॥ १ ॥

अथ उद्दीपन विभागलक्षण ।

दोहा—जिनहिं विलोकतहीतुरत, रस उद्दीपन होत
उद्दीपनसुविभावहै, कहत कविनको गोत १॥
सखा सखी दूती सुवन, उपवन षट्ऋतु पौन
उद्दीपनहि विभावसें, वर्णत कविमति भौन२
चन्द्र चांदनी चन्दनहु, पुहुप पराग समेत
योंहीं और शृँगार सब, उद्दीपनके हेत ॥३॥
कहे जु नायकके सबै, प्रथमहि विविध प्रकार
अब वर्णत हौं तिनहिंके, सचिव सखाजे चार
पीठमर्द बिट चेट पुनि, बहुरि बिदूषकहोइ।
मोचै मान तियानको, पीठमर्द है सोइ ॥५॥

पीठमर्दको उदाहरण ।

कवित्त—घूमि देखौ धरकि धमारनकी धूम देखौ,
भूमि देखौ भूमित छवावै छबी छबीकै।
कहै पदमाकर उमंग रंग सींचि देखौ,

केसरिकी कीच जो रह्योसँग्वाल गबिकै॥
उड़त गुलाल देखौ तानन के ताल देखौ,
नाचत गोपाल देखौ लैहौ कहा दबिकै।
झेलि देखौ झरिफ सकेलि देखौ ऐसोसुख
मेलि देखौ मूठि खेलि देखौ फाग फबिकै

हा–हौं गोपाल पै भल चहत, तेरोई ब्रजबाल
चलतिक्योंन नँदलाल पै,लै गुलाल रँगलाल
सुबिट बखानतहैसुकवि,चातुर सकल कलान
दुहुँन मिलावै में चतुर, वहै चेट उर आन

विटको उदाहरण–सवैया।

पीतपटी लकुटी पदमाकर मोरपखालै कहूं
हि राखी। यों लखि हाल गुवालको ताछिन
लसखा सुकला अभिलाखी॥ कोकिलको
कलकै सो कुहूकुहू कोमल काककी कारिका
ाखी।रहिसरही ब्रजबालके सामुहे आइ रसाल-
ी मञ्जरी राखी॥ ९॥

दोहा ।

हरिको मीत पछीत इमि, गायो विहर वलाय ।
परतकान्हतजिमानतिय, मिलीकान्हसोजाय

अथ चेटकको उदाहरण–सवैया ।

साजि सँकेतमें सांवरेको सुगयोई जहां हुती ग्वालि सयानी । त्यों पदमाकर बोलि कह्यो बलिबैठी कहां इतही अकुलानी ॥ तौलौं नजाइ तहां पहिरै किन जौलौं रिसात न सासु जेठानी । हौं लखि आयो निकुंजहिमें परी कालिह जु रावरी माल हिरानी ॥ ११ ॥

दोहा ।

उतन ग्वालि तू कितचली, ये उनयेघनघोर ।
हौं आयो लखि तुव घरै, पैठत कारो चोर ।
स्वांग ठानि ठानै जुकहु, हाँसी वचनविनोद
कह्यो विदूषक सों सखा, कविनमानमदमोद

अथ विदूषकको उदारण–सवैया ।

फागके द्यौस गोपालन ग्वालिनीकै इक ठानि
कयो मिसि काऊ । त्यों पदमकर झोरि झमाइ
झैरी सबै हरि पै इकहाऊ ॥ ऐसे समै वहै भीत
नोदी सुनेसुक नैन किये डरपाऊ॥लै हर मूसर
सरहै कहूं आयो तहां बनिकै बलदाऊ ॥

दोहा ।

कटि हलाय हलकायकछु, अद्भुतख्यालबनाय ।
अस को जाहि न फागसैं, परगटदियोहँसाय ॥

इति सखा ।

अथ सखी–दोहा ।

जिनसों नायकनायिका, राखै कछु न दुराव।
सखी कहावैं ते सुघर, सांचो सरल सुभाव १६
काज सखिनके चारि ये, मंडन शिक्षादान ।
उपालंभ परिहास पुनि, वर्णत सुकविसुजान

मंडन तियहि शृँगारिबो, शिक्षा विनय विलास
उपालंभ सो उरहनो, हँसी करब परिहास १८

मंडनको उदाहरण सवैया ।

साँग सँवारि शृँगारि सुवारनि बेनी गुही जु छुबानिलों छावै । त्यों पदमाकर या विधि औरहू साजि शृँगार जु श्यामको भावै । रीझै सखी लखि राधिकाको रँगजा अँग जो गहिनो पहिरावै । होय यों भूषित भूषण गात ज्यों डाकत ज्योति जवाहिर पावै ॥ १९ ॥

दोहा ।

कहा करौं जो आँगुरिन, अनी घनी चुभिजाय ।
अनियारे चख लखि सखी, कजरा देत डराय

अथ शिक्षा—सवैया ।

झाँकति है का झरोखा लगी लग लागिबे इहां झेल नहीं फिर । त्यों पदमाकर तीखे कटा

क्षन कीसरको सरसेल नहीं फिर ॥ नयननहींकी
पलापल कै घनघावनको कछु तेल नहीं फिर ।
प्रीति पयोनिधिमें धुसिकै हँसिके कढ़िबो हँसि
खेल नहीं फिर ॥ २१ ॥

दोहा-बहतलाजबूड़तसुमन, भ्रमतनैन तेहि ठांव।
नेह नदीकी धारमें, तू न दीजिये पांव॥२२॥

अथ उपालम्भन ।

कवित्त-ब्रज बहिजाय न कहूं यो आई आँखि
उमँगि अनोखी घटा वरषति नेहकी ।
कहै पद्माकर चलावै खान पानकी को
प्राणन परी है आनि दहसति देहकी ॥
चाहिये न ऐसी वृषभानुकीकिशोरीतोहिं
आई है दशा जो ठीक ठाकुर सनेह की।
गोकुल की कुलकी नगैलकीगोपालैसुधि
गोरस की रसकी न गौवन न गेहकी२३

दोहा ।

कौन भाँति आयेनिरखि, तुमतहँ नन्दकिशोर।
भरभराति भामिनि परी, घनघराति घनघोर॥

अथ परिहास उदाहरण—सवैया ।

आई भले द्रुत चाल तू चातुर आतुर मोहनके मन भाई । सौतिनके सरको पद्माकर पाइ कहां व इती चतुराई॥मैं न सिखाई सिखाई सबै नहिं यों कहि रैनिकी बात जताई।ऊपर ग्वालि गोपाल तरे सुहरे हँसि यों तसवीर दिखाई।२६॥

दोहा-को तेरो यह साँवरो,यों बूझ्यो सखि आय
मुखतेकहीनबातकछु, रहीसुमुखिमुखनाय॥

अथ दूती लक्षण ।

दोहा—दूतपने मेंहीं सदा, जो तिय परमप्रवीन ।
उत्तम मध्यम अधम हैं, सो दूतीविधितीन२७
हरै शोच उचरै बचन, मधुर मधुर हितमानि
सो उत्तमदूतीकही,रसग्रंथनमें जानि ॥२८॥

अथ उत्तमा दूतीको उदाहरण ।

कवित्त–गोकुलकी गलिनगलिनयह फैली बात,
कान्है नन्दरानीवृषभानु भौनब्याहती ॥
कहै पदमाकर यहांई त्यों तिहारो चलै,
ब्याहको चलन वहै साँवरो सराहती ॥
शोचति कहाहौ कहा करिहैं चवाइनये,
आनँदकी अवलीन कहा अवगाहती ।
प्यारो उपपति तै सु होत अनुकूल तुम,
प्यारी परकीयाते स्वकीया होन चाहती

दोहा ।

कालिहकलिन्दीकेनिकट, निरखिरहेहौजाहिं
आई खेलन फाग वह, तुमहींसों चितचाहिं
कछुक मधुर कछुकछुपरुप,कहैवचनजोआय
ताहीको कविकहतहैं,मध्यम दूती गाय ३१॥

अथ मध्यम दूती को उदाहरण–सवैया ।

बैनसुधाके सुधासी हँसी वसुधामें सुधाकी सटा करती है । त्यों पदमाकर बारहिबार सुबार बगारि लटा करती है ॥ बीरविचारे बटोहिन पै इक काजही तौ यों लटा करती है। विज्जुछटासी अटा पै चढी सुकटाक्षनि घालि कटा करतीहै३२

दोहा–कुंज भवनलों भावते, कैसे सुकहि सु आय
जावक रंग भारनि भटू, मगमें धरति न पांय
कै पियसों कै तियहिसों, कहै परुषही बैन ।
अधम दूतिका कहत हैं, ताहीसोंमतिऐन ३४

अथ अधमाको उदाहरण–सवैया ।

ऐ है न फेर गई जो निशातनु यौवनहै घनकी परछाहीं । त्यों पदमाकर क्यों न मिलै उठि यों निबहैगो न नेह सदाहीं ॥ कौन सयानि जो कान्ह सुजानसों ठानि गुमान रही मनमाहीं ।

एकै जु कंजकली न खिली तो कहो कहूं भौंरको ठौर है नाहीं ॥ ३९ ॥

दोहा–कै गुमान गुणरूपके तै न ठान गुणमान ।
मनमोहन चितचढि रही,तोसीकिती न आन
द्वै दूतीके काज ये, विरह निवेदन एक ।
संघट्टन दूजी कह्यो, सुकविन सहित विवेक॥
विरहव्यथानि सुनायकै विरहनिवेदन जानि ।
दोउनको जु मिलाइबो, सो संघट्टन मानि॥४०॥

अथ विरहनिवेदनको उदाहरण ।

कवित्त–आई तजि हौंतो ताहि तरनितनूजातीर,
ताकि ताकि तारापति तरफति तातीसी ।
कहै पद्माकर घरीक ही में घनश्याम,
काम तौक तलवाज कुंजन ह्वै करती सी॥
याही छिन वाहीसो न मोहन मिलौगेजोपै
लगनि लगाई एती अगिनि अवाती सी।

रावरी दुहाई तौ बुझाई न बुझैगी फेर,
नेह भरी नागरीकी देह दियाबाती सी३९
दोहा-को जिवावतो आजुलों,बाढे विरह बलाय।
होति जु पैन नहा इसी, ताकी तनक सहाय४०

उदाहरण ।

कवित्त-तासनकी गिलमें गलीचा मखतूलनके,
झरपै झुमाऊ रही झूमि रंगद्वारीमें।
कहै पदमाकर सुपदीप मणि मालनकी,
लालनकी सेज फूल जालन समारीमें ॥
जैसे तैसे तित छलबलसों छबीली वह,
छिनक छबीलीको मिलाय दई प्यारीमें।
छूटि भाजी करते सु करके विचित्र गति,
चित्र कैसी पूतरी न पाई चित्रसारीमें४१

दोहा ।

गोरी को जु गोपाल को, होरीके मिस ल्याय ।
बिजन सांकरी खोरिमें,दोऊ दिये मिलाय ४२॥

आपुहि अपनो दूतपन, करै जु अपने काज ।
ताहि स्वयंदूती कहत, ग्रन्थनमें कविराज ॥ ४३ ॥

अथ स्वयंदूतिकाका उदाहरण—सवैया ।

रूपि कहूं कढि माली गयो गई ताहि मना-
न साजु उताली ॥ त्यों पदमाकर न्हान नदी जे
कुतीं सजनी सँग नाचनवाली ॥ मंजु महाछवि
की कबकी यह नीकी निकुंजपरी सब खाली ॥
हौं इह बागकी मालिनि हौं इत आय भले तुम
हो वनमाली ॥ ४४ ॥

दोहा ।

मोहींसों किन भेंटले, जौलों मिलै न वास ।
शीत भीत तेरो हियो मेरो हियो हमास ॥ ४५ ॥

षट्ऋतु वर्णन—अथ वसन्त ।

कवित्त—कूलनमें केलिमें कछारनमें कुंजनमें,
क्यारिनमें कलिन कलीन किलकन्त है ।

कहै पदमाकर परागनमें पानहू में,
पाननमें पीकमें पलाशन पतंग है ॥
हारमें दिशान में दुनीमें देश देशनमें,
देखो दीप दीपनमें दीपत दिगंत है।
बीथिन में ब्रजमें नवेलिन में बेलिनमें,
बनन में बागन में बगरो बसंत है ४६ ॥
और भाँति कुंजनमें गुंजरत भौंर भीर,
और डौर झौरनमें बौरनके ह्वै गये।
कहै पदमाकर सु और भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल और छबि ह्वैगये।
और भाँति बिहंग समाजमें अवाजहोत,
ऐसो ऋतुराजके न आज दिन है गये।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरै मन औरै वन ह्वै गये४७
पात बिन कीन्हेंऐसीभांति गनबेलिनके
परत न चीन्हे जे ये लरजत लुंज हैं।

कहै पद्माकर त्रिसासी या बसन्तकेसु,
ऐसे उतपात गात गोपिनके भुंज हैं ॥
ऊधो यहसूधोसो सँदेशोंकहिदीजोभले,
हरि सों हमारे ह्यां न फूले बन कुंजहैं।
किंशुक गुलाबकचनारऔअनारनकी,
डारनपै डोलत अँगारनके पुंज हैं ४८

सवैया।

ये ब्रजचन्द्र चलो किन वाब्रज लूकैबसन्तकी ऊकन लागी। त्यों पद्माकर पेखो पलाशन पावकसी मानो फूंकन लागी॥ वै ब्रजबारीविचारी बधू बनवारी हियेलौं सुहूकन लागी। कारीकुरूप कसाइनै पै सुकुहूकुहू कैलिया कूकन लागी ॥

अथ ग्रीष्म ऋतु वर्णन ।

कवित्त—फहरै फुहार नीर नहर नदी सी बहै,
छहरै छवीन छाम छीटनकी छाटीहै ।

कहै पद्माकर त्यों जेठकी जलाकैं तहाँ,
पावैं क्यों प्रवेश वेश वेलिनकी बाटीहै॥
बारहू दरीनबीच चारहू तरफ तैसो,
बरफ बिछाय तापै शीतल सु पाटी है।
गजके अँगूरकी अँगूरसेहू ऊँचो कुच,
आसव अँगूरको अँगूरहीकी टाटीहै८०॥

अथ वर्षाऋतु वर्णन ।

कवित्त–मल्लिकान मंजुल मलिन्द मतवारे मिले,
मन्द मन्द मारुत महीम मनसाकी है।
कहै पद्माकर त्यों नदन नदीन तित,
नागर नवेलिनकी नजर निशाकी है ॥
दौरत दरेरो देत दादुर सु दूंदै दीह,
दामिनी दमंकनि दिशानि में दसाकी है।
बद्दलनि बुन्दनि विलोको बगुलान बाग,
बंगला नवेलिन बहार बरसाकी है ८१॥
चंचला चमाकै चहूं ओरनते डाह भरी,

चरज गई ती फेर चरजन लागी री ।
कहै पद्माकर लवंगनकी लोनी लता,
लरज गई ती फेर लरजन लागी री ।
कैसे धरो धीर वीर त्रिविध समीरै तन,
तरज गईती फेर तरजन लागी री ।
घुमड घमंड घटा घनकी घनेरी अबै,
गरज गईती फेर गरजन लागीरी ॥९२॥
बरषत मेह नेह सरसत अंग अंग,
झरसत देह जैसे जरत जवासोहै ।
कहै पद्माकर कलिन्दीके कदम्बन पै,
मधुपन कीन्हो आइ महत मवासो है ।
ऊधो यह ऊधम जताइ दीजो मोहन को,
ब्रज सो सुबासो भयो अगिनि अवासोहै ।
पातकीपपीहा जलपानको न प्यासोकहा,
व्यथित वियोगिनके प्राणनको प्यासोहै

अथ शरदऋतुवर्णन ।

कवित्त—तालनपै तालपै तमालनपै मालन पै,
वृन्दावन बीथिन बहार वंशीबट पै ।
कहै पद्माकर अखंड रासमण्डल पै,
मण्डित उमंडि महा कालिन्दी के तट पै ॥
क्षितिपर छानपर छाजत छतानपर,
ललित लतानपर लाडिली के लट पै ।
आई भले छाई यह शरद जुन्हाई जिहि,
पाईछबि आजु हि कन्हाईके मुकुट पै८४॥
खनक चुरीनकी त्यों ठनक मृदंगनकी,
रुनुक झुनुकसुर नूपुरके जालको ।
कहै पद्माकर त्यों बांसुरीकी ध्वनि मिलि
रह्यो बांधि सरस सनाको एक तालको ॥
देखतै बनत पै न कहत बनै री कछु,
विविध बिलास यों हुलास इक ख्याल

चन्द्र छबिराश चांदनीको परकाशराधि,-
काको मन्दहासरास मण्डल गोपालको ६९

अथ हेमन्तऋतु वर्णन ।

कवित्त–अगरकी धूप मृगमदकी सुगन्धवर,
बसन बिशाल जाल अंग ढाकियतु है ।
कहै पद्माकर सु पौन को न गौन जहां,
ऐसे भौन उमँगि उमँगि छाकियतु है ॥
भोग औ सँयोग हित सुरित हिमन्तही में,
एते और सुखद सुहाय बाकियतु है ।
तानकी तरंग तरुणापन तरणि तेज,
तेल तूल तरुणि तमाल ताकियतुहै॥७०॥
गुलगुली गिलमें गलीचा हैं गुणीजनहैं,
चांदनी हैं चिक हैं चिरागनकी माला हैं ।
कहै पद्माकर त्यों गजक गिजा हैं सजी,
सेज हैं सुराही हैं सुराहैं और प्यालाहैं ॥

शिशिरकेपालाकोनव्यापतकसालातिन्है
जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं ।
तान तुक तालाहैं विनोदके रसाला हैं,
सुबालाहैं दुशालाहैं बिशाला चित्रशालाहैं८७

इतिश्रीकूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्र श्री सवाई महराज जगत्सिंहाज्ञया मथुरास्थाने मोहनलाल भट्टात्मज कवि पद्माकरविरचितजगद्विनोद नाम काव्ये आलंबनविभावप्रकरणम् ॥ २ ॥

अथ अनुभव-दोहा ।

जिनहींते रति भावको, चितमें अनुभव होत ।
ते अनुभव शृंगारके, वर्णत हैं कविगोत ॥ १ ॥
सात्विक भाव स्वभाव धृत, आनँद अंग विकास
इनहींते रतिभावको, परकट होत विलास ।

अथ अनुभवको उदाहरण ।

कवित-गोरसको लूटिबो न छूटिबो छराको गनै,
टूटिबो गनै न कछू मोतिनके मालको ।

कहै पद्माकर गुवालिनि गुनीली हेरि,
हरषै हँसैयों करै झूठो झूठे ख्यालको ॥
हां करति ना करति नेहकी निशा करति,
सांकरी गलीसें रंग राखति रसालको ।
दीबो दधि दानको सु कैसे ताहि भावतहै,
जाहि मनभायो झारझगरो गोपालको३॥

दोहा ।

मृदु मुसकाय उठाय भुज,क्षण घूँघुट उलटारि॥
कोधनि ऐसी जाहि तू, इकटक रही निहारि॥४॥
स्तम्भ स्वेद रोमांच कहि, वहुरि कहतस्वरभंग ॥
कम्पवरण वैवर्ण्य पुनि, आंसू प्रलय प्रसंग॥५॥
अन्तर्गत अनुमान सें, आठहु सात्विक भाय ॥
जृम्भा नवम वखानहीं, जे कवीनके राय ॥ ६॥
हर्ष लाज भय आदिते, जबै अंग थकिजात ॥
स्तम्भ कहत तासों सबै, रसग्रंथनि सरसात ७॥

अथ स्तम्भ—सवैया ।

या अनुरागकि फाग लखो जहँ रागती राग किशोर किशोरी ॥ त्यों पदमाकर घाली घली फिर लालहीलाल गुलालकी झोरी ॥ जैसिकि तैसि रही पिचकी कर काहु न केसरि रंगमे बोरी ॥ गोरिनके रँग भीजिगो साँवरो साँवरेके रँग भीजि सुगोरी ॥ ८ ॥

दोहा ।

पियहि परखितिय थकि रही, बूझेउ सखिननिहार
चलतिक्योंनक्यों चलहुमग, परत न पग रँगभार ९
रोष लाज उर हर्ष श्रम, इनहींते जो होत ।
अंग अंग जाहिर सलिल, स्वेदकहत कविगोत १०

स्वेदको उदाहरण ।

कवित्त—येरी बलबीरके अहीरनकी भीरनमें
सिमिटि समीरन अंबीरनको अटा भयो

कहै पद्माकर मनोज मनमौज नहीं,
मनके हयामें पुनि प्रेमको पटा भयो ॥
नेही नँदलालकी गुलालकी घलाघलमें,
राजै त्यों तन तपसी जघन घटाभयो ।
चौरे चखचोटिनचलाक चित्त चोरीभयो
लूटिगई लाज कुलकानिको कटाभयो ११

दोहा ।

यों श्रम सीकरसुमुखते,परत कुचनपर वेश ।
उदित चंद्र मुकुताछतनि,पूजतमनहुँ महेश॥
शीतभीत हरियादिते, उठे रोम समुहाय ॥
ताहि कहत रोमांच हैं,सुकविनकेसमुदाय१२

अथ रोमांच–सवैया ।

कैधौं डरी तू खरी जलजन्तुते कै अँगभार सिवार भयो है। कै नखते शिखलौं पद्माकर जाहिरै झार शृंगार भयो है ॥ कैधौं कछू तोहिं

शीत विकार है ताहीको या उदगार भयो है। कैधौं सुवारिविहारहिमें तन तेरो कदम्बको हार भयो है ॥ १४ ॥

दोहा ।

पुलकित गातअन्हात यों, अरीखरीछविदेत।
उठे अंकुरे प्रेमके, मनहुँ हेमके खेत ॥१५॥
हर्ष भीत मद क्रोधते, वचन भाँतिही और
होत जहां स्वरभंगको,वर्णत कविशिरमौर१६

अथ स्वरभंग—सवैया ।

जात हती निज गोकुलमें हरि आवैं तहां लखिकै मग सूना । तासों कहौं पदमाकर यों अरे सांवरो बावरे तैं हमें छूना॥ आज धौं कैसी भई सजनी उत वाविधि बोल कढ्योई कहूना। आनि लगायो हियोसों हियो भारि आयो गरो कहि आयो कछूना॥ १७॥

दोहा ।

हौं जानत जोनहिं तुम्हैं, बोलत अधअँखरान
संग लगे कहुँ औरके, करि आये मदपान १८
हर्षहिते कै कोपते, कै श्रम भयते गात ।
थरथरात तासों कहत, कम्पसुमतिसरसात १९

अथ कम्प–सवैया ।

साजि शृंगारनि सेजपै पार भई मिसहीमिस ओट जिठानी । त्यों पदमाकर आय गो कन्त इकन्त जबै निज तन्तमें जानी ॥ प्यो लखि सुन्दरि सुन्दर सेजते यों सरकी थिरकी थहरानी। बातके लागे नहीं ठहरात है ज्यों जलजातके पातपै पानी ॥ २० ॥

दोहा ।

थरथरात उर कर कँपत, फरकत अधर सुरंग ।
फरकि पीउ, पलकनि प्रकट, पीक लीककोढंग

मोहितते कै क्रोधते, कै भयहीते जान ।
बरण होत जहँ और विधि, सो वैवर्ण्य बखान

सवैया ।

सापनहूं न लख्यो निशिमें रतिभौनते गौन कहूं निज पीको । त्यों पद्माकर सौतिसंयोगन राग भयो अनभावती जीको ॥ हारनसों हहरात हियो मुकुता सियरात सुबेसरहीको। भावतेके उर लागी जऊ तऊ भावतीको मुख ह्वै गयो फीको २३

दोहा ।

कहिन सकत कछु लाजते, अकथ आपनीबात ।
ज्योंज्योंनिशिनियरातहै, त्योंत्योंतियपियरात ॥
हर्ष रोष अरु शोक भय, धूमादिकते होत ।
प्रकटनीर अँखियानमें, अश्रु कहत कविगोत २५

अश्रुको उदाहरण ।

कवित्त–भेद बिनजाने एती वेदन बिसाहिवे को,
आजहौं गईही बाट बंशीबटवारेकी ॥

क्रीडत विलोकि नन्दवेषहू निहारि भई,
भई है विकल छबि कान्ह रतिवारेकी ।
कहै पद्माकर लटू ह्वै लोट पोट भई,
चितमें चुभी जो चोट चाय चटवारेकी
बावरी लौं बूझति विलोकति कहां तू बीर
जानै कहा कोऊ प्रेम प्रेम हटवारेकी २६

हा–आँखिनतेआंसूउमडि,परतकुचनपरआन
जनु गिरीशके शीशपर, डारतमणिमुकतान
तनमनकी न सम्हार जहँ, रहै जीवगनगोय
सो शृँगार रसमें प्रलय, वर्णत कविसबकोय

प्रलयको उदाहरण–सवैया ।

ये नँदगांवते आये इहां उत आई सुता वहँ
निहू ग्वालकी । त्यों पद्माकर होत जुराजुरी
उन फाग करी इह ख्यालकी ॥ डीठ चली
नकी इनपै इनकी उनपै चली मूठि गुलालकी

दोहा–दैचखचोटअँगोटमग, तजीयुवतिवनमाहिं
खरीविकलकबकोपरी, सुधिशरीरकीनाहिं ३०
पिय बिछोह सम्मोहकै, आलसही अवगाहि
छिन इनवदन विकासिबो, जृम्भाकहियेताहि

जृम्भाको उदाहरण–सवैया ।

आरससों रससों पद्माकर चौंकि परे चख चुम्बनके किये । पीकभरी पलकैं झलकैं अलकैं झलकैं छबि छूटि छ्यालिये ॥ सो मुख भाषि सकै अबको रिसकै कसकै मसकै छतियाछिये । रातिकी जागी प्रभात उठी अँगरात जँभात लजात लगी हिये ॥ ३२ ॥

दोहा ।

दरदर दौरति सदन द्युति, सम सुगन्धसरसाति
लखत क्योंनआलसभरी, परीतियाजमुहाति ॥

इति सात्विकभाव वर्णनम् ।

दोहा–अनुभावहि में जानिये, लीलादिक जेहाव
ते सँयोग शृंगारमें, वर्णत सब कविराव ३४

हावलक्षण–दोहा।

प्रगट स्वभाव तियानके, निज शृँगारकेकाज।
हाव जानिये ते सबै, यों भाषत कविराज
लीला प्रथम विलासतिय, पुनिविक्षिप्तबखान
विभ्रम किलकिंचित्तबहुरि, मोट्टाइतपुनिजान
बिब्बोकहुपुनिबिहृतगनि, बहुरिकुट्टमितगाव।
रस बन्धनमें ये दशहु, हाव कहत कविराव
पिय तियको तिय पीउको, धरैजु भूषणचीर।
लीलाहाव बखानहीं, ताहीको कवि धीर२८

अथ लीलाहावको उदाहरण ।

कवित्त–रूप रचि गोपीको गोविन्दगोतहांईजहाँ
कान्ह बनि बैठी कोऊ गोपकी कुमारीहै
कहै पद्माकर यों उलट कहै को कहाँ,
कसकै कन्हैया कर मसकै जु प्यारी है॥
नारीते न होत नर नरते न होत नारी,
विधिके करेहूँ कहूँ काहू ना निहारी है।

कामकरताकी करतूत या निहारी जहां,
नारी नर होत नर होत लख्यो नारीहै ३९

पुनर्यथा—सवैया ।

ये इत घूँघट घालि चलैं उत बाजत बांसुरीकी
ध्वनि खोलैं। त्यों पद्माकर ये इतै गोरस लै
निकसैं यों चुकावतमोलैं॥ प्रेमके फन्देसु प्रीतिकी
पैठमें पैठतही है दशा यह जोलैं। राधामयी भई
श्यामकी सूरत श्याममयी भई राधिका डोलैं४०

दोहा ।

तिय बैठी पियको पहिरि, भूषण वसन बिशाल।
समुझि परत नहिं सखिनको, कोतियकोनँदलाल

जो तिय पियहि रिझावई, प्रगट करै बहुभाव
सुकवि विचार बखानहीं, सोबिलासनिधि हाव।

अथ बिलास हाव वर्णन।

कवित्त—शोभित सुमनवारी सुमना सुमनवारी
कौनहूँ सुमनबारी को नहिं निहारी है

कहै पद्माकर त्यों बांधनू बसनवारी,
वा ब्रज बसन वारी ह्यो हरनहारी है ॥
सुवरनवारी रूप सुवरनवारी सजे,
सुवरनवारी कामकरकी सम्हारी है।
सीकरनवारी स्वेद सीकरन वारी रति,
सीकरनवारी शो वशीकरन वारी है ४३॥

पुनर्यथा—सवैया।

आईही खेलन फाग इहां वृषभानुपुराते सखी सँगलीने। त्यों पद्माकर गावतीगीत रिझावती भावबताय नवीने॥ कंचनकी पिचकी करमें लिए केसरिके रँगसों अँगभीने। छोटीसी छाती छुटी अलकैअतिबैसकी छोटीबडी परवीने ४४॥

दोहा।

मसुझि श्यामको सामुहे, करते चार नगार।
मनमोहन मनहरणको, लगीं करन शृंगार ४५॥

तनक तनकही सें जहां,तरुणि महाछवि देत
सोई विक्षिप्तहावको, वर्णत बुद्धि निकेत ॥४६

अथ विक्षिप्त वर्णन—सवैया ।

मानो मयंकहिके पर्यंक निशंक लसैं सुत वं
महीको । त्यों पद्माकर जागि रह्यो जनु भा
हिये अनुराग जु पीको ॥ भूषण भार शृँगार
सों साजि सौतनको जु करै मुख फीको।ज्योतिकं
जाल विशाल महा तिय भाल पै लाल गुला
लको टीको ॥ ४७ ॥

दोहा ।

जनु मलिन्द अरबिन्दबिच,बस्यो चाहि मकरन्द
इमि इक मृगमद बिन्दुसों,कियेसुवशब्रजचन्द४८
होत काज कछुको कछू, हरबराय जिहि और ।
विभ्रम तासों कहत हैं, हाव सबै शिरमौर॥४९।

विभ्रम—सवैया ।

बछरै खरी प्यावै गऊ तिहिको पद्माकरको

मन लावत है । तिय जानि गिरै या गहो बन-
माल सुसेचे ललाइच्यो छावत है ॥ उलटी कर
दोहनी मोहनीकी अंगुरी थन जानि दबावतहै ।
हेरो जो दुहाइबो दोउनको सखि देखतहीं
नि आवत है ॥ ८० ॥

दोहा ।

पहिरकण्ठबिचकिंकिणी, कस्योकमरबिचहार ।
हरवराय देखन लगी, कबते नन्दकुमार ॥८१॥
होत जहां इकबारही, त्रास हास रस रोष ॥
तासों किलकिंचितकहत, हावसबै निर्दोष ८२

किलकिंचित—सवैया ।

फागुनमें मधुपान समय पद्माकर आइगे
स्याम सँघाती । अंचल ऐंचो उँचाय भुजा भरै
भरि गुलालकी ख्याल सुहाती ॥ झूठिहूदै झझ-
काय जहां तिय झांकी झुकी झझकी मदमाती ।

हसि रही घरी आधक लौं तिय झारत अंग
निहारत छाती ॥ ८३ ॥

दोहा ।

चढ़त भौंहधरकतहियो, हरपतमुखमुसक्यात
मदछाकीतियकोजुपिय,छबिछकिपरसतगात
जहँअंगनकीछबिसरस,बरनतचलनचितौन।
ललित हाव ताको कहत,जे कवि कविता भौन

अथ ललित ।

कवित्त–साजिब्रजचन्द्रपैचलीयोंमुखचन्द्रजाको,
चन्द्रचांदनीको मुख मंद सो करत जात।
कहै पदमाकर त्यों सहज सुगंधहीके,
पुंज बन कुंजनमें कंजसे भरत जात ॥
धरत जहांई जहां पगहै पियारी तहां,
मंजुल मँजीठहीके माठसे ढरत जात।
बारनते हीरा श्वेत सारीकी किनारनते,
हारनते मुकुता हजारन झरत जात॥८६॥

दोहा ।

ाजि शृँगारसुकुमार तिय,कुटिलघुदृगनि दराज।
ख्वहुनाहआवतचली,तुमहिंमिलनतकि आज॥
सुनत भावतेकी कथा, भाव प्रगट जहां होत।
मोट्टायित तासों कहै, हाव कविनके गोत ९८॥

अथ मोट्टायित हावको उदाहरण—सवैया ।

रूप दुहूँको दुहूंनसुन्यो सुरहैं तबते मानों संग सदाही। ध्यानमें दोऊ दुहूँन लखैं हरषैं अँगअंग अनंग उछाहीं ॥ मोहि रहे सबके यों दुहूँ पदमाकर और कछू सुधि नाहीं । मोहनको मनमोहनीमें बस्यो मोहनीको मनमोहनमाहीं९९

दोहा ।

वशीकरन जबते सुन्यो, श्याम तिहारोनाम।
दृगनि मूँदि मोहितभई,पुलकि पसीजनिवाम
करै निरादर ईठको, निजगुमान गहि वाम।
कहत हावविब्बोक बहु,जेकविमतिअभिराम

अथ बिब्बोक हावको उदाहरण-सवैया ।

केसर रंग महावरसे सरसै रसरंग अनंग चमूके। धूम धमारनको पदमाकर छाय अकाश अबीरके मूके ॥ फाग यों लाडिलीकी तिहिमें तुम्हैं लाज न लागत गोप कहूंके । छैल भये छतियां छिरको फिरौ कामरी ओढे गुलालके ढूके ॥ ६२ ॥

दोहा ।

रहो देखि दृगदै कहा, तुहि न लाज कछु छूत।
मैं बेटी वृषभानुकी, तू अहीरको पूत ॥ ६३॥
लाज निवार सकै नहीं, पियहि मिलेहू नारि।
विहृत हाव तासोंसबै, कविजन कहत विचारि

अथ विहृत हावको उदाहरण—सवैया ।

सुन्दरिको मणिमंदिरमें लखि आये गोविन्द बनै बडभागे। आनन ओप सुधाकर सों पदमाकर जीवन ज्योतिके जागे ॥ औचक ऐंचत अंचलके

रुकी अँगअंग हियो अनुरागे । सैनके राजमें
ालि सकी न भटू ब्रजराजसों लाजके आगे ६९
हा-यह न बातआछीकछू,लहियौवनपरगास
लाजहिते चुप ह्वै रहति, जो तू पियके पास
तन मर्दति पियके तिया,दरशावत झुठरोष ।
याहि कुट्टमित कहत हैं, भाव सुकवि निर्दोष

अथ कुट्टमित वर्णन ।

कवित्त-अंचलके ऐंचे चल करती दृगंचलकी,
चंचलातै चंचल चलै न भजि द्वारेको ।
कहै पद्माकर परैसी चौंक चुम्बन में,
छलनि छपावै कुच कुंभनि किनारेको ।
छातीके छिपे पै परीरातीसीरिसायगल,-
बाँहीं किये करै नाहिं नाहिं पै उचारेको ।
हौंकरत शीतल तमासे तुंगती करत,
सीकरति रतिमें वशीकरति प्यारेको ६८

दोहा ।

कर ऐंचत आवत इँची, तिय आपहीपियओर ।
झूठिहुं रूसिरहै छिनक, छुवत छराको छोर ॥
दैजुडिठाई नाहसँग, प्रकटै विविध विलास ।
कहत ग्यारहें हाव सो, हेला नाम प्रकास ७०

अथ हेलाहाव वर्णन—सवैया ।

फागके भीर अभीरन त्यों गहि गोविंद लै गई भीतर गोरी । भाय करी मनकी पदमाकर ऊपर नाय अबीर कि झोरी ॥ छीन पितम्बर कंबरतैं सुबिदा दई मीड़ कपोलन रोरी । नयन नचाय कही मुसक्याय लला फिर आइयो खेलन होरी ॥ ७१ ॥

दोहा—हर विरंचिनारदनिगम, जाकोलहतनपार ।
ता हरिको गहि गोपिका, गरबिगुहावतबार
हानि क्रिया कछुतियपरूप, बोधनकरै जु भाव
रसग्रन्थनमें कहतहैं, तासों बोधकहाव ७३॥

अथ बोधकहाव वर्णन—सवैया।

दोऊ अटांन चढ़ै पदमाकर देखें दुहूंको
दुवो छविछाई। त्यों ब्रजबाल गोपाल तहां बन-
माल तमालहिकी दरशाई॥ चन्द्रमुखी चतुराई
करी तव ऐसी कछू अपने मन भाई। अंचल ऐंचे
उरोजनतैं नँदलालको मालतीमाल दिखाई ७४

दोहा-निरखिरहेनिधिबनतरफ, नागरनन्दकुमार
तोरि हीरको हार तिय,लगी बगारन बार ७५

इति श्रीकूर्मवंशावतंस-श्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्र-श्रीसवाई
महाराजजगतसिंहाज्ञया मथुरास्थाने मोहनलालभट्टा-
त्मजकविपद्माकरविरचितजगद्विनोदनामकाव्ये
अनुभावप्रकरणम्॥ ३॥

अथ संचारी भाव।

दोहा—थाई भावनको जिते;अभिमुख रहै सिताव
जे नवरससें संचरै, ते संचारी भाव ॥ १ ॥

थाई भावनमें रहत, याविधि प्रगट बिलात।
ज्यों तरंग दरियावमें,उठि उठि तितहिसमात
थिरह्वै थाई भाव तब, भिरि पूरण रस होत।
थिर न रहत रस ह्वपलों, चंचारिनको गोत
थाई संचारीन को, है इतनोई भेद ।
असंचारिनके कहत हैं, तेंतिस नाम निवेद४

कवित्त–कहिनिरवेदग्लानिशंकात्योंअसूयाश्रम,
मद धृति आलस विषाद मति मानिये।
चिन्ता मोह सुपन बिबोध स्मृतिअमरष,
गर्व उतसुक तासु अवहित्थ ठानिये ॥
दीनता हरष ब्रीडा उग्रता सु निद्राव्याधि,
मरण अपसमार आवेगहु आनिये ॥
त्रास उनमाद पुनि जड़ता चपलताई,
तेंतिसौ वितर्क नाम याही विधि जानिये

दोहा–याविधि संचारी सबै, वर्णत हैं कविलोग
जे ज्यहि रसमें संचरै, ते तहँ कहिबे योग६॥

डर उपजै कछु खेद लहि, विपति ईरषाज्ञान
ताहितें निज निदरिबो, सो निर्वेद बखान ७
अति उसाँसअरुदीनता, विवरणअश्रु निपात
निर्वेदहुते होतहै, वे सुभाव निजगात ॥८॥

अथ निर्वेद–सवैया।

यों मन लालची लालचमें लगि लोभ तरंगनमें अवगाह्यो। त्यों पदमाकर देहके गेहके नेहके काजन काहि सराह्यो॥ पाप किये पै न पातित पावन जानिकै रामको प्रेम निबाह्यो। चाह्यो भयो न कछू कबहूं यमराजहूंसो वृथा वैर विसाह्यो॥ ९॥

दोहा–भयो न कोऊ होइगो, मो समानमतिमन्द
तजे न अवलौं विषयविष, भजेनदशरथनन्द
भूखहिते कि पियासते, कै रति श्रमते अंग।
विह्वल होत गलानिसों, कम्पादिकस्वरभंग॥

अथ ग्लानिको उदाहरण—सवैय ।

आजु लखी मृगनैनी मनोहर बेणी छुटी छहरै छबि छाई। टूटे हरा हियरा पै परे पद्माकर लीकसी लंकलुनाई ॥ कै रतिकेलि सकेलि सुखै कलिकेलिके भौनते बाहिर आई। राजि रही रति आँखिनमें मनमें धौंक हातनमें शिथिलाई ॥ १२ ॥

दोहा—शिथिलगातकाँपतहियो,बोलतबनतनबैन
करी खरी विपरीति कहुँ, कहत रँगीले नैन ।
कै अपनी दुर्नीति कै, दुवन क्रूरता मानि ।
आवै उरमें शोच अति, सो शंका पहिंचानि

अथ शंका ।

कवित्त—मोहिंलखिसोवतबिथोरिगोसुबेनी बनी,
तोरिगो हियेको हार छोरिगो सु गैयाको
कहै पद्माकर त्यों घोरिगो घनेरो दुख,

बोरिगो बिसासी आज लाजहीकी नैयाको
अहित अनैसो ऐसो कौन उपहास है जु,
शोचत खरी मैं परी जोवत जुन्हैयाको ॥
बूझैंगे चवैया तब कैहौं कहा दैया इत,
पारिगो को सैया मेरी सेज पै कन्हैयाको १६

दोहा ।

लखै न कहुँ ब्रज गलिनमें, आवत जात कलंक।
निरखि चौथको चांद यह, शोचत सुमुखि सशंक।
सहि न सकै सुख औरको, यहै असूया जान ।
क्रोध गर्व दुख दुष्टता, ये स्वभाव अनुमान १७॥

अथ असूयाको उदाहरण ।

कवित्त—आवत उसाँसी दुखलगै और हांसी सुनि
दासी उरलाय कहो को नहिं दहा कियो।
कहै पदमाकर हमारे जान ऊधौ उन,
तात कौन मात कौन भ्रातको कहा कियो
कंकालिनि कूवरी कलंकिनि कुरूप तैसी,

चेटकनि चेरी ताके चित्तको चहा कियो।
राधिकाकी कहावत कहि दीजो मोहनसों,
रसिकशिरोमणि कहाय यौंकहा कियो१८

दोहा—जैसोको तैसो मिलै, तबहीं जुरत सनेह।
ज्यों त्रिभंग तनु श्यामको, कुटिल कूबरीदेह१९

धन यौवन रूपादितें, कै मदादिके पान।
प्रगट होत मदभाव तहँ, औरै गति बतरान २०

अथ मदको उदाहरण—सवैया।

पूषनिशामें सुवारुणी लै बनि बैठे दुहूँ मदके मतवाले। त्यों पद्माकर झूमें झुकै घन घूमि रचे रसरंग रसाले॥ शीतको जीत अभीत भये सुगनै न सखी कछु शाल दुशाले। छाक छका छबि-हीको पिये मद नैननके किये प्रेमके प्याले॥२१॥

दोहा।

धन मद यौवन मद महा, प्रभुताको मद पाय।
तापर मदको मद जिन्हैं, को त्यहि सकै सिखाय।

अति रति अति गतिते जहां,सुअनि स्वेद सरसाय
सो श्रम तहां सुभावये, स्वेद उसाँस मनाय २३॥

अथ श्रमको उदाहरण—सवैया।

कै रतिरंग थकी थिर ह्वै पर्यंकमें प्यारी परी
ख वायकै। त्यों पद्माकर स्वेदके बुन्द रहे
कुहलसे तन छायकै॥ बिन्दु रचे मेहँदीके लसे
र तापर यों रह्यो आनन आयकै। इन्दु मनो
अरविन्द पै राजत इन्द्रवधूनके वृन्द बिछायकै॥

दोहा।

श्रमजलकन पलकन प्रगट,पलकनथकत उसाँस।
करी खरी विपरीतरति,परी बिसासी पास २५॥
साहस ज्ञान सुसंगते, धरै धीरता चित्त॥
ताही सों धृति कहत हैं,सुकवि सबै नित नित्त२६॥

अथ धृतिको उदाहरण—सवैया।

े मन साहसि साहस राख सुसाहससों सब जेर
फिरैगो।ज्यों पद्माकर या सुखमें दुख त्यों दुखमें

सुख फेर फिरेंगे ॥ वैसहि बेणु बजावत श्याम सु नाम हमारोहु टेर फिरेंगे । एक दिना नहिं एक दिना कबहूं फिर वे दिन फेरि फिरेंगे ॥ २७ ॥

पुनर्यथा—सवैया ।

या जग जीवनको है यहै फल जो छल छाँडि भजै रघुराई । शोधिकै संत महंतनहूं पदमाकर बात यहै ठहराई ॥ ह्वैरहे होनी प्रयास विना अनहोनी न ह्वै सकै कोटि उपाई । जो विधि भालमें लीक लिखी सो बढाई बढै न घटै न घटाई ॥ २८ ॥

दोहा ।

बनचरबनचरगगनचर, अजगरनगर निकाय
पदमाकर तिन सबनकी, खबरलेतरघुराय२९
जागरणादिकतेजहां, जो उपजत अलसानि ।
ताहीसों आलस कहत, कवि कोविद जेआनि

अथ आलसको उदाहरण ।

कवित्त–गोकुलमें गोपिन गोविंदसंग खेलीफाग,
रातिभरी आलससें ऐसी छबि छलकैं ।
देह भरी आलस कपोल रस रोरी भरे,
नींद भरे नयन कछूक झपैं झलकैं ॥
लाली भरे अधर वहाली भरे मुखवर,
कवि पद्माकर विलोकै कौन सलकैं ।
भाग भरे लाल और सुहाग भरे सबअंग,
पीक भरी पलक अबीर भरी अलकैं२१॥

दोहा–निशि जागी लागी हिये,प्रीति उमंगत प्रात
उठिनसकतआलसवलित,सहज सलोने गात
फुरै न कछु उद्योग जहँ, उपजै अतिही शोच॥
ताहिविषादवखानहीं,जेकविसदाअपोच२२।

अथ विषाद वर्णन ।

कवित्त–शोच न हमारे कछू त्याग मनमोहनके,
तनको न शोच जोपै योंहीं जरिजाइ है ।

कहै पदमाकर न शोच अब एहू यह,
आईहै तौ आनिहै न आइ है न आइहै॥
योगको न शोचऔरभोगको न शोचकछु
यही बडो शोच सो तो सबनि सुहाइ है।
कूबरीके कूबरमें बंध्यो है त्रिभंगता,
त्रिभंगको त्रिभंगी लागे कैसे सुरझाइहै३४

पुनर्यथा ।

कवित्त–एकैसंग हाल नन्दलाल औगुलालदोउ,
दृगनि गये जु भरि आनँद मढैं नहीं।
धाय धाय हारी पदमाकर तिहारी सौंह,
अब तो उपाय एक चित्तमें चढै नहीं ॥
कैसी करों कहां जाऊँ कासोंकहौं कौनसुनै,
कोऊ तो निकासो जासे दरद बढै नहीं।
येरी मेरी वीर जैसे तैसे इन आँखिन ते,
कढिगो अबीर पै अहीरको कढै नहीं ३५

दोहा ।

अब न धीर धारत बनत, सुरत बिसारी कन्त ॥
पिक पापी पीकन लगे, बगरेउ बाग बसन्त ३६॥
नीति निगम आगमनते, उपजै भलो विचार ॥
ताहीसों मति कहत हैं; सब ग्रन्थनको सार ॥३७॥

अथ मतिको उदाहरण—सवैया ।

बादही बाप बदीके बकै मति बोरदे बंज बिषय बिषहीको। मानिलै या पदमाकरकी कहि जो हित चाहत आपने जीको॥ शंभुकेजीवको जीवनमूरि सदा सुखदायक है सबहीको। रामहीराम कहै रसना कस ना तू भजे रसनाम सहीको ॥३८॥

दोहा ।

पाछे पर न कुसंगके, पदमाकर यहिं डीठ ॥
परधन खात कुपेट ज्यों, पिटत बिचारी पीठ ३९
जहां कौनहूँ बातकी, चितमें चिन्ता होय ॥
चिंता तासों कहत हैं, कविकोविद सब कोय ४०

अथ चिंताको उदाहरण ।

कवित्त—झिलत झकोर रहै यौवनको जोर रहै,
समद मरोर रहै शोर रहै तवसों ।
कहै पद्माकर तकैयनके मेह रहै,
नेह रहै नैनन न मेह रहै द्वसों ॥
बाजत सुबैन रहै उनमद मैन रहै,
चितमें न चैन रहै चातकीके रवसों ।
गेहमें न नाथ रहै द्वारे ब्रजनाथ रहै,
कबौलोंमनहाथ रहै साथ रहै सबसों ४१ ॥

दोहा ।

कोमल कंज मृणालपै, किये कलानिधि बास ।
कबको ध्यान रह्यो जु धरि, मित्र मिलनकी आस ।
आपुहि अपनी देहको, ज्ञान जबै नहिं होय ।
विरह दुःख चिंताजनित, मोह कहावत सोय ॥

अथ मोहको उदाहरण—सवैया ।

दोउनको सुधि है न कछू बुधि वाही बला-

में बूडि बही है। त्यों पदमाकर दीजै सिलाय
त्यों चंग चवायनको उसही है॥ आजुहिकी वा
देखादिखमें दशा दोउनकी नहिं जातकही है।
मोहन मोहि रह्यो कबको कबकी वह मोहनी
मोहि रही है॥ ४४ ॥

दोहा।

झटपटाति तसबी हंसी, दीह दृगन में मेह।
सुब्रजबाल मोही परत, निर्मोही को नेह॥४५॥
सपन स्वप्नको देखिबो, जगिबो वोहै बिबोध।
सिरन बीती बातको, सुस्मृति भाव सब शोध ४६

अथ स्वप्नको उदाहरण—सवैया।

कांपि रहै छिन सोवतहूँ कछु भापिवो सो
अनुसारि रही है। त्यों पदमाकर रंच रुमंचनि
स्वेदके बुन्दनि धारि रही है॥ वेप दिखादिखि
व सुखमें तनकी तनको न सम्हार रही है।जानति
हौं सखि सापनेमें नंदलालको नारि निहारि रहीहै

दोहा ।

क्योंकरि झूठी मानिये, सखि सपने की बात ।
जु हरि हरयो सोवत हियो, सो न पाइयत प्रात ४८

अथ विबोधको उदाहरण ।

कवित्त–अधखुली कंचुकी उरोजअध आधे खुले,
अधखुले वेष नखरेखनके झलकैं ।
कहै पदमाकर नवीन अध नीबी खुली,
अधखुले छहरि छराके छोर छलकैं ॥
भोर जगि प्यारी अध ऊरध इतैकी ओर,
भाषी झिखि झिरकि उघारि अध पलकैं ।
आँखैं अधखुलीअधखुलीखिरकीहैं खुली,
अधखुली आनन पै अधखुली अलकैं ४९

दोहा ।

अनुरागी लागी हिये, जागी बडेप्रभात ।
ललित नैन बेनी छुटी, छातीपर छहरात ५०

अथ स्मृतिको उदाहरण—सवैया।

कंचन आभा कदम्बतरे कारि कोऊ गई तिय तीजतियारी। हौंहूं गई पद्माकर त्यों चलि औचक आइगो कुंजविहारी॥ हेरि हिंडोरे चढाय लियो कियो कौतुक सो न कह्यो परै भारी। फूलन वारी पियारी निकुंजकी झूलनहै नव झूलनवारी॥ ८१॥

दोहा—करी जुही तुम वादिना, वाके सँग बतरान।
वहै सुमिरि फिरिफिरितिया राखतिअपनेप्रान ८२
जहां जु असरष होत लखि, दूजे को अभिमान।
अमरष तासों कहत हैं, जे कवि सदा सुजान ८३

अथ अमरष वर्णन।

कवित्त—जैसो तै न मोसों कहूं नेकहूं डरात हुतो,
ऐसो अब होंहूं तोहूं नेकहूं न डारिहौं।
कहै पद्माकर प्रचंड जो परैगो तो,

उमंड करि तोसों भुजदंड ठोंकि लरिहौं॥
चलो चलु चलो चलु विचलन बीचहीते,
कीच बीच नीच तो कुटुंबको कचरिहौं।
येरे दगादार मेरे पातक अपार तोहिं,
गंगाके कछारमें पछारि छार करिहौं ९४

दोहा–गरब सु अंजनहीं विना, कंजनको हरिलेत।
खंजन मदभंजन अरथ, अंजन अँखियन देत ॥
बल विद्या रूपादिको, कीजै जहां गुमान।
गर्व कहत सब ताहिसों, जे कवि सुमतिसुजान॥

अथ गर्वको वर्णन ।

कवित्त–बानीके गुमानकलकोकिलकहानीकहा,
बानीकी सुबानी जाहि आवत भनै नहीं।
कहै पदमाकर गोराईके गुमान कुच,
कुंभनपै केसरिकी कंचुकी ठनैं नहीं ॥
रूपके गुमान तिल उत्तमा न आनै उर,

आननिकाइ पाई चन्द्रकीरनैं नहीं।
मृदुती गुमानमय तूलहू न मान कछु,
गुणके गुमान गुण गौरिको गनै नहीं५७॥

दोहा।

लपर गालिब कमलहै, कमलन पै सुगुलाब॥
ालिब गहब गुलाब पै, सोतन सुरभि सुभाव ५८
नहां हितूके मिलन हित, चाह रहति हियमाहिं॥
उतसुकता तासों कहत, सब ग्रन्थनमें चाहिं५९॥

अथ उत्सुकता वर्णन।

कवित्त–ताकिये तितै तितै कुसुम्भ सींचु बोई परै,
प्यारी परवीन पाउँ धरति जितै जितै।
कहैपद्माकरसुपौनतेउ,तालीवनमालीपै,
चली यों बाल बासर बितै बितै॥
मारहीके डारन उतारि देत आभरन,
हीरनके हारदेत हिलिन हितै हितै।

चांदनी के चौसर चहूँघा चौक चांदनीमें,
चांदनीसी आई चंद चांदनीचितै चितै ६०

दोहा ।

सजे विभूषण वसन सब, सुपिय मिलनकी हौस ।
सह्यो परति नहिं कैसहूँ, रह्यो अधघरी द्यौस ॥
जो जहँ करि कछु चातुरी, दशा दुरावै आय ।
ताहीसों अवहित्थु यह, भाव कहत कविराय ॥

अथ अवहित्थुको वर्णन—सवैया ।

जोर जगी यमुना जलधारमें धाय धसी जल केलिकी माती । त्यों पद्माकर पैगचलैं उछलै जब तुंग तरंग विघाती॥ टूटे हरा छरा छूटे सबै सरबोर भई अँगिया रँगराती । को कहतो यह मेरी दशा गहतो न गोविंद तो मैं बहिजाती ॥

दोहा—निरखतही हरि हरषके, रहे सु आंसू छाय ।
बूझत अलि केवल कह्यो, गयो धूमही धाय ६१ ॥

अति दुखते विरहादिते,परति जबहिं जो दीन।
ताहि दीनता कहतहैं, जे कवित्त रसलीन॥६५॥

अथ दीनताको उदाहरण—सवैया।

कै गिनतीसी इती विनती दिन तीनकलौं
हुवार सुनाई। त्यों पद्माकर मोह मया करि
ाहि दया न दुखीनकी आई॥ मेरो हराहरहार
यो अब ताहि उतारि उन्हैं न दिखाई। ल्याई
न तू कबहूं बनमाल गोपालकी वा पहिरी
पहिराई ॥ ६६ ॥

दोहा—मुख मलीन तन छीनछबि,परीसेजपरदीन।
...क्यों न सुधि साँवरे, नेहो निपट नवीन६७॥
जहां कौनहूं बताते, उर उपजत आनन्द।
प्रकटैं पुलक प्रस्वेदते, कहत हरष कविवृन्द६८॥

अथ हर्षको उदाहरण—सवैया।

जगजीवनको पलजानि परयो धनि नैननि-
...को टहरैयतुहै। पद्माकर त्यों हुलसैं पुलकैं तनु

सिंधुसुधाके अन्हैयतुहै॥ मन पैरत सो रसके नद- में अति आनँदमें मिलिजैयतुहै । अव ऊंचे उरोज लखै तियके सुरराजके राजसों पैयतुहै६९

दोहा ।

तुमहिं विलोकिविलोकिये, हुलसि रह्योयों गात।
आँगी में न समात उरउरमें मृदु न समात॥७०॥
जहां कौनहूं हेतते, उरउपजत अति लाज।
ब्रीडा तासों कहतहैं, सुकविनके शिरताज ७१॥

अथ ब्रीडाको उदाहरण—सवैया ।

कालिह परी फिर साजवि स्यानसु आजु तौ नैनसों नैन मिलालै । त्यों पदमाकर प्रीतिप्र- तीतिमें नीतिकी रीति महा उर शालै ॥ ये दिन यौवन जातो इतै तन लाज इती तु करैगी कहां लै । नेक तै देखन दे मुखचन्द्रसों चन्द्रमुखी मति घंघट घालै ॥ ७२ ॥

दोहा–प्रथमसमागमकीकथा, बूझीसखिनजुआय
मुख नवाय सकुचाय तिय, रही सुघूँघुटनाय
निरदैपनसों उग्रता, कहत सुमति सबकोय।
शयन कहावत सोइबो, वहै सु निद्रा होय॥

अथ उग्रताको उदाहरण।

कवित्त–सिंधुके सुपूतसुत सिंधुतनयाके बंधु,
मंदिर अमंद शुभ सुंदर सुधाई के।
कहै पदमाकर गिरीशके बसे हौ शीश,
तारनके ईश कुल कारण कन्हाई के॥
हालही के विरह विचारी ब्रजबालहीपै
ज्वालसेजगावतजुआलसीलुन्हाईके।
ऐरे मतिमन्द चन्द आवतनतोहिलाज
ह्वैके द्विजराज काज करत कसाईके ७८॥

दोहा-कहाकहौंसखिकाहिको, हियनिरदैपनआज
नहु जारत पारतविपति, अपतिइजारनलाज।

अथ निद्राको उदाहरण ।

कवित्त—चहचही चुभके चभीहै चोंक चुंबनकी,
लहलही लांबी लटै लपटी सु लंकपर ।
कहै पद्माकर मजानि मरगजी मंजु,
ससकी सु आंगी है उरोजनके अंकपर ॥
सोई रससार पोस गन्धनि समोई स्वेद,
शीतल सुलोने लोने वदन मयंकपर ॥
किन्नरी नरी है कै छरी है छबिदार परी,
टूटीसी परी है कै परी है परयंक पर ७७

दोहा—नँदनंदननवनागरी,लखि सोचत निर्मूल।
उरउघरे उरजन निरखि,रह्यो सुआननफूल॥
विरह विवश कामादिते, तनु संतापितहोय।
ताहीसों सब कविकहत,व्याधि कहावतसोय

अथ व्याधिको उदाहरण ।

कवित्त—दूरहितेदेखत व्यथा मैं वा वियोगिनिकी,
आईभलेभाजिह्यां तो लाज मढ़िआवैगी।

कहै पद्माकर सुनो हो घनश्याम जाहि,
चेतत कहूं जो एक आहि कढ़ि आवैगी ॥
सर सरितानको न सूखत लगैगी देर,
येती कछू जुलसिन ज्वाला बढ़ि आवैगी।
ताते तन तापकी कहौं मैं कहा बात मेरे,
गातही छुवो तौ तुम्हैं ताप चढ़ि आवैगी॥

दो०-कवकीअजबअजार में, परी बाम तनछाम
नित कोऊमतलीजियो, चन्द्रोदयकोनाम ८१
प्राण त्यागिकहियेमरन, सो न वरणिबे योग।
वर्णतशूरसतीनको, सुयशहेत कविलोग।८२॥

अथ मरणको उदाहरण—सवैया ।

जानकिको सुनि आरत नाद सु जानि दशा-
ननकी छलहाई । त्यों पद्माकर नीच निशाचर
आइ अकाशमें आड़्यो तहांई॥रावणऐसे महारि-
पुसों अति युद्ध कियो अपने बलताई । सोहित
श्रीरघुराजके काजपै जीव तजै तौ जटायुकीनाई।

पुनर्यथा ।

कवित्त–पाली पैजपनकी प्रवेश कारि पावकसों,
पौनसे सिताब सह गौनका गमीभई ।
कहै पद्माकर पताका प्रेम पूरणकी,
प्रकट पतिव्रतकी सौगुनी रती भई ।
भूमिहू अकाशहू पतालहू सराहै सब,
जाको यश गावत पवित्रभी सतीभई ।
सुनत पयान श्रीप्रतापको पुरन्दरपै,
धन्य पटरानी जोधपुरमें सती भई॥८४॥

दोहा ।

हने रामदशशीशके, दशौ शीश भुज बीस ।
लै जटायुकी नजरि जनु,उडे गीधनवतीस ॥
सह दुःखादिकते जहां, होत कम्प भूपात ।
अपस्मार सो फेन मुख, श्वासादिकसरसात।

अथ अपस्मारका उदाहरण—सवैया ।

जा छिनते छिन सांवरे रावरे लागे कटाक्ष कछू अनियारे। त्यों पदमाकर ता छिनते तियसों अँगअंग न जात सम्हारे॥ ह्वै हिय हायल घायल-सी घन घूमि गिरी परै प्रेम तिहारे। नैन गये फिर फेन बहै सुख चैन रह्यो नहिं सैनके मारे ॥८७॥

दोहा-लखि विहाल एकै कहत, भई कहूं भयभीत
यकै कहत सिरगी लगी, लगी न जानत प्रीत
अति डरते अतिनेह ते, जु उठि चालियतु वेग
ताही सों सब कहत हैं, संचारी आवेग८९॥

अथ आवेग वर्णन ।

कवित्त—आई संग अलिन के ननँद पठाई नीठ,
सोहत सोहाई सो सुहई डरी सुपट की।
कहै पदमाकर गँभीर यमुनाके तीर,
लागी घट भरन नवेली नेह अटकी ॥

ताहि समय मोहन सुबाँसुरीबजाईतामें,
मधुर मलार गाई ओर वंशीवट की ।
तान लगे लटकी रही न सुधि घूँघुटकी,
घटकी न अवघट वाटकी न वटकी ९०

दोहा ।

सुनिआहटपियपगनिको,रभरि भजीयोंनारि
कहुं केकव कहुंकिंकिणी,कहूं सुनूपुर डारि ॥
जहां कौनहूं अहितते, उपजत कछु भयआय
ताहीको नितत्रास कहि,वर्णतहैं कविराय ९२

अथ त्रासको उदाहरण–सवैया ।

ये ब्रजचन्द गोविन्द गोपाल सुन्यों नक्यो
केते कलाम किये मैंत्यों पद्माकर आनँदकेनँद
हो नँदनन्दन जानिलिये मैं ॥ माखन चोरीके
खोरिन ह्वै चले भाजि कछू भय मानि जियेमें ।
दूरिहूं दौरि दुरयो जो चहो तौ दुरौ किन मेरे
अँधेरे हिये मैं ॥ ९३ ॥

दोहा ।

शिशिरशीतभयभीतकछु, सुपरि प्रीतिकेपाय।
आपहिते तजि मान तिय, मिली प्रीतिमेंजाय

अविचारित आचरन जो, सोउन्माद बखान
व्यर्थ वचन रोदन हँसी, ये स्वभाव तहँजान

अथ उन्मादको उदाहरण—सवैया ।

आपहिं आपपै रूपि रही कबहूँ पुनि आपहिं आप मनावै । त्यों पदमाकर ताके तमालनि भेटिबेको कबहूं उठि धावै ॥ जो हरि रावरो भेष लिखै तौ कहूं कबहूं हँसि हेरि बुलावै । व्याकुल बाल सु आलिनसों कह्यो चाहै कछू तौ कछू कहि आवै ॥ १६ ॥

दोहा ।

छिनरोवति छिनहँसिउठति, छिनबोलति छिनमौन
छिन छिन पर छीनी परति, भई दशा धौं कौन

गमन ज्ञान आचरणको, रहै न जहँ सामर्थ्य ॥
तिन अनहित देखै सुनै, जड़ताकहत समर्थ १८

अथ जडताको उदाहरण ।

कवित्त—आज बरसानेकी नवेली अलबेलीवधू,
मोहन विलोकिवेको लाज काज लैरही ।
छज्जा छज्जाझांकती झरोखनिझरोखनिह्वै,
चित्रसारी चित्रसारी चन्द्र सम ह्वैरही ॥
कहै पद्माकर त्यों निकस्योगोविंदताहि,
जहां तहां इकटक ताकि धरी ह्वैरही ।
छज्जावारीछकीसी उझकीसीझरोखावारी
चित्र कैसीलिखीचित्रसारीवारीह्वैरही११

दोहा—हलै डुलै न चलै डुलै,डुलै न बिसारिगे गेह ।
इकटकडुहुंनिडुहूं लखैं, अटकि अटपटनेह ॥
जहँ अति अनुरागादि ते,थिरता कछू रहैन ।
तितचितचाहैआचरण,वहै चपलताऐन॥ १॥

अथ चपलताको उदाहरण—सवैया ।

कौतुक एक लख्यो हरि ह्यां पद्माकर यों तुम्हैं जाहिरकी मैं ।कोऊ बडे घरकी ठकुराइनि ठाढी नघात रहैं छिनकी मैं ॥ झांकतिहै कबहूँ

झँझरीन झरोखनि त्यों सिरकी सिरकीमैं । झांकतिही खिरकीमें फिरै थिरकी थिरकी खिरकी खिरकीमैं॥२॥　　दोहा ।

चकरीलौंसँकरीगलिन, छिनआवतछिनजात।
परी प्रेमके फन्दमें, बधू बितावत रात ॥ ३ ॥
उर उपजत सन्देह जहँ, कीजे कछू विचार ।
ताहिवितर्कविचारहीं, जेकविसुमतिउदार॥४॥

अथ वितर्कको उदाहरण ।

कवित्त–चौसगुण गौरिकेसु गिरिजागोसाँइनको,
आवत यहांही अति आनंद इतै रहै ॥
कहै पदमाकर प्रतापसिंह महाराज,
देखो देखिवेको दिव्य देवता तितै रहै हैं॥
शैल तजि वैल तजि फैल तजि गैलनमें,
हेरत उमा को यों उमापति हितै रहैं ।
गौरिनमें कौन धौं हमारी गुणगौरि एहैं,
शंभु परी चारकलौं चकृत चितै रहैं ॥५॥

पुनर्यथा ।

कवित्त–वेऊ आये द्वारेही हूँ हुती अगवारे और,
द्वारे अगवारे कोऊ तौन तिहि कालमें ।
कहै पदमाकर वे हरपि निरखि रहैं,
त्योंही रही हरपि निरखि नँदलाल में ॥
मोहिंतोनजान्योगयोमेरीआलीमेरो मन,
मोहनके जाइधौं परचो है कौन ख्यालमें।
भूल्यो भौंह भालमें चुभ्योकै टढीचालमें ।
छक्योकैछबिजालमेंकैबींध्योवनमालमें॥

दोहा ।

किधौं सुअधपक आममें, मानहुँ मिलो मलिन्द।
किधौं तनक ह्वै तमरह्यो, कै ठोढी को बिन्द १०७

इति श्रीकूर्मवंशावतंसश्रीमहाराजाधिराजराजेन्द्रश्रीसवाई
महाराजजगत्सिंहाज्ञया कविपद्माकरविरचितजग-
द्विनोदनामकाव्ये संचारीभावप्रकरणम् ॥ ४ ॥

अथ स्थायीभाव–दोहा ।

रस अनुकूल विचार जो, उर उपजत है आय ।
स्थायी भाव बखानहीं, तिनहीको कविराय १
जे सब भावन सें सिरे, टरत न कोटि उपाव ।
जे परिपूरण होत रस, तेई थेई भाव ॥ २ ॥
रतिइकहास जुशोकपुनि, बहुरिक्रोध उत्साह ।
भयगलानिआचरजनिर, वेदकहतकविनाह ३
नवरसके नौई इतै, थायीभाव प्रमाण ।
तिनकेलक्षणलक्ष्यसब, याविधि कहत सुजान
सुप्रिय चाहते होत जो, सुमन अपूरव प्रीति ।
ताहीसों रति कहतहैं, रसग्रंथनकी रीति ॥ ४॥

अथ रतिको उदाहरण ।

निज–सजनलगी है कहूं कबहूं शृंगारनको,
तजन लगी है कहूं ये सब सबारी की ॥
चखन लगी है कहु चाह पदमाकर त्यों,
लखन लगी है मंजुमूरति मुरारी की ॥
सुन्दर गोविन्द गुण गनन लगी है कहु,

सुनन लगी है बात बांकुरे बिहारीकी ।
पगन लगी है लगी लगन हियेसों नेकु,
लगन लगी है कछु पीकी प्राणप्यारीकी६

दोहा—कान्हतिहारेसानको, अति आतप यह पाय
तियउर अंकुरप्रेमको, जाइ न कहुँकुम्हिलाय७
वचन रूपकी रचन ते, कछुउर लहत विकास
ताते परमित जो हँसनि, वहै कहीयतु हास ॥८

अथ हासको वर्णन । पुनर्यथा—सवैया ।

चन्द्रकला चुनि चूनरि चारु दई पहिराय सुनाय सुहोरी । वेंदी विशाखा रची पदमाकर अंजन आँजि समाजिके रोरी ॥ लागी जबै ललिता पहिरावन कान्हकी कंचुकी केसर बोरी। हेरि हरे मुसकाइ रही अँचरामुख दै वृषभानु किशोरी ॥९॥

दोहा ।

विवश न ब्रज वनितानके, सखि मोहन मृदुकाय।
चीर चोरि सुकदम्ब पै, कछुकरहे मुसक्याय१०॥

अहित लाभ हित हानि ते, कछु जु हिये दुखहोत।
शोक सुथायी भावहै, कहत कविनको गोत ११॥

अथ शोकको उदाहरण–सवैया ।

मोहिं न शोच इतौ तन प्राणको जाय रहै किल है लघुताई। येहु न शोच घनो पद्माकर साहिबी जोपै सुकण्ठही पाई॥शोच इहै इक बाल वधू बिन देहिंगो अंगदको युवराई । यों वच वालिवधूके सुने करुणाकरको करुणा कछु आई ॥ १२ ॥
वाम कामकी रुखसमकी, भस्म लगावत अंग ।
त्रिनयनके नैननि जरूयो, कछु करुणाको रंग १२
दोहा--रिपुकृतअपमानादिते,परमितचित्तविकार
जुप्रतिकूल हियहर्षको, वहै क्रोध निरधार १४

अथ क्रोधको उदाहरण ।

कवित्त–कहत बिहद्द नृप रामदल दलसों,
ऐसो एकहौंही दुष्ट दानव दलनहौं।
कहै पद्माकर कहै तो चहुँचक्रनको,

चीर डारौं पलमें पलैया पैजपनहौं ॥
दशरथ लालहै कराल कछु लालपारि,
भाषत भयोई नेकु रावणै न गनहौं ।
रीतो करौं लंकगढ इन्द्रहि अभीतो करौं,
जीतो इन्द्रजीतो आजतोमैं लक्ष्मनहौं १८

दोहा–फारौं बक्षन अक्षको,–जौ लगि मैं हनुमान।
तौलौंपलकन लाइहौं,कछुकअरुणअँखियान १६

लखिउद्भटप्रतिभट जु कछु,जगजागतचितचाव
सहरष सो नर बीरको, उतसाहस थिर भाव १७

अथ उत्साहको उदाहरण ।

कवित्त–इत कपि रीछ उत राक्षसनहींकी चमू,
डंका देत बंका गढलंकाते कढैलगी ।
कहै पद्माकर उमण्ड जगहीके हित,
चित्तमें कछूक चोप चावकी चढै लगी॥
बातनके वाहियेको करमें कमान कसि,
धाई धूरधान आसमान में मढै लगी ।

देखते बनी है दुहूँ दलकी चढाचढी में,
रामहगहू पै नेक लाली जो चढै लगी १८

दोहा-मेघनादको लखि लषण, हरषे धनुष चढाय
दुखित विभीषण दवि रह्यो, कछु फूले रघुराय ॥
विकृत भयंकरके डरन, जो कछु चित अकुलात
सो भयथायी भाव है, कछु सशंक जहँ गात २० ॥

अथ भयको उदाहरण ।

कवित्त-चितै चितै चारों ओर चौंकि चौंकि परै त्योंही
जहाँ तहाँ जब तब खटकत पात है ।
भाजन सो चाहत गँवार ग्वालिनी कि कछू
डरन डरनि में उठाने रोम गात हैं ॥
कहै पद्माकर सु देखि दशा [illegible],
शेषहु सहेशहु सुरेशहु [illegible] हैं ॥
एकपाय भीत एक [illegible] कांधिये एक,
एकहाथ छींको एकहाथ [illegible] है ॥

दोहा-तीन पैर पहुमी हुई, [illegible]
बहु [illegible] ॥

जहँघिनायचितचीजलखि,सुमिरिपरसमनमाँह
उपजतजोकछुघिनयहै; ग्लानिकहतकविनाँह॥
(याही को नाम जुगुप्सा जानिये ॥)

अथ ग्लानिको उदाहरण ।

कवित्त—आवतगलानिजोबखानकरोज्यादायह,
मादा महमलमूत मज्जकी सलीती है ॥
कहै पद्माकर जरातो जागि भीजी तब,
छीजी दिन रैन जैसे रैनहींकी भीती है॥
सीतापति रामके सनेह वश बीती जुपै,
तौ तौ दिव्य देह यमयातनाते जीती है,
रीती रामनामते रही जो बिनकाम तौ ।
याखारिजखराबहाल खालकी खलीतीहै

दोहा ।

लखिविरूप शूरपनखै, सरुधिरचर चुचुवात।
सिय हियमें घिनकीलता, भई सुदेहै पात२९
दरशपरशसुनिसुमिरिजहँ,कानहुँअजबचारित्र

होइजुचितविस्मितकछू, सोआचरजपवित्र२६
(याहीको विस्मयथायीभाव जानिये ॥)

अथ अचरजको उदाहरण—सवैया ।

देखत क्यों न अपूरब इन्दुमें द्वै अरविन्द रहे गहि लाली । त्यों पदमाकर कीर वधू इक मोती चुगै सनो मै मतवाली॥ ऊपरते तम छाय रह्यो रविकी दवते न दवै खुलि ख्याली । यों सुनि वैन सखीके विचित्र भये चित चकितसे वनमाली ॥ २७ ॥

दोहा ।

नलकृतपुललखि सिन्धुमें, भयेचकितसुरराव
रामपाद नमतेसबहिं, सुमिरिअगस्त्यप्रभाव
निफल श्रमादिकतेजुकछु, उरउपजतपछिताव
संगति रहित निर्वेदसो, याको थिरभाव

अथ निर्वेदको उदाहरण—सवैया ।

है थिर मन्दिरमें न रह्यो गिरिकन्दरमें न

तप्यो तप जाई।राज रिझायें न कै कविता रघु-राज कथा न यथामति गाई॥ यों पछितात कछू पदमाकर कासों कहौं निजमूरखताई। स्वारथहूं न कियो परमारथ योंहिं अकारथ वैस बिताई॥

पुनर्यथा—सवैया ।

भोगमें रोग वियोग सँयोगमें योगमें काय कलेश कमायो। त्यों पदमाकर वेद पुराण पढ्यो पढ़िकै बहु बाद वढायो ॥ दौरयो दुरासमें दास भयो पै कहूं विशरामको धाम न पायो ।खायो गमायो सु ऐसेहि जीवन हाय मैं रामको नाम न गायो ॥ ३१ ॥

दोहा—पदमाकरकछुनिजकथा,कासोंकहोंबखान
जाहि लखों ताहै परी, अपनी अपनी आन

इति श्रीमोहनलालभट्टात्मजकविपदमाकरविरचितजगद्विनोद नामकाव्ये स्थायीभावप्रकरणम् ॥ ९ ॥

अथ रसनिरूपण वर्णन–दोहा ।

मिलिविभावअनुभावपुनि,संचारिनकेबृन्द ।
परिपूरण थिर भाव यों, सुर स्वरूपआनन्द
ज्यों पयपाय विकार कछु, ह्वैदधिहोत अनूप
तैसेही थिर भावको,वर्णत कवि रसरूप २
सो रसहै नव भाँतिको, प्रथम कहत शृंगार ।
हास्यकरुण पुनि रौद्र गनि,वीरसुचारिप्रकार
बहुरिभयानक जानिये,पुनि वीभत्सबखानि
अद्भुत अष्टम नवम पुनि,सांतसुरससदआनि

अथ शृंगाररस वर्णन ।

दोहा–जाको थायीभाव रति, सो शृंगार सुहोत।
मिलिविभावअनुभावपुनि,संचारिनिके गोत
रतिकहियतुजोमनलगनि,प्रीतिअपरपरजाय
थायीभावशृंगारके, सब भाषत कविराय ॥
परिपूरण थिरभाव रति, सो शृंगाररस जान
रसिकनको प्यारोसदा,कविजनकियोबखान
आलम्बन शृंगारके, तियनायक निज

उद्दीपन सब सखि सखा, वनबागादि विहार
हावभावमुसकयानिमृदु, हसिऔरहु जु विनोद
है अनुभाव शृंगार नव, कविजन कहतप्रमोद
उन्मादिक सँचरत तहाँ, संचारी है भाव ।
कृष्ण देवता श्याम रँग, सो शृंगार रसराव
सो शृंगार द्वैभांतिको, दम्पति मिलन सँयोग
अटक जहाँ कछु मिलनकी, सोशृंगारवियोग

संयोग शृंगारको वर्णन—पुनर्यथा ।

छप्पय-कलकुण्डल दुहुँ डुलत खुलत अलकावलि विपुलित । स्वेद सीकरन मुदित तनक तिलकावलि सुललित ॥ सुरत मध्य सतिलसत हरष हुलसत चव चंचल । कविपद्माकर छकित झपित झपि रहत दृगंचल॥ इमि नित विपरीति सुरतिसमै अस तियसुख साधक जु सब । हरि हर विरंचि पुर उरगपुर सुरपुरलै कह आज अब॥

दोहा ।

तियपियकेपियतीयके, नखशिख साजिशृँगार

कारे बदलौ तन सनहुको, दम्पतिकरतविहार
जहँ वियोगपियतीयको, दुखदायकअतिहोत
विप्रलंभ शृंगार सो, कहत कविनकोगोत १४

वियोग शृंगारको वर्णन । पुनर्यथा—सवैया ।

शुभ शीतल मंद सुगन्ध समीर कछू छल
छन्दहु छ्वैगयेहैं। पदमाकर चांदनी चंदहुके कछू
औरहि डौरन च्वैगयेहैं ॥ मनमोहन सों बिछुरे
इतही बनिकै न अबै दिन द्वै गयेहैं । सखि वे हम
वे तुम वेई बनेपै कछूके कछू मन ह्वैगयेहैं॥१५॥

पुनर्यथा—सवैया ।

धीर समीरसुतीरते तीछन ईछन कैसहु ना सह-
तीसी। त्यों पदमाकर चांदनी चन्द चितै चहुँ ओरन
चौंकती जीसी ॥ छाय बिछाय पुरैनके पातन
लेटती चन्दन की चौकीसी । नीर कहा बिरहा
करतो सखि होती कहूँ जोपै मीचु मुठीसी॥१६॥

पुनर्यथा—सवैया ।

ऐसी न देखी सुनी सजनी घनि बादन जान

वियोगकी बाधा। त्यों पदमाकर मोहनको तबते कल है न कहूँ पल आधा। लाल गुलाल घलाघलमें दृग ठोंकर दैगई रूप अगाधा॥कैगई कै गई चेटकसी मन लैगई लैगई लैगई राधा॥१७॥

दोहा ।

अटकि रहेकिन काम रत,नागर नन्दकिशोर।
करहुँकहा पीकनलगे,पिकपापी चहुँओर १८
त्रिविध वियोग शृंगार यह,इक पूरबअनुराग
वर्णतमानप्रवासपुनि,निरखिनेहकी लाग १९
होत मिलनते प्रथमहीं,व्याकुलताउर आनि।
सो पूरब अनुरागहै,वर्णत कविरसखानि २०

पूर्वानुरागको उदाहरण—पुनर्यथा ।

कवित्त—जैसीछबिश्यामकी पगीहैतेरीआँखिनमें,
ऐसी छबि तेरी श्याम आँखिन पगी रहै।
कहै पदमाकर ज्यों तानमें पगीहै त्योंही,
तेरी मुसकानि कान्ह प्राणमें पगी रहै॥

धीर धर धीर धर कीरति किशोरी भई,
लगन इतै उतै बराबर जगीरहै ।
जैसी रट तोहिं लागी माधवकी राधे ऐसी,
राधे राधे राधे रट माधव लगी रहै २१॥

पुनर्यथा ।

कवित्त–मोहिं तजि मोहने मिल्योहै मनमेरी दौरि,
नयनहु मिलेहैं देखि देखि साँवरो शरीर ।
कहै पदमाकर त्यों तान मय कान भये,
हौंतो रही जकिथकि भूलीसी भ्रमीसीवीर।
येतौ निर्दयी दई इनको दया न दई,
ऐसी दशा भई मेरी कैसे धरौं तन धीर ।
हौंतो मनहूके मन नैननके नैन जोपै,
कानन के कान तोपै जानतो पराई पीर२२॥

पुनर्यथा ।

कवित्त–मधुर मधुर सुर मुरली बजाय ध्वनि,
धमकि धमारनकी धाम धाम कै गयो ।

कहै पदमाकर त्यों अगर अबीरनकी,
करिकै घलाघली छला छली चितै गयो।
कोहै वह ग्वालिनी गुवालनके संगमें,
अनंग छबि वारो रस रंगमें भिजै गयो॥
वैगयो सनेह फिर ह्वै गयो छराको छोर,
फगुवा न दैगयो हमारो मन लै गयो॥२३॥

दोहा ।

ज्यों ज्यों वर्षत घोर घन, घन घमण्ड गरुवाइ ।
त्यों २ परति प्रचण्ड अति, नई लगनकी लाइ२४
सूचक पिय अपराधकी, इंगित कहिये मान ।
त्रिविध मानसी मानिए, लघु मध्यम गुरु आन२५
परतिय दरशन दोषते, करै जु तिय कछु रोष ।
सुलघु मान पहिंचानिये, होत ख्यालही तोष२६

लघुमान वर्णन ।

कवित्त—वाहीके रँगी है रँग वाहीके पगीहै मग,
वाही के लगी है सँग आनँद अगाधको।

कहै पद्माकर न चाह तजि नेकु दृग,
तारनते न्यारो कियो एकपल आधाको॥
ताहूपै गोपाल कछु ऐसे ख्याल खेलतहैं,
मान मोरबेकी देखिबेकी करि साधाको
काहू पै चलाइ चख प्रथम खिझावैं फेरि,
बाँसुरी बजाइकै रिझाय लेत राधाको२७

दोहा ।

…हैं जिनसुख बदिये, करति क्यों न हित होस ।
…त सब अबहिं भुलाइयत,तनक दृगनके दोस२८
और तियाके नाम कहुँ, पियसुखते कढिजाय ।
…ान,मानसध्यम मिटै, सौंहन किये बनाय २९॥

मध्यममान वर्णन ।

कवित्त–बैसहीको थोरी पै न भोरीहै किशोरी है,
याकीचित चाहराह औरकी सझाया जिन।
कहै पद्माकर सुजान रूपखान आगे,
आन बान आनकी सुआनकै लगायो जिन
जैसे अब तैसे सुधि सौंहनि मनाय ल्याइ,

तुम इक मेरी बात येतौ बिसरैयो जिन ।
आजुकी घरीते लै सभूलि हू भलेहौ श्याम
ललिताकोलैकै नामबांसुरीबजैयो जिन३०

दोहा ।

आनि आनितिय नामलै, तुमहिं बुलावत श्याम।
लेन कह्यो नहिं नाहको, निज तियको जो नाम ॥
आनि तिया रति पीउ लखि, होय मानगुरुआइ।
पांइ परे भूषण भरे, छूटत कहूं बराइ ॥ ३२ ॥

अथ गुरुमान वर्णन ।

कवित्त–नीकीकोअनैसीपुनिजैसी होयतैसीतऊ,
यौबनकी सूरतै न दूरि भागियतुहै ।
कहै पदमाकर उजागर गोविंद जोपै,
चूकिगे कहूं तो एतो रोष रागियतुहै ॥
प्रेम रस हाय लै जगाय लै हियेसोंहित,
पाइल पहिरि चलु प्रेम पागियतु है ।
येरी मृगनैनी तेरी पाइ लगियेनीपाइ,
पाइलागि तेरे फेर पाइलागियतुहै॥३३॥

दोहा—निरखिनेकुनीकोवनो, या कहि नंदकुमार ।
सुभुज मेलि मेल्यो गरे, गजमोतिनकोहार २४

पिय जु होइ परदेश में, सो प्रवास उरआन ।
जाते होतवधूनको, अति संताप निदान २५

सो प्रवास द्वै भांतिको, इक भविष्य इक भूत ।
तिनके कहत उदाहरण, रस ग्रंथन के सूत २६

भविष्यत प्रवासको उदाहरण—सवैया ।

औसर कौन कहा समयो कह काज विवाद ये कौनसी पावन । त्यों पदमाकर धीर समीर उसीर भयो तपिकै तनतावन ॥ चैतकी चांद-नीचारुख्वेचरच्याचलवेकी लगेजु चलावन ॥ ऐसीभईतुम्हैं रंगकी गैलमें गीत मदारनके लगे-गावन ॥२७॥

दोहा ।

रमन गमन सुनिशशिमुखी, भई दिवसको चंद ॥
परखि प्रेमपूरण प्रकट, निरखि रहे नंदनंद २८ ॥

नये प्रवासको उदाहरण—सवैया ।

कान्ह परी कुब्जाके कलोलनि डोलनि छोड

दई हरसांती॥माधुरी मूरति देखि विना पदमाकर
लागै न भूमि सोहाती॥क्याकहिये उनसों सजनी
यह बात है आपने भाग समाती । दोष बंसतके
दीजे कहा उलहै न करीलकी डारन पाती॥३९।

पुनर्यथा ।

कवित्त–रैन दिन नैनन ते बहतो न नीर कहा
करतो अनंग को उमंग शर चापतौ
कहै पदमाकर सुराग बाग वन कैसो
तैसो तन ताय ताय तारापति तापतौ।
कीबे जो वियोग तो सँयोगहू न देतोदई
देतो जो सँयोग तो वियोगहि न थापतौ
होतो जो न प्रथम सँयोग सुख वैसो वह
ऐसो अबजो नतो वियोगदुखव्यापतौ४०

दोहा–सुनत सँदेशविदेशतजि, मिलतेआय तुरंत
समुझीपरतसुकन्तजहँ,तहँप्रकटयोनवसन्त४१॥
इक वियोग शृँगारमें, इती अवस्था थाप ॥
अभिलापागुणकथनपुनि पुनिउद्वेग प्रलाप ४२

चिंतादिक जे षट कही, विरह अवस्था जानि ।
संचारी भावन विषे, हौं आयहु जो बखानि४३॥
याते इत वर्णत न मैं, अभिलाषादिक चार ।
तिनके लक्षण लक्षि सब, हौं भाषत निरधार४४॥
तिय अरुपियजो मिलनकी, करै विविधचितचाह
ताहीको अभिलाष कहि, वर्णतहैं कविनाह ४५॥

अभिलाषाको उदाहरण ।

कवित्त–ऐसी मति होत अब कैसी करौं आली,
वनमालीके शृँगारिवे शृँगारिवोई करिये।
कहै पद्माकर समाज तजि काज तजि,
लाजको जहाज तजि डारिवोई करिये॥
घरी घरी पल पल छिन छिन रैन दिन,
नैननकी आरती उतारिवोई करिये ।
इन्दु ते अधिक अरविन्दते अधिक ऐसो,
आनन गोविन्दको निहारिवोई करिये४६॥
दोहा-पिय आगमते अगमनहिं, करि बैठी तियमान
सखियाँ आइ मनाइहैं, यही रही धरि ध्यान४७

करै विरहमें जो जहां, पियगुण गुणन वखान
ताहीको गुणकथनकहि, वर्णत सुकविसुजान

गुणकथनको उदाहरण ।

कवित्त—हौंहूंगईजान तित आइगो कहूंते कान्ह,
आनि वनितानहूंको झपकि झलौ गयो ।
कहै पद्माकर अनंगकी उमंगनिसों,
अंग अंग मेरे भारि नेहको छलौ गयो ॥
ठानि ब्रज ठाकुर ठगोरिनकी ठेलाठेल,
मेलाके मझार हित हेलाके भलो गयो ।
छाहके छला ह्वै छोगुनी ह्वै छरा छोरनह्वै,
छलियाछबीली छैलछातीह्वै चलोगयो४९

पुनर्यथा—सवैया ।

चोरिन गोरिनमें मिलिकै इतै आईही हाल गुवालकहांकी।कौन विलोकि रह्यो पद्माकर वा तियकी अवलोकनि बांकी॥ धीर अबीरकी धुंधुरिमें कछु फेरसों कै मुख फेरके झांकी। कैगई ~करेजनिके कतरे कतरे पतरे करिहांकी५०॥

दोहा—गुणवारे गोपालके, करि गुण गण निबखान
इक आपहिके आसरे, राखति राधा प्रान ८१
विरह विरुव अकुलाय उर, त्यों पुनि कछु न सुहाय
चित न लगत कहुँ कैसहू, सो उद्वेग बनाय ८२

उद्वेगको वर्णन ॥ पुनर्यथा ।

कवित्त—घर ना सुहात ना सुहात बन बाहिरहूँ,
बाग ना सुहात जो खुशाल खुशबोहीसों।
कहै पदमाकर घनेरे धन धाम त्योंहीं,
चैन न सुहात चांदनीहूं योग जोहीसों।
सांझहु सुहात न सुहात दिन मांझ कछु,
व्यापी यह बात सो बखानत हौं तोहीसों।
रातिहु सुहात न सुहात परभात आली,
जब मन लागि जात काहू निर्मोहीसों ८३

दोहा—है उदास अति राधिका, ऊंचे लेति उसाँस।
सुनि मनमोहन कान्हकी, कुटिल कूबरीपास
विरही जन जहँ कहत कछु, निरखि निरर्थक बैन।
तासों कहत प्रलाप हैं, कवि कविताके ऐन ८४॥

प्रलापको उदाहरण ।

कवित्त-आमकोकहतअमिलीहै अमिलीकोआम,
आकही अनारनको आकिबो करति है।
कहै पदमाकर तमालनको ताल कहै,
तालनि तमाल कहि ताकिबो करति है॥
कान्हैकान्हकाहूकहिकदलीकदम्बनिकै
भेंटि परिरम्भनमें छाकिबो करति है
साँवरे जो रावरे यों बिरह बिकानी बा
बन बन बावरी लौं ताकिबो करतिहै९

पुनर्यथा ।

कवित्त-प्राणनके प्यारे तनुतापके हरणहारे,
नन्दके दुलारे ब्रजवारे उमहत हैं ।
कहै पदमाकर उरूझे उरअन्तरयों,
अन्तर चहेहू जे न अन्तर चहत हैं ।
नैनन बसे हैं अंग अंग हुलसेहैं रोम,
रोमनि रसे हैं निकसे हैं को कहत हैं।

ऊधोवेगोविन्दकोऊऔरमथुरामेंयहां,
मेरो तो गोविन्द मोहिं मोहिं में रहतहै ८७

दोहा ।

निरखतवनघनश्यामकहिं, भेंटतिउठतिजुबाम
विकल बीचही करत जनु, कर कसनैती काम
दशा वियोगहि की कहत, जु है मूरछा नाम
जहँ न रहत सुधि कौनहूं, कहा शीत कहँ घाम

मूर्च्छाको उदाहरण ।

कवित्त—ऐसी नन्दलालप्यारी व्याकुलपरीहै बाल,
हालही चलौ तौ चलौ जोरि जुरिजायगी।
कहै पदमाकर नहीं तो ये झकोरे लगैं,
ओरे लौं अचाका बिन घोरे घुरि जायगी
सीरे उपचारन घनेरे घनसारन को,
देखतही देखौ दामिनी लौं दुरि जायगी।
तौही लगि चैन जौलौं चेतिहै न चन्द्रमुखी,
चेतैगी कहूं तौ चांदनीमें चुरि जायगी ९०

दोहा–तौही तौ भलअबचलौं, रहैंजुतियनिरमूल
नहिंतौक्योंकरिजियहिगी, निरखिशूलसेफूल
इति शृंगारस वर्णन ।

अथ हास्यरस वर्णन ।

दोहा–थायी जाको हासहै, वहै हास्य रसजानि
तहँ कुरूप कूदब कहब, कछु विभावते मानि॥
मंद मध्य अरु ऊंचस्वर, हँसबोई अनुभाव
हर्ष चपलता औरहू, तहँ संचारी भाव ६३॥
श्वेत रंग रस हास्यको, देव प्रथम पति जास
ताको कहत उदाहरण, सुनत जो आवै हास

हास्यरसको उदाहरण।

कवित्त–हँसिहँसिभैंजै देखि दूलह दिगम्बरको,
पाहुनी जे आवैं हिमाचलके उछाहमें ॥
कहैं पदमाकर सुकाहूसों कहैको कहा,
जोई जहां देखै सो हँसेई तहां राहमें ॥
मगन भयेई हँसै नगन महेशठाढे,

औरै हँसेऊ हँसो हँसकै उमाहमें ।
शीशपर गंगाहँसै भुजनि भुजंगा हँसै,
हांसहीको दंगाभयो नंगाके विवाहमें ६६
दोहा-कहमृसरनाचतनगन,लखिहलधरकोस्वांग
हँसि हँसि गोपी फिर हँसै, मनहुँ पियेसी भांग ॥
अथ करुणारस लक्षण ।
दोहा-आलम्बन प्रियको मरण, उद्दीपन दाहादि
थायी जाको शोक जहँ, कहँ करुणरस यादि॥
रोदन स्वासादिकनि जहँ, वर्णतकवि अनुभाव।
निरवेदादिक जानियं,तहँ संचारी भाव॥६८॥
चित्रवर्ण तरुण वरण, वरुण देवता जान ।
या विधिको या करुणरस, वर्णतकविकवितान
करुणारसको उदाहरण ।
कवित्त-आंसुन अन्हाय हाय हाय कै कहत सब,
औध पुरवासीकि कहांधों कुंवर हाहिये ।
कहै पदमाकर जहाँन युवराजी कासु,

ऐसो को धनी है जाय जाकेशीश बाहिये॥
सुतके पयान दशरथ ने तजे जो प्रान,
बढ्यो शोकसिंधुसो कहांलौं अवगाहिये ।
मूढ मंथराके कहे बनको जो भजे राम,
ऐसी यह बात कैकेयीको तौ न चाहिये ७०

दोहा—रामभरतमुखमरणसुनि, दशरथकेमनमांह
महिपरमै रोदत उचारि, हा पितु हा नरनांह ७१

अथ रौद्ररस थायीवर्णन ।

दोहा—थायी जाको क्रोध अति, वहै रौद्र रस नाम।
आलम्बन रिपु रिपु उमँड, उद्दीपन तिहिंठाम॥
भ्रुकुटि भंग अति अरुणई, अधर दशन अनुभाव ।
गर्व चपलता औरहू, तहँ संचारीभाव ॥ ७३ ॥
रक्तरंगरस रौद्रको, रुद्र देवता जान ।
ताको कहत उदाहरण, सुनहु सुमति दै कान ७४॥

अथ रौद्ररस वर्णन ।

कवित्त—बारिटारिडारौंकुम्भकर्णहिविदारिडारौं,
मारौं मेघनादै आजु यों बल अनन्तहौं ।

कहै पदमाकर त्रिकूटहीको ढाहि डारौं,
डारत करेई यातुधाननको अन्तहौं ॥
अच्छहिनिरच्छकपिरुच्छह्वै उचारौं इमि,
तोणतिच्छ तुच्छनको कछु वै न गन्तहौं ।
जारि डारौं लंकहि उजारि डारौं उपवन,
फारिडारौं रावणको तौ मैं हनुमन्तहौं ७६ ॥

दोहा ।

अधर फरक गहि गरब अति, चहिरावणकोकाल ।
दृग कराल मुख लाल करि, दौरे दशरथ लाल ।
जाको रस उत्साह शुभ, है इक थायी भाव ।
सुरस वीरके चारि विधि, कहत सबै कविराव ७७
युद्ध वीर इक नामहै, दया वीर द्वियनाम ।
दान वीर तीजो सुपुनि, धर्मवीर अभिराम ॥७८॥
युद्ध वीरको जानिये, आलंबन रिपु जोर ।

उद्दीपन ताको तबहिं, पुनि सैनाको भोर॥७९॥
अँग फरकत दृग अरुणई, इत्यादिक अनुभाव॥
गर्व असूया उग्रता, तहँ संचारी नाव ॥ ८० ॥
इन्द्र देवता वीरको, कुन्दन वर्ण विशाल ॥
ताकोकहतउदाहरण,मुनिजनहोतखुशाल॥८१॥

अथ वीररस वर्णन ।

कवित्त–सोहै अत्र ओढ़े जे न छोड़े शीश संगरकी
लंगर लँगूर उच्च ओजके अतंकामें ॥
कहै पदमाकर त्यों हुंकरत फुंकरत,
फैलत फलात भाल बांधत फलंकामें ॥
आगे रघुबीरके समीरके तनय संग,
तारी दे तड़ाक तड़ा तड़के तमंकामें ।
शंकादै दशाननको हंकादै सुबंकाबीर,
डंकादै विजयको कपिकूदि परचो लंकामें

पुनर्यथा ।

कवित्त–जाही ओर शोरपरै घोरघन ताही ओर,
जोर जग जालिमको जाहिर दिखातहै ।
कहै पद्माकर अरीनकी अवाई पर,
साहब सवाईको ललाई लहरातहै ॥
परिघ प्रचंड चमू हरषित हाथीपर,
देखत बनत सिंह माधवको गातहै ॥
उद्धत प्रसिद्ध युद्ध जीतिहीके सौदाहित,
सौदा उनकारि तन हौदा न समातहै ८३

दोहा ।

भृगुप चढ़ावत मैं तबहिं, लखिरिपुकृत उत्पात
फुलकि गात रघुनाथ को, अम्बर में न समात

अथ दया वीरको वर्णन ।

दोहा–दया वीरमें दीन दुख, वर्णन आदिविभाव।
दीन करुण दुख मृदुवचन, इत्यादिक अनुभाव ८५

सुकृत चपलता औरहू, तहँ संचारी भाव ।
दयावीर वर्णत सबै, याही विधि कविराव८६॥

अथ दया वीरवर्णन—सवैया ।

पापी अजामिल पार कियो जेहि नाम लियो सुतहीको नरायन । त्यों पदमाकर लात लगे पर विप्रहुके पग चौगुने चायन॥कोअस दीनदयाल भयो दशरत्थके लालसे सूधे सुभायन।दौरे गयंद उबारिबेको प्रभु बाहन छोंडि उबाहने पायन ८७

दोहा—मिले सुदामा सों जुकरि,समाधानसन्मान
पग पलोटि पग श्रमहरेउ,येप्रभुदयानिधान८८॥

अथ दानवीर वर्णन ।

दोहा—दान समयकोज्ञानपुनि,याचकतीरथगौन
दानवीर के कहत हैं, ये विभाव मतिभौन

तृण समान लेखत सुधन, इत्यादिकअनुभाव
व्रीडा हरषादिक गनौ, तहँ संचारी भाव९०

दानवीरको उदाहरण ।

कवित्त–बगसि वितुंड दये झुंडनके झुंड रिपु,
मुंडनकी मालिका दई ज्यों त्रिपुरारीको
कहै पद्माकर करोरनको कोष दये,
षोडशहू दीन्हे महादान अधिकारीको ॥
ग्राम दये धाम दये अमित अराम दये,
अन्न जल दीनें जगतीके जीवधारीको ।
दाता जयसिंह दोय बातें तौ न दीनीकहूं,
वैरिनको पीठि और डीठि परनारीको९१

पुनर्यथा ।

कवित्त–सम्पति सुमेरकी कुबेरकी जु पावै ताहि,

तुरत लुटावत विलम्ब उर धारै ना ।
कहै पदमाकर सुहेम हय हाथिन के,
हलके हजारनके वितरै विचारै ना ॥
गंज गज बकश महीप रघुनाथराय,
याहि गज धोखे कहूं काहू देइ डारै ना ॥
याही डर गिरिजा गजाननको गोइ रही,
गिरिते गरेते निज गोदते उतारै ना १२ ॥

दोहा ।

दै डारैं जनि भिक्षुकनि, हनि रावणहिं सुलंक ।
प्रथम मिल्यो याते प्रभुहि, सुविभीषणह्वैरंक ।

अथ धर्मवीर वर्णन—दोहा ।

धर्मवीरके कवि कहत, ये विभाव उर आन ।
वेद सुमृतिशीलनसदा, पुनि पुनिसुनवपुरान

वेद विहित क्रम वचन वपु, औरहु है अनुभाव।
धृति आदिक वर्णत सुकवि, तहँ संचारीभाव॥

अथ धर्मवीरको उदारण।

कवित्त—तृणके समान धनधान राज त्यागकरि,
पाल्यो पितु वचन जो जानत जनैया है।
कहै पद्माकर विवेकही को बानो बीच,
सांचो सत्य वीर धीर धीरज धरैया है॥
सुस्मृतिपुराण वेद आगम कह्यो जो पंथ,
आचरत सोई शुद्ध करम करैयाहै॥
मोद मति मंदर पुरंदर महीको धन्य,
धरम धुरंधर हमारो रघुरैया है॥ १६॥

दोहा।

[illegible]ारि जटा वल्कल भरत, तज्यो नृपसुख निजराज।
[illegible]ो पूजत प्रभु पादुकन, परम धर्मके काज॥१७॥

अथ भयानक वर्णन–दोहा ।

जाको थाई भाव भय, वहै भयानक जान ।
लषण भयंकर गजब कछु, ते विभाव उर आन
कम्पादिक अनुभाव तहँ, संचारी मोहादि ।
कालदेव कैलावरण, सुभयानक रसयादि ९९

अथ भयानक उदाहरण पुनर्यथा ।

कवित्त–झलकत आवैं झुंड झिलम झलानि झप्यो,
तमकत आवैं तेग वाही जौ शिलाहीहै ।
कहै पदमाकर त्यों दुन्दुभि धुकार सुनि,
अब बक बोलै यों गलीम औ गुनाहीहै ॥
माधवको लाल कालहू तैं विकराल दल,
साजि धायो ये दई दईधौं कहा चाहीहै ।
कौन को कलेऊ धौं करैया भयो कालअरु
कापै यों परैया भयो गजब इलाहीहै १००

पुनर्यथा ।

कवित्त-ज्वालाकीजलनसीजलाकजंगजालनकी
जौरकी जसाहै जोस जुलुम जिलाहेकी ।
कहै पद्माकर सु रहियो बचाये जग,
जालिम जगतसिंह रंग अवगाहेकी ॥
दौरि दावादारनपै द्वारसौ दिवाकरकी,
दामिनी दमंकनि दलल द्विग दाहेकी ।
कालकीकुटुम्बिनकलाकँकुलिकालिकाकी
गालबकी कुन्तकी नजरि कछवाहेकी ॥ १ ॥

छप्पय-भुवन धुंधुरित धूलिधूलि धुंधुरित सुरमहु
पदमाकर पतखह स्वच्छ लखि पवन न भ्रमहु ।
मसगात अरि परि परत सरन दरसात अंग असवानि ।
तहँ प्रतापनृपपाल ख्याल खेलत जुरि खानि।
हैनचढि नौपि हुंमनिन इमिनन डामनगानिन डक्कि

धुकि धड़धड़धड़धड़धड़धड़धड़धड़ाततद्धाधड़ कि ॥ २ ॥

दोहा ।

एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराइ ।
विकल बटोही बीचही, परो मूरछा खाइ ३॥

बीभत्सरस वर्णन ।

दोहा—थाई जासु गलानहै, सो बीभत्स गनाव ।
पीब मेद मज्जा रुधिर, दुर्गंधादि विभाव॥४॥
नाक मूंदिबो कम्प तन; रोम उठब अनुभाव।
मोह असूया मूरछा—दिकसंचारी भाव ॥५॥
महाकाल सुर नील रँग, सू बिभत्स रस जानि
ताको कहत उदाहरण, रसग्रन्थनि उरआनि

अथ बीभत्सको उदाहरण ।

छप्पय-पढतमंत्रअरुयंत्रअंत्रलीलतइमिजुगिगनि

मनहुँमिलतसद्मतागरुड़ातियअरुणउरगिनि
हरबरात हरषात प्रथम परसत पलपंगत।
जहँ प्रताप जिति जंग रंग अँग अँग उमंगत॥
जहँपद्माकर उन्मत्त अति रणहिरकतनहियनहत
चकचकित चितचर्बीनचुभिचकचकाहुँ वेहारहित

दोहा।

रिपु अंगनकी कुंडली, करि जुग्गिनि जु चबाति।
पीवहिं ये पानी मनो, बुढ़ति सन्दी नाति॥८॥

अथ अद्भुत रस वर्णन।

जाको थाई आश्चर्य, सो अद्भुत रस गाय।
अवलम्बन जे आदि, तिनको लखन विभाव॥
गुनगनपिनसौं आदि लिङ्ग, है सब उद्दीपन अनुभाव
मिलक भाग होर है, नहैं रोमावलि नाव॥१०॥
जासु देवता ब्रह्मविधि, है अद्भुत पीत।
सो अद्भुत रस जानिये, [illegible] ॥[illegible]

अद्भुतरसको उदाहरण ।

कवित्त—अधम अजान एक चढिकै विमानभाष्यो
पूँछतहौं गंगा तोहि परिपारि पाइ हौं ।
कहै पदमाकर कृपाकरि बतावै सांची,
देखे अति अदभुत रावरे सुभाइहौं ॥
तेरे गुण गानहुँ की महिमा महान मैया,
कान कान नाइके जहान मध्य छाइहौं ॥
एक मुख गाये ताके पंचमुख पाये अब,
पंचमुखगाइहौं तो केते मुख पाइहौं १२॥

पुनर्यथा ।

कवित्त-गोपीग्वालमालीजुरेआपुसमेंकहैंआली,
कोऊ यशुदाके अवतारचो इन्द्रजाली है ।
कहै पदमाकर करै को यों उताली जापै,

रहन न पावै कहुँ एको फन खाली है ॥
देखै देवताली भई विधिके खुशाली कूदि,
किलकत काली देखी हँसत कपाली है ।
जनमकोचालीयेरि अद्भुतदेख्याली आजु,
कालीकीफनालीपैनचतबनमालीहै ॥ १२

[illegible] ।

[illegible] मन्द,
[illegible] हैं ।
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] में [illegible],
[illegible] हैं ।
[illegible],
[illegible] ॥ १३

सात दिन सात राति करि उतपात महा,
मारुत झकोरे तरु तोरे दहि दुखमें ।
कहै पदमाकर करी त्यों धूमधारनहु,
एते पै न कान्ह कहूं आयो रोष रुखमें॥
छोरि छिगुनीकेछत्रऐसोगिरिछाइ राख्यो,
ताके तरे गाय गोप गोपी खरी सुखमें ।
देखि देखि मेघनकी सेन अकुलानी रह्यो ॥
सिन्धुमें नपानीअरुपानीइन्दुमुखमें १८॥

दोहा ।

घन वर्षत करपर धरयो, गिरि गिरिधर निरशंक।
अजब गोपसुत चरितलखि,सुरपति भयोसशंक॥

अथ शान्तरस वर्णन–दोहा ।

सुरस शान्त निर्वेद है, जाको थाईभाव ।
सतसंगत गुरु तपोवन, मृतक समान विभाव
प्रथमरुमांचादिकतहां, भाषत कवि अनुभाव

धृति मति हर्षादिक कहै, शुभ संचारीभाव
शुद्ध शुद्ध रस देवता, नारायण है तान ।
ताको कहत उदाहरण, सुनहु सुमति दै कान

शान्त रसको उदाहरण—सवैया ।

बैठि सदा सतसंगहिमें विषमानि विषयरस-
कीर्ति सदाहीं ॥ त्यों पदमाकर झूठ जितो जग
जानि सुज्ञानहिके अवगाहीं ॥ नाककी नोकमें
डीठि दिये नित चाहै न चीज कहूं चितमाहीं।
संतत संतसिरोमणि है [illegible] [illegible] पीतरनाहीं

दोहा ।

[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] न कहू [illegible]
[illegible] [illegible] कछू न शंका [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] ॥

दोहा—जगतसिंहनृपहुकुमते, पदमाकरलहिमोद ।
रसिकनके वशकरनको, कीन्होंजगतविनोद ॥

इतिश्रीकूर्मवंशावतंसश्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्रश्रीसवाई-
महाराजजगत्सिंहाज्ञया कविपद्माकरविरचितजगद्विनोद
नामकाव्येऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इति जगद्विनोद समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.
खेमराज श्रीकृष्णदास
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना मुंबई.